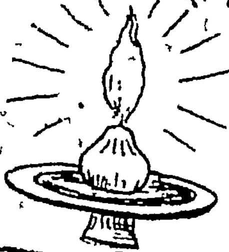
सम्यक्ज्ञानदीपका



दृष्टांत जैसै दीपक ज्योतीके प्रकासमे कोई इच्छा प्रमाण पाप अपरा
ध काम कुशील वा दान पूजा व्रत शीलादिक करो अर्थात् जेता संसार
और संसारहीसें तन्माथि येह संसारका शुभाशुभ काम क्रिया
इनसर्वका फल है सो दीपकज्योतिकूं वी लागते नाही
तिसैं दीपज्योतीका प्रकास तन्माथि है ताकूं वी जन्म मरणादिक पा
प पुन्य संसार लागते नाही· तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञान मयि
ब्रह्म परमातमा सदाकाल जागती ज्योति है सो न मरती न जनमती न छोटी न मोटी·
न नास्ति न अस्ति न इहां न उहां न उसकूं पाप लागे न उसकूं पुन्य लागे· न
ती न चलती न हलती संसार उस ज्योतिके भीतर बाहिर अरु मध्य नही· बहुरि
सोज्योति है· सोवी संसारके भीतर बाहिर मध्य नाही· जैसे लवण खंड जल नीरमे
लजाते है तैसे किसीकूं जन्म मरणादिक संसारसें दुःखसे अलग होणेकी
य वा सदाकाल जागती जोति सैं मिलणेकी इच्छा होय सो प्रथम सद्गुरू आज्ञाप्र
माण इस सम्यक्ज्ञान दीपिका नाम की पुस्तग है ताकूं आदिसे अंतपर्यंत पढो मन

प्रस्तावना

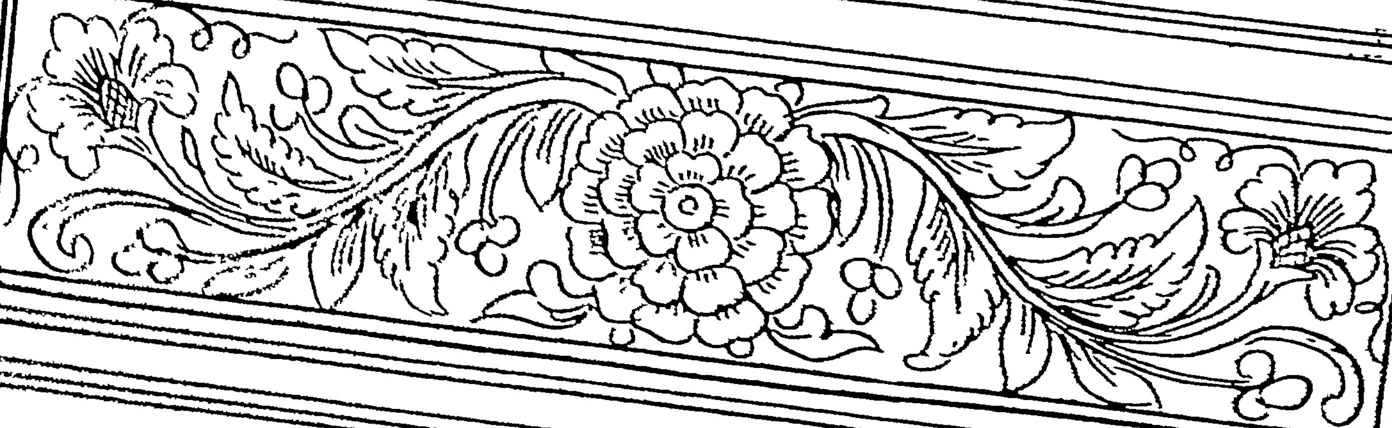
इस पुस्तगमैं प्रथम येह प्रस्तावना तदनंतर इस पुस्तगकी
श्वात् पुस्तग प्रारंभ तदनंतर चित्रद्वार पुनः चित्र हस्तांगुलीचक्र
कल्प शुक्लध्यानका सूचक पश्चात् ज्ञानाबर्णिकर्मचित्र तदनंतर
णाबर्णिचित्र पश्चात् बेदनी बहुरि मोहनी तदनंतर आयु बहुरि
अर गोत्र पश्चात् अंतरायकर्म तदनंतर दृष्टांत समाधान ताहीमै
कप्रश्न आत्मा कैसाहै कैसे पाइये इसीके ऊपर दृष्टांत संग्रह
दृष्टांत चित्र पश्चात् आकिंचन भावना बहुरि भेदज्ञान करिके
ह समाप्त कीयाहै इसग्रंथमैं केवल स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानुभव
चक शब्द बिबर्णहै कोह दृष्टांतमैं तर्क करैगा के सूर्यमैं प्रकाश कहां
सैआये ताकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभव इस ग्रंथ को सार ताको लाभ नहीं

यगो जैसे जैन बैष्नु शिवादिक मतवाले परस्पर लडते हैं बैर बिरोध क
रते हैं मतपक्षमें मग्न हुये मोह ममता माया मानकूं तो छोडते नाहीं
तैसे इस पुस्तगमें बैर बिरोधको बचन नाहीं परंतु जिस अवस्थामें स्व
सम्यक्ज्ञानसू तोहै ताअवस्थामें तनमन धन बचनादिकसे तन्मयीये
ह जगत संसार जागतोहै बहुरि जिस अवस्थामें येह जगत संसार सू
तोहै ता अवस्थामें स्वसम्यक्ज्ञान जागतोहै येह बिरोधतो अनादि अ
चल है सो तो हमसे तुमसे इससें उससे नमिटे नमिटेगा नमिटाया येह पु
स्तग जैन बैष्नु आदिक सर्वहीके पढणे जोग्य है किसी बैष्नूकों इस पुस्तगके
पढणेसें भ्रांति होवेके येह पुस्तग जैनोक्त है ताकूं कहता हूं के इस पुस्त
गकी भूमिकाके प्रथमारंभमें जो मंत्र नमस्कार है ताकूं पढिकरिके भ्रांतिसे
भिन्न होएगा स्वभाव सूचक जैन बैष्नुआदिक आचार्यके रचे हुये संस्कृत का
व्यबंध गाथाबंध ग्रंथ बहुत है परंतु येहबी येक छोटीसी अपूर्व वस्तु है जैसे
गुड खायेसे मिष्टानुभव होता है तैसे इस पुस्तगकूं आद्य अंत पूर्ण पढणेसें
पूर्णानुभव होवेगा बिन देखे बिन समजे वस्तुकूं औरसे और समजना है सो
मूर्ख है जिसकूं परमातमाको नाम

गुडखायेसै मिष्टानुभव होताहै तैसै इस पुस्तगकूं आद्य अंत पूर्णानुभव होवैगा बिनदेखे बिनसमजे बस्तुकूं औरसैं और समजनाहैसो मूर्खहै जिसकूं परमात्माकोनाम प्रियहै उसकूं येहग्रंथ जरूर प्रिय होवैगा इसग्रंथकोसार ऐसो लेणो केसम्यक् ज्ञानमयी गुणीका गुणसैं सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही औगुणताकूं त्यजकरिके स्वभावज्ञान गुणग्रहण करणा पश्चात् गुणकूंबी छोडकरिके गुणीकूं ग्रहण करणा तदनंतर गुणगुणीका भेदकल्पनासे सर्वथा प्रकार भिन्नहोयकरि आपका आपमे आपमयी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुसैं सूर्यप्रकाशवत् मिलकरिकै रहणा येही औगुण त्यजणेका स्वभावगुणसै तन्मयी रहणेका इसग्रंथमे कह्याहै १ जैसै दीपकज्योतिका प्रकाशमे कोहू पापकरो और कोहू पुन्यकरो तिस पापपुन्यका फल स्वर्गनरकादिकबी तिसदीपकज्योतिकूं लगते नाहीं अर पाप पुन्यबी लागते नाही तैसैही

इस सम्यक् ज्ञानदीपका पुस्तक के पढणे वाचणे वा उपदेस देणेके-
द्वारा किसीकूं आपका आपमै आपमयि स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानु-
भवकी अचल परमावगा दता होवैगी तिसकूं पाप पुन्य जन्ममरणसं
सारका स्पर्श न पहूचै उस्कूं कुछबी शुभाशुभ नलागै येह निश्चय
है ॥२॥

इतिप्रस्तावना.



ॐ तत्सत्परमब्रह्मपरमात्मनेनमः ॥ ॥ अथसम्यक्ज्ञानदीपकाकी
भूमिकाप्रारंभः ॥ ॥ भूमिका हम तुम येह यह येह ४
ताके प्रथम निश्चय कोई है सोही मूल अखंडित अविनाशी अचल स्व

ताके प्रथम निश्चय कोई है सोही मूल अखंडित अविनाशी अचल स्व
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तू भूमिका है जैसे
प्रमाण येह वलियाकार जंबूद्वीपकी भूमिका है तिस भूमि
कामे कोई येक अणुरेणु वा राई डालदे तब अल्पदृष्टिवानकूं येह भाष
होवैके इस जंबुद्वीप भूमिमे नही जाणवामे आवे के वाहा येक अणु
राई किदर कहां पडी है तैसेही येह ३४३ तीनसें तेतालीस राज्जू प्र-
माण तीनलोक पुरुषाकार है सो बहुरि अलोकाकाश है सो कैसो है अलो
काकाश जाके भीतर येह तीनलोक ब्रह्मांड है परंतु ऐसा अनंत ब्रह्मांड
औरबी होयतो जिस अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् होयके समाय जा
वे ऐसा येह लोकालोक वा अनंत ब्रह्मांड तिस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य

सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु भूमिकामै येक अणरेणु वत् नहीजाणै
वास्ते निश्चय समजो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु है सो निश्चय भूमिका है जैसे सूर्यका प्रकास पृ
थ्वीकेऊपर तन्मयीवत् सर्वत्र प्रसरण होरह्याहै तामै येक अणरेणु न
हीजाणै किदर कहां पडे है तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि सूर्यका प्रकासमै येह लोकालोक अणुरेणवत् नहींजाणे किद
सोही त्रैलोकसार ग्रंथमै श्रीमत् नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ति
कहीहै छीयालीस ४६ चालीस ४० ओर ३४ चोतीस २८ अठाईस २२
बाईस १६ सोला १० दश १९ उन्नीस साढेबनलाई २७॥ साढेसेतीस
१६॥ साढेसोले १६॥ साढेसोले भणी आगे दोदोहीन १४॥ । १२॥ अंत
११ ग्यारे राजूगणी इम ७ सातनर्क ८ जुगल ऊपर १६ सो लेथानमै राजू
३४३ तेतालीसतीनसे घनाकारकीस्योज्ञानमे १ अबहे मुमुक्षजन स

जन मिंचीहो श्रवणकरो जैसे येह लोकालोकहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य-
सम्यग्ज्ञानमयि भूमिकामेहै परंतु सम्यक्ज्ञानमयि भूमिकासे तन्मयी
हो तैसेही मैं तूं येह यह येह ४ चारवो तन्मयीनाहीं वास्ते अणहोणोसो-

ज्ञानमिंत्रीहो

सम्यग्ज्ञानमयि भूमिकामेहै परंतु सम्यक्ज्ञानमयि भूमिकासे तन्मयीना
हो तैसैही मे तूं येह वह येह ४ चारवो तन्मयीनाहीं वास्ते अणहोणोंसो-
मैक्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास बणिकारिके येह पुस्तग सम्यक्ज्ञानदीपका
इस नामकी बणाईहै इसपुस्तगमे भूमिकासहित द्वादशस्थलभेदहै
प्रथमतो मिथ्याभ्रमजाल संसारसे सर्वथाप्रकार भिन्न होएणेके अर्थ येह
भूमिका येकाग्रहमनलगाय कारिके पढो १ बहुरिपश्चात् चित्रद्वार देखो-
अर नाका विवर्णपढो द्वारहीकूं अपना स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
नमयिस्वभाव बस्तु मति समजो मतिमान् मतिकहो २ बहुरित
रूपस्वानुभवगम्य सम्यक्

साहै स्वभावमे तर्क को वा संकल्प विकल्प को अभावहै ताहीके प्रकाशमे ति
सहीकूं परस्पर विरुद्ध चित्र हस्तांगुली सूचकहै मानैहै कहतेहै सोसम्यक्

स॰ज्ञा
५

ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमै तन्मयि कदापि कोई प्रकारवी नसंभवै ३
रिचतुर्थ ज्ञानावर्णिकर्मचित्रहै ताको अनुभव ऐसो समजणा
के आडा बादल समयपाय स्वयमेव ही आतेहै जातेहै तैसेही स्वस्वरूप
स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि सूर्यके मतिश्रुति
दि अजीववस्तु आवैजावै अर्थात् ज्ञानकूं आवर्ण करे सोही ज्ञानावर्णि
कर्म ४ पंचमभेद दर्शणावर्णिकर्म जैसै देखणेकी सक्तिहै परंतु दर्श
णावर्णि जानिको कर्म देखणे नही देताहै ५ षष्ठमस्थल कर्म
का दोय भागहै साता बहुरि असाता जैसै तरवारकी लगी मिश्रीकी
ताकूं कोई पुरुष जिव्हासे चाटतेहै ततसमय किंचित् मिष्टस्वाद भाष हो-
ताहै विशेष जिव्हा खंडन दुःखभाष होताहै इस दुःख सुखसे भिन्नस्वभा
वहोणा गुरुपदेशात् ६ सप्तमस्थल मोहनीकर्म जैसै मदिराबसात् स्व-
सोधनकी खबर नाही तैसेही मोहनीकर्मबसात् आपकूं स्वस्वरूप स्वानुभा

वगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप न समजताहै न मानताहै ओर सै=
ओर आपकूं समजतहै मानतहै ७ अष्ठमस्थल आयुकर्महै
सैं बंध्योपुरुष
=रवी

दीप॰
भूमि॰

वगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप
ओर आपकूं समजतहै मानतहै ७ अष्टमस्थल आयुकर्महै
सें बंध्योपुरुष आपकूं दुःखी समजतहै मानतहै तैसेंही आयूकर्म ब-
सात् स्वभावद्रष्टिरहित जीवहै सो आपकूं दुःखी मानतहै समजतहै अर्था
त् स्वभावद्रष्टिरहितजीवकूं येह निश्चय नहीके आकासवत् अमूर्त्ति निरा
कार घट आयु मठायूवत् मैं आयुकर्ममें रुकरत्योहूं व्यवहारनयात् ८
नवमस्थल नामकर्म स्वभावद्रष्टि रहितहै सो नामहीकूं
प स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाववस्तु समजतहै
द्रष्टीकूं येह निश्चय नहीके जन्म मरण नामादिक शरीरकाधर्महै ज्ञानवस्तु
कायेह निजधर्मनाही ९ दशमस्थलगोत्रकर्म ताकाद्रष्टांत जैसे कुंभका
र छोटा मोटा माटीका बर्नन कर्ताहै तैसेंही स्वभावद्रष्टीमें नसंभवे येहनी
च गोत्रउच्चगोत्र सोही विभावद्रष्टीमें जीवनीचगोत्र उच्चगोत्र कर्मको कर्त्ता-

है तोबी नीचगोत्र उंचगोत्रसे तन्मयि होय नही कर्ताहै १० एकादशम-
स्थल अंतरायकर्म ताकाद्रष्टांत जैसें राजा भंडारीकूं कहीके इसकूं सहू
स्वरुपियांदे परंतु भंडारी नहींदेताहै तैसेंही स्वभावद्रष्टीरहितजीवइ-
च्छातो कर्ताहैके मै दान देऊ लाभलेऊ भोगभोगू उपभोगभोगू पराक्रमक
र्म बलवीर्य प्रगट करूं इत्यादिक इच्छातो कर्ताहै परंतु अंतरायकर्म इ-
च्छानुसार पूर्णता नही होणे देताहै ऐसा अंतरायविघ्न श्रीसत्गुरूके चर
णकी सरण होणेसे मिटैगा ११ द्वादशस्थल मै येह हैके किसीकूं गुरूप
देशात् स्वस्वरूपको स्वानुभव हुये पश्चात् बी येह भ्रांति होतीहैके मै अजर
अमर अविनासी अचलज्ञानज्योति नहीं अथवाहूं तो कैसेंहूं मेरा अर स-
दाकाल जागतीजोति ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्ठीकायेक पणाकैसेंहै तथा कोण
सा पुन्यसुभकार्य करणेसे मेरा अर परमातमाका अचलमेल
मैमरताहूं जन्मताहूं दुःखी रोगी सोगी लोभी क्रोधी कामीहूं अरज्ञानम-

यि परमात्मा तो नमरता नजन्मता नरोगी नसोगी नलोभी नमोही नक्रोधी न कामी फेर उनका मेरा मेल कैसा कैसे है कैसे होवैगा इत्यादिक भ्रांति द्वारा कोईजीव आपकूं तिस सिद्ध परमेष्टीज्ञानमयिसे भिन्न समजता है मानता है कहता है ताकी येकता तन्मयि ताकी सिद्धिके अवगाढताके दृढता के अर्थ अनेक दृष्टांत द्वारा समाधान देउंगा सोही कोई मुमुक्ष इससम्य कूज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसें अंतपर्यंत भले भावसे पढकरिके आप का स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं प्रथमतो अशु भजो पाप अपराध हिंसा चोरी काम क्रोध लोभ मोह कषायादिकसे सर्वथा प्रकार भिन्न समज करिके पश्चात् दान पूजा व्रत शील जप तप ध्यानादिक शुभकर्म क्रिया है ताकूंबी सुवर्णश्रृंकलावत् बंधदुःखको कारण समज करिके आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञा नस्वभाव वस्तूकूं दान पूजादिक शुभकर्म क्रियासे सर्वथा प्रकार भिन्नस

मजकरिके पश्चात् शुद्धसेबी आपकूं भिन्नसमज करिके आगे अनिर्व॰
चनय आपका आपमे आपमयि जैसाका तैसा निरंतर जैसाहै तैसासो
का सोही आदि अंत पूरण स्वभावसंयुक्त रहणा बहुरि ऊपर हमलि॰
खीहैके शुभ अशुभ शुद्ध येह तीनहै इस तीनूकी विस्तीर्णता पूर्णता॰
प्रथम मिथ्यात्वगुणस्थानसे लेकरिके अंतका चतुर्दशगुणस्थानजो अ
जोग केवली ताहां पर्यंत समजणा आगे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
कृज्ञानमयि स्वभावमे येह शुभअशुभ बहुरि शुद्धादिक संकल्प विकल्प
तर्क वितर्क विधि निषेध कदापि नसंभवे अर्थात् स्वभावमे तर्कको अभा
वहै॰ हे मुमुक्षु जीवमंडलीहो चेतकरो तुम कहांसे आयेहो कहांजावो॰
गे कहांतुमहो क्याहो कैसाहो कोणतुमाराहै किसका तुमहो बहुरिये
ह शुभाशुभ शुद्ध येह तीनसे तुमारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यकृज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि मतिसमजो मतिमानू मतिकहो येह

अशुभादिक तीनू सम्यक्ज्ञान स्वभावमै त्याजहीहै जिस भूमिमै येह लो
कालोक अणुरेणुवत् नहीजाणै किदर कहां पडेहै चलाचल रहित ऐसी
भूमिकासै सर्बथा प्रकार भिन्नतुमारा तुमसैसदाकाल तन्मायिस्वस्वरूप
स्वानुभवगम्यसम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वरूप समजो मनके द्वारा-
मानू जैसैदीपककूं देखणेसे दीपक कीनिश्चयता अवगाढता अचल-
ताहोतीहै तैसेही इस सम्यक्ज्ञान दीपकाके पढणे बाचणेसे जरूर
निश्चय ब्रह्मज्ञानकी मातकी प्राप्ति होवैगी तथासम्यक्तकी प्रातकी प्रा
प्ति निश्चयता अवगाढता अचलता होवैगी देखोश्रवणकरो जैनाचार्य
जैनग्रंथमे कहीहैके सम्यक्तबिना जपतपनेम ब्रत शील दान पूजादि
क शुभकर्म शुभभावादिक वृथा तुषखंडनतहै बहुरि वेदमै बी कही
हैके ब्रह्मजानानि ब्राह्मणा अर्थात् ब्रह्मकूंतोजाणतेनाही अर संध्या
तर्पण गायत्रीमंत्रादिक का पढणा आदि साधु सन्यासी भेषधारणाप

यंत वृथाहै सर्वसारकोसार सदा कालज्ञानमांयि जागती ज्योतिका लाभ
की जिस्कूं इच्छा होय तथाजन्म मरणादिक बहु दुःखसै सर्वथाप्रकार
ो जिसकूं इच्छाहोय सोप्रथमगुरु आज्ञा लेकरिकै इसपु
स्तगकूं आदिसै अंतपर्यंत पढो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम
स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्तिके अर्थ हम इस पुस्तगमै अशुभ शु
भ शुद्ध येहतीनका निषेध लिखाहै सोतो पुद्गल द्रव्य धर्मद्रव्य॰अधर्म॰
द्रव्य आकाशद्रव्य कालद्रव्य येह पांच द्रव्यसैं तन्मायि आस्ति समजणा
बहुरि कोई अशुभसैं येकता आपका स्वरूपज्ञानकी मानताहै समज॰
ताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी बहुरि अशुभकूं
कैजपतपव्रत शील दान पूजादिक शुभसैं आपका स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञा
न स्वभावकी येकता समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टीहै॰
बहुरि शुभअशुभदोहु कूं अर अपणा स्वभाव सम्यक्ज्ञानकूं येकतन्म

यिसमजताहै सोबीमिथ्यादृष्टिहै बहुरि किसीकूंयेह बिचारभावहैके
शुभाशुभसैभिन्नमैशुद्धहूं ऐसी बिकल्पसै ष्यापकास्वस्वरूप स्वानुभवग
म्यसम्यक्ज्ञानमयिस्वभावकूंयेक तन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै
सोबीस्वभाव पूर्णदृष्टिरहित समजणा स्वभाव सम्यक्ज्ञान दृष्टिवान्को
ई पंडित होगो सोतोइस पुस्तगकी अशुद्धता पुनरुक्तिदोष कदाचित्
कोई प्रकारबी ग्रहण नहि करेगा बहुरि न्याय व्याकर्ण तर्क छंद कोसअ
लंकारादि शब्दशास्त्रसे अपणा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान स्वभाव
अग्नि उष्णतावत् एकतन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै ए
तजरूर इसग्रंथकी अशुद्धता पुनरुक्ति दोष ग्रहण करेग
स्वयंसिद्ध परमातमा अष्ट करम तथाद्रव्यकर्म भावकर्म
अखंड अविनाशि अचलसै सूर्य प्रकाशवत् एकतन
स्तुकालाभ वा मातकी प्राप्ति होणेजोग थी सोहम

होणीथीसो होगई अबहोणैकीनाहि॥ धर्मदासक्षुल्लककहै दुः
सीजगतके मांहि॥१॥ अर्थात् जैसैदीपकसे दीपकचेतता आयाहै
तैसैही गुरुउपदेशद्वारा ज्ञानहोता आयाहै एवार्ता अनादिहै सद्भू
त व्यवहारमे ज्योकोऊ गुरुके बचन द्वारा स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक
ज्ञानमयि स्वभाव बस्तुकी मातकी प्राप्तिहुये पश्चात् ऐसा अपूर्व
को लोपकारिके गुरुको नाम प्रसिद्ध नही कर्ताहै गुरुकी कीर्ति बडाई
जस गुणानुवाद नही कर्ताहै सो म्हापातगी पापी अपराधि मिथ्याद्र
ष्टि हत्यारोहै अर्थात् गुरुपदका कदाचित्त कोई प्रकारवी गुप्तरख-
णा श्रेष्ठनही सोही मैकेद्वारामें सत्य कहताहूं मेका सरीरको नाम क्षुल्लु
क ब्रह्मचारी धर्मदासहै वर्तमानकालमें सोहीमे कहताहूं श्रवण क-
रो मालवादेश मुकाम झालरापाटणमे नग्नदिगंबर श्रीमत् सिद्धश्रेण-
मुनिनामेंकूंदीक्षा सीक्षा ब्रत नेम व्यवहार भेषका दाता गुरुहै बहुरि ब-

राडदेश मुकाम कारंजा पट्टाधीश श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिजी भट्टारकजी का
उपदेश द्वारा मेरे कूं स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव व-
स्तु की प्राप्तकी प्राप्ति देणेवाले श्रीसतगुरु देवेंद्रकीर्तिजी है वास्ते मै मु-
कहूं बंधमोक्षसे सर्वथा प्रकार वर्जित सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु हूं
सोही स्वभाव वस्तु शब्द बचन द्वारा श्री मत् देवेंद्रकीर्ति नत्पट्टेरत नकीर्ति
जीके मै भेट अर्पण करचूक्यो हूं बहुरि खानदेश मुकाम पारोला मे सेठ
नानासहा नत्पुत्र पीतांबरदासजी आदि बहुतसे स्त्री पुरुष कूं अर आ-
रा पटणा छपरा बाढ फलटण झालरापाटण बऱ्हानपुर आदि बहुतसे
सहर ग्रामोंमे बहुतसे स्त्री पुरुषांकूं स्वभावसम्यक् ज्ञानको उपदेश दे
चुक्यो हूं ऊपर लिखे हुये सर्व व्यवहार गर्भत समजणा बहुरि सर्वजीवरा
सि जिसस्वभावसे तन्मयि है उसही स्वभावताकी स्वभावना सर्वही जी-
वराशिकूं होहू ऐसी मेरा अंतः करणमे इच्छा हुई है तिस इच्छाका सम

धानकेअर्थ येह पुस्तग बणाईहै बणाय करिकै पांचसै पुस्तगयेह छपा
ईहै ५०० पांचसै पुस्तग प्रसूत होणेकी सहायताके अर्थ रूपीयाये करो
१०० तो जिल्हास्याहाबाद मुकाम आरामे मरवनलालजीकी कोठीमेंबा
बू बिमलदासजीकी बिधवा सोकीसोही अर हमारीचेली द्रोपतीदेवी
खर्चीके अर्थज्योज्यो मेरा वचनोपदेश द्वारास्वस्वरूप-
स्वानुभवगम्यसम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु होणेजोग होचुके नेसदा
काल अखंड अविनासी चिरंजीव रहो इतिसम्यक्ज्ञानदीपकाकी-
प्रथम भूमिका समाप्तः ॥१॥ ॥ ॥प्रश्न॥ ॥जिनेंद्र कोणहै
॥उत्तर॥ ॥ज्ञानभानुजिनेंद्रहै प्रश्न जिनेंद्रकी पूजा करणा के नाही
करणा उत्तर पूजाकरणा परंतु सम्यक्ज्ञान वस्तुहै सोही जिनेंद्रहै अ
ज्ञान वस्तुकूं कोई जिनेंद्र मानताहै समजताहै कहताहै सो मिथ्याद्रष्टी-
है प्रश्न ज्ञानकोणहै उत्तर तनमनधन वचनकूं वह्यारे तनमनधन

वचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मकूं अनादहीसें सहज स्वभा-
वहीसे जाणताहै सोही ज्ञानहै प्रश्न मंदिरमे पद्मासण षड्गासण धा-
तु पाषाणकी मूर्तिहै सास्त्र बहुरि जल चंदनादिक अष्टद्रव्य मंदिर आदि
येह सर्व ज्ञानहै के अज्ञानहै उत्तर मंदिर प्रतिमादिक अज्ञानहै इनस-
र्वकूं केवल जाणनाहै सोही ज्ञानहै प्रश्न केवलज्ञान है सो शुभाशुभ-
दान पूजा क्रिया कर्म कर्त्ताहै के नाही कर्त्ताहै उत्तर केवल ज्ञानहै सो
तमात्रबी शुभाशुभ दान पूजा क्रिया कर्म नही कर्त्ताहै केवल
है प्रश्न तो येह शुभाशुभ कोण कर्त्ताहै निश्चय नयात् जिसका जो
कर्त्ताहै व्यवहार नयात् शुभाशुभ कर्मसे अनत् स्वरूप अतन्मयि होय
करिके ज्ञान कर्त्ताहै १ क्या करूं कहतां लाजसरम उपजतीहै
हताहूं जैसे सूर्यसें कदापि प्रकास नभिन्नहुवो नहोवैगो नभिन्नहै तैसें
जिससें देखणा जाणना कदापि भिन्ननाही नभिन्नहोवैगा नभिन्नहै ऐ

सा केवल ज्ञानमायि परमातमासे येक नेत्र काटि मकारामात्र वा समय
कालमात्र वी कोई जीव भिन्न रहताहै सो जीव संसारी मिथ्याद्रष्टी
गीहै जैसे सूर्यसे अंधकार अलगहै तदवत् ज्ञानस्वरूपि जिनेंद्रसे
पकूं अलग समज करिके फेर धातु पाषाणकी
क कर्ताहै सो मूरर्व मिथ्याद्रष्टीहै बहुरि जैसे
तैसे ज्ञानस्वरूपी जिनेंद्रसैं गुरूपदेशात् तन्मायि होय करिके फेर
षाण की मूर्तिका दर्शण पूजादिक कर्ताहै सो सम्यक्द्रष्टी
है १ हेमेरा मंत्रीहो दानपूजा व्रत शील जप तपनेमादिक
भावकरो बहुरि अशुभ जो पाप अपराध झूठ चोरी काम कुशील वी करो अ
र्थात् शुभाशुभ काम कर्म क्रिया इच्छा प्रमाण भलाई करो परंतु समज
करिके करो लौकीक बचन प्रसिद्धहै क्याके देखोजी तुम समज करिके
काम कार्य कर्नातो नुकसाण बिगाड किसवास्ते होता बिना समजसे ये

कार्य तुम कीया इस वास्तै नुकसाण हुवा बिना समज तुम पूर्व अनंतबेर प्रतक्ष समोसरणमे केवली भगवानकी मोतीके अक्षत रत्नदीप कल्पवृक्ष पुष्पादिकसै पूजा करी बहुरि प्रतक्ष दिव्यध्वनी श्रवण करी बहुरि मुनी व्रत शील अनंतबेर धारण कीये अर काम क्रोध लोभादिक वी अनंतकालसे करते चले आये सो सर्व शुभाशुभ बिनसमजसे करते चले आयेहो देखो बिनसमजसें कंठमे मोतीकी मालाहै अर भंडारमे खोजताहै बिनसमजसैंही कस्तूर्यो मृग कस्तूरीकूं खोजताहै बिनसमज सैंही आपहीकी छायाकूं भूत मानताहै बिन समजसैंही नदीका जल शीघ्रबेगसें बहना देख करिके आपहीकूं बहता मानताहै बिनसमज काक्षमे छोकरो पुत्र अर गांव देसमे खोजताहै बिनसमजसे हीसंसारी मिथ्याती बिषयभोग काम कुशीलतो छोडते नाही अर दान-पूजा व्रतशीलादिक छोड करिके आपकूं ज्ञानी मानतेहै कहतेहे समज

तेहै बहुरि बिन समजसै ही सदाकाल जागती ज्योति स्वस्वरूपस्वानु
भवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तका कबि कदाचित् तन्मयि नातो
आपसैं हुये नाहीं अर मूरर्ख ब्रतजप तप शील दान पूजादिक कर्ताहै सो
घृतके अर्थ जलकूं मथन ब्रथाही कर्ताहै वास्ते सर्व शुभाशुभ व्यवहार-
क्रियाकर्मके बहुरि जन्म मरण नामजाति कूल वा तन मन धन वचनादि
कके प्रथम समज होणा श्रेष्ठहै १

॥ इति भूमिका समाप्त ॥

ॐनमः ॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपका प्रारंभः ॥ ॥तहांप्रथमस्व
स्वरूपस्वानुभवसूचक श्लोक॥ ॥महावीरंनमस्कृत्य केवलज्ञान-
भास्करं॥ सम्यक्ज्ञानदीपस्य मयाकिंचित् प्रकाश्यते ॥१॥ ॥स्कं
दरिछंद॥ ॥अथअनादिअनंतजिनेश्वरम् सरसस्कंदरबोधमयि
परं॥ परम मंगलदायकहैसही नमतहूं इसकारणस्कंभमही ॥१॥ ॥
अथबचनिका॥ ॥मूलबस्तु दोयहै ज्ञान अज्ञान तामैजैसे सूर्यमै
प्रकाशगुणहै तैसेजिसबस्तुमै देखणेजाणनेकागुण स्वभावही सैहै
सोबस्तुतो केवल ज्ञानहै बहुरि जिसबस्तुमै स्वभावहीसे देखणेजा
णनेका गुण नाहीं सोही अज्ञान बस्तुहै येह तन मनधन बचन शब्दा
दिक अज्ञानसे ऐसा मिलेहै जैसे काजलसे कलंक मिलरह्योहै बहुरि
जैसे केवलि ज्ञानमै देखणे जाणनेका गुणहै तैसे शब्दमै कहणे का-
गुणहै बहुरि ज्ञानवस्तु आपापर कू देखतहै जाणतहै सोआपहीआ

अथ सम्यक्ज्ञानदीपिकाप्रारंभः

पकूंतो आपसे आप तन्मयि हो करिके जाणतहै बहुरि ज्ञानसै सर्वथा प्रकार भिन्नवस्तुहै ताकूं ज्ञानजाणताहै परंतु जड अज्ञान मयि वस्तु से तनमयि होकरिके नहीं जाणतहै बहुरि कहणेका गुण अज्ञानमयि शब्दहै तामैहै सोशब्द स्वपरकी वार्ता कहताहै परंतु स्वपरकूं जाणतानाहीं स्वसैंतो तन्मयि हो करिके कहताहै बहुरि परसे अतन्मयि हो करिके कहताहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहै ताका अर शब्दादिक अज्ञानवस्तुहै ताका परस्पर सूर्य अंधकारकासा अंतर भेद मूलहीसेहै तोवी शब्दहै सो परमात्मा ज्ञानमयिकी वार्ता कहताहै॥ ॥अथप्रश्न॥ ॥शब्द अज्ञान वस्तुहै सो सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माकूं जाणत नाहीं फेर सम्यक् ज्ञान मयि परमात्माकी वार्ता कैसे कहताहै अथउत्तर जैसे कोई चंद्र दर्शणकोलोभी किसीगुरु संगनसै नम्रता पूर्वक बूजी के चंद्र कहाहै तब गुरुकही

के वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके ऊपर इहां विचार करो शब्दांगुलीके अर चंद्र
के जेता अंतर भेद है तेताही भेद सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माके अर शब्द
के समजणा इसप्रकार कहणे का गुणतो शब्दमै है बहुरि जाणवाका
गुण केवल ज्ञानमै है इति जैसैं जिस नगरमै अज्ञानी राजा है ताकेऊ
पर केवलज्ञानी राजा होसक्ता है बहुरि जिस नगरमै केवल ज्ञानी रा
जा है ताके ऊपर कोईवी अधिष्ठाता राजा होणा नसंभवै अब हे
ल ज्ञान स्वरूपी सूर्य तूं मूलस्वभावहीसै जैसा को तैसो जैसो है तैसो
सो को सोही है तूं केवल ज्ञानमयि सूर्यही है तुं नस्करणताही अवण
करि तेरे करम भरम पुद्गलका बिकार काला पीला लाल धोला हरया
अनेक पाप पुन्यरूपी बादल बीजली आदि आड़ा आवे जावे तोबी
तूं तेरेकूं केवल ज्ञानमयि सूर्यही समजमान तूं तेरेकूं केवल
र्य नसमजैगो नमानैगो तो तेरेकूं तेराही घात करणेको पाप लागैगो आ

पघाती महापापी ॥ ॥इतिप्रसिद्धवचन॥ ॥अथप्रश्न॥ ॥दोहा
मैकेवलज्ञानमयि सूर्यतो निश्चयहूं परंतु मै तनमनधन
साभिन्नहूं जैसा अंधारासै सूर्यभिन्नहै तैसा फेरमै मेरेकूं केवल
यिसूर्यकोण द्वारा होकरिकै समजूं मानूं सोकहो अथउत्तर
ताही श्रवणकारे आत्मख्याती ग्रंथमे कुंदकुंदाचार्य ग्रंथके
मैही कहीहै जीवद्वार अजीवद्वार आश्रवद्वार संबर द्वार निर्जराद्वार
बंधद्वार मोक्षद्वार पापद्वार पुन्यद्वार सर्वविशुद्धीद्वार कर्ताद्वार कर्मद्वा
र येहद्वादशद्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा हम तुम येह वह येह ४
च्यारद्वारा द्वार० होय करिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज घा तन मन वचन
धनादिकके द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा पुद्गलतो आकार
र्माधर्म आकाशकालहै सोनीराकार वास्ते आकार नीराकारके द्वारा हो·
करिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज है अर नही येह दोय द्वारा होकरिकै तूं ने

रेकूं निश्चय समज निश्चय व्यवहारके द्वारा होकरिके तूं
समज वा नाम स्थापना द्रव्य भाव येह ४ च्यारके द्वारा हो तूं
रेकूं निश्चय समज तथा जन्म मरण सुख दुःख शुभाशुभ विचारके
द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा संकल्प विकल्प
वके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज १ वेद पुराण शास्त्र सूत्र
सिद्धांतके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा द्रव्य कर्म भाव
कर्म नो कर्म नो द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज पूर्वोक्त
विशेष समज गुरुके वचन द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज और श्रवण का
जैसे सूर्य प्रकाश येक मयिहे तैसे पूर्वोक्त द्वारकूं और तूं तेरेकूं येक
समजेगो मानैगो तो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होवेगो
ज्योकोई द्वारहीकूं अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
भाव समजेगो मानैगो वो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होरहेगो

जैसैं येक बडे भारी नगरके अनेक द्वार स्कंदरहै इच्छा आवै कोई द्वारमै हो
करिके सहरमै प्रवेश करो प्रवेश करणे वालो नगरमै पूगजायैगो विचार
करणा सहरके भीतर महल मंदिर मकानहै ताके द्वार सहस्त्र लक्षादि है
अर सहरमै प्रवेश करणे वाला का शरीरमै दश द्वारतो प्रसिद्धही है विशे
ष रोमरोम प्रति छिद्र है वास्तै सहरमै प्रवेश करणे वाले के शरीरही मैल
क्ष कोटादि द्वारहै वास्तै पूर्वोक्त विचार द्वारा आदि अनंत संसार अपा
र संसारके द्वारा होकरिकै अपणा आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभ
वगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु कूं अर पूर्वोक्त द्वारकूं अभिउष्ण
तावत् सूर्य प्रकाशवत् येक मति समजो मतिमानूं जैसैं राज द्वार ऐसा क
हणेसै येह भाव भाषहोताहै केजिस द्वारके भीतर होकरिके राजा आतेहै
जातेहै परंतु ऐसै नसमजणा के राजाहै सोही द्वारहै अर द्वारहै सोहीरा
जाहै केवल कहणे मात्र राज द्वारहै अर्थात् द्वारहैसो द्वारहीहै अर राजा

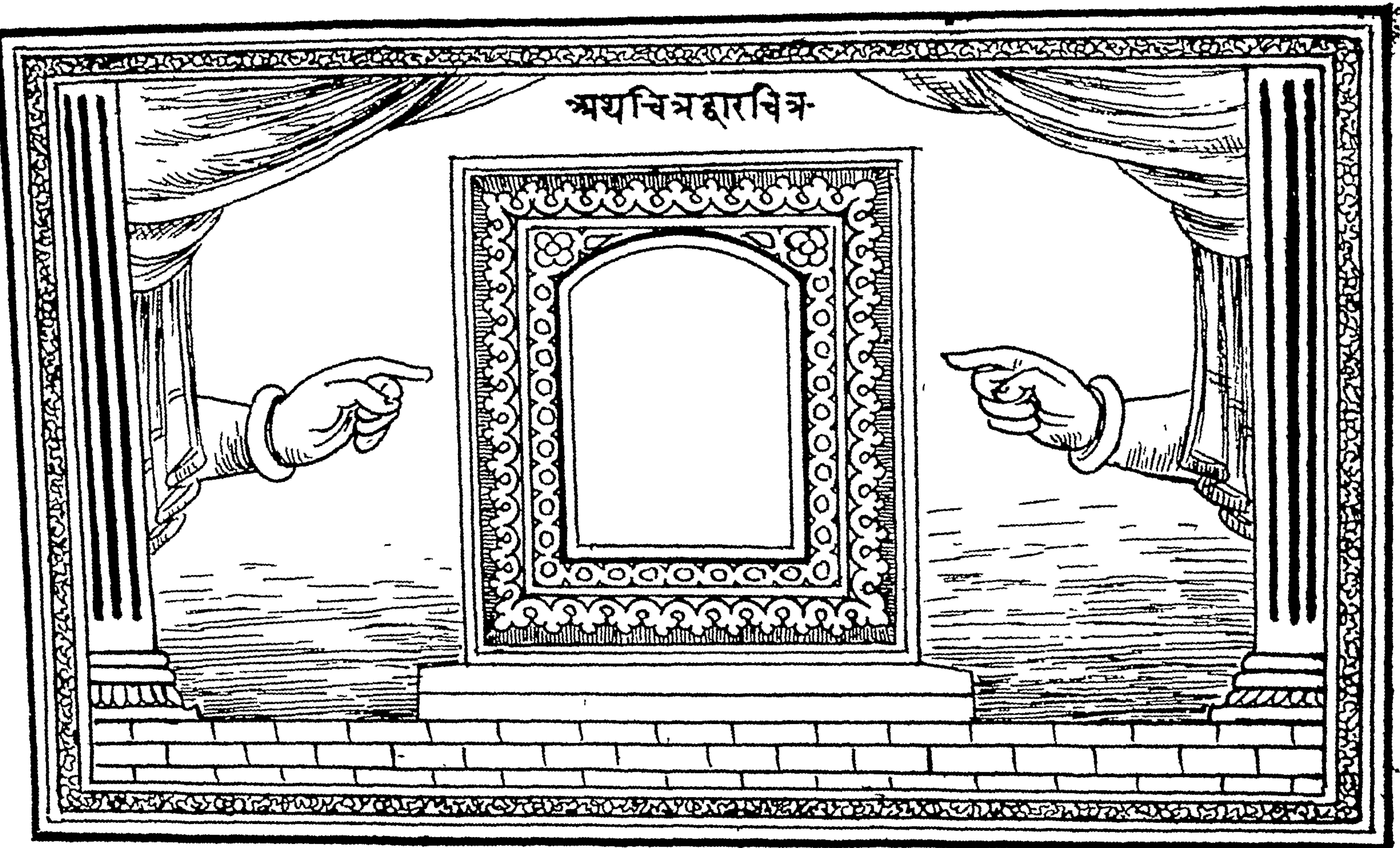
सं·ज्ञा २६

हैसो राजाहीहै ऐसैही सर्वद्वार द्वार प्रति समज लेणा जिसकाजोही द्वार-
है क्यूंकेसूर्यके देखणेसे सूर्यकी खबर होतीहै तैसैही जिसकूं
जिसहीकी खबर होतीहै येसर्व आण होएगीसो युगती स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुकी प्रातकी प्राप्ति के अर्थ हम क-
रिहै औरबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु सूचक
युक्तिआगे कहैगे तुम इस द्वारमे होकरिके आवोजावो अथवा अमुकाद्वार-
मे होकरिके आवोजावो मोक्षद्वार जीवद्वार अजीवद्वार ध्यानद्वार इत्यादि-
कद्वारमे होकरिके आवोजावो यदि नहि आवो नहीजावो तो तुम तुमारास्व-
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्यसम्यक्ज्ञानमयि स्वभावमे जैसाका तैसा जैसाहोतै
सासोका सोहीहो सोही रहो हे सूर्य तूं तेरा प्रकाशगुण स्वभावकूं
कै अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधारावत मति होएगा नहोएगा
लज्ञानमयि सूर्य तूं तेरागुण स्वभावसे निरंतर सदोदयहै ताको सोही

कदाचित कोईप्रकारबी तूं तन मन धन वचन शब्दादिक या
धर्मास्तिकाकालादिक वत मतिहोएगा नहोएगा २

दीप·
चि·द्वा·

कदाचित् कोईप्रकारबी तूं तन मन धन बचन शब्दादिक या पुद्गल धर्मा धर्माकाश कालादिक घन मतिहोएगा नहोएगा १ इतिचित्रद्वार विवर्ण युक्तिसंपूर्ण दोहू हस्तांगुलीचित्रद्वारा परस्पर उपदेस रूप सूचवहे ताको अनुभव ऐसैलेणा येहयेक द्वाराहे तामै येक कहताहे इस द्वारमे होकरिके तुम इदरकी तरफ जावोगा तबतो तुमकूं जीव चेतन ज्ञानका लाभहोगा दूसरा कहताहे इस द्वारमे होकरिके तुम इदरकी त्रफ जावोगातो तुमकूं अजीव अचेतन अज्ञान जडका लाभहोवैगा यदितुमहमारे कहएसैजीवाजीवज्ञानाज्ञानका लक्षलक्षणजात्यादिक परस्पर भिन्नाभिन्न समज करिके दुविधाद्वैतताकी विकल्पत्याग करिके दोहूतरफ नहीजावोगेतो तुम तुमारास्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयिस्वभावमे स्वभावहीसे जैसाका तैसा जेसाहै सोकासोही जहांके तहां चलाचलरहित रहोगे १



ॐनमः॥ ॥अथवस्तुस्वभावविवर्णचित्रसहितलिख्यते॥ ॥
॥ ॥

ॐनमः॥ ॥अथवस्तुस्वभावविवर्णचित्रसहितलिख्यते॥ ॥दोहा
॥ ॥सम्यक्ज्ञानस्वभावमे लीनभयेजिनराज धर्मदासक्षुल्लककरै
नत्वानिसिदिनसाज॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥मूलवस्तु२ दोयहै
एकज्ञान दूसरोअज्ञान बहुरि अज्ञान वस्तु पांचहै ५ पुद्गल धर्म अध
र्म आकाश काल येहपांचद्रव्यहै तामै पुद्गलतो मूर्ति आकारहै बाकी
४ च्यार द्रव्य अमूर्ति निराकारहै इनमै ज्ञानगुण नाही जीवबी अमूर्ति
निराकारहै परंतु जैसे सूर्यमे प्रकाशगुणहै तैसे जीवमे ज्ञानगुणहै वा
स्तेजीव वस्तु उत्तमहै परंतु जोजीव गुरुपदेशात् अपणा आपमे आप-
मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तू जाणगये-
सोतो उत्तमहै पूज्यहै मान्यहै धन्यवादयोगहै बहुरि जैसे बकरी मंडली
मे जन्मसमयसेही परवसात् सिंह रहताहै आपकूं सिंहस्वरूप नसमज
ताहै नमानताहै तैसेही जोजीव अनादि कर्म वसात् संसार कारागारमै

है सो अपणा आपमै आपमयि सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव गुणकूं तो जाणते नाहि मानते नाही अर अनादि कर्म वसात् आपकूं ऐसा मानत है के येह जन्म मरण नाम अनाम आकार निराकार तन मन धन वचन बिचार बु-
१ विकल्प राग द्वेष मोह काम कर्म क्रोध मान माया लोभ
पुन्यादिक है सो ही मैहूं अर्थात् स्वरूप ज्ञान रहित है सो जीव तो है परंतु अशुद्ध संसारी जीव है अब येक दोय संख्या असंख्या एकांत
एक अनेक द्वैताद्वैत आदिकसै सर्वथा प्रकार भिन्न एक स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मधि स्वभाव वस्तु चलाचल रहित है बिसेष स्वानुभव आगे चित्र द्वारा लेणा साधारण अबी लेणा सर्व वस्तु अपने पने स्वभावमै मग्न है कोई वस्तु बी अपणा स्वभाव गुणकूं उल्लंघन के परस्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभाव गुण ग्रहण करते नाही वस्तु अपणा गुण स्वभाव छोडदे तो वस्त का अभाव होय वस्तका

वहोते संते आत्मा परमात्मा अर संसार मोक्षादिक
सार मोक्षादिकका अभाव होते संते सून्य दोष आवैगा

वहोतेसंते आत्मा परमात्मा अरसंसार मोक्षादिक
सार मोक्षादिकका अभाव होते संते सून्य दोष आवैगा वास्तै वस्तु कोइहै
सर्वही वस्तु अपणे अपणे स्वभावमै जैसीहै
नुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि वस्तुबी स्वभावमै जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै
स्वभावमै तर्कको अभावहै तथापी अनादिकालसै स्वस्वरूप स्वानुभव-
गम्य सम्यक् ज्ञान मयी वस्तुसे सर्वथा प्रकार भिन्नयेक अज्ञान मयि बस्तु
है तामै कहणेका बिचार चिंतवन संकल्प बिकल्प आदि बहुत गुणहै
वाजडमयि अज्ञान बस्तु अनेक प्रकारसे स्वस्वरूप
नमयि स्वभाव घस्तू कूं मानैहै कहैहै सोसम्यक् ज्ञान स्वभावमै संभवै नाहीं
तातै मिथ्याहै जैसी मानैहै कहैहै तैसी बस्तू वाहै नही क्यूंके घस्तु अपणा
स्वभावमै जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै वाजड अज्ञान मयि वस्तु हैसो सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाष घस्तूकूं इसप्रकार मानैहै कहैहै सोही कहियेहै वास्त-

स्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु तो आपणी
प आपहीके स्वभावमै है सोतो जहांकी तहां जैसाकी तैसी जैसीहै तै
सी सोकी सोहीहै सोहै जिसकूं कोइतो निराकार मानैहै कहै है और उ-
सी वस्तुकूं कोई आकार मानैहै कहैहै अर्थात् उसी वस्तुकूं कोई कैसे
मानैहै कोई कैसे मानैहै अब देखो चिन्हहस्त परस्पर
च वस्तु कूं आंगुलीसे सूचैहै पूर्ववासी कहताहै मानताहै केवा सम्यक्
ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिम कूंहै पश्चिम वासी कहताहै मानताहै के-
वा सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिमकूं नही किंतु या वस्तु पूर्वकूंहै द-
क्षिणवासी कहताहै मानताहै के या सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पूर्वकूं
नही और पश्चिमकूं नही या सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो उत्तर कूंहै उ-
त्तर बासी कहताहै के वा सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु तो पूर्व पश्चिम उ-
त्तर कूं बी नही किंतु वा सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु दक्षिण कूं है ...

कूंबी नही किंतु यासम्यक ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु

अग्नीकोणवासी उसवस्तूकों वायूकोणमे मानताहै वायूकौंणवासी उसवस्तूकूं अग्नीकौणमे मानताहै नैऋत कोण बासी उस बस्तूकूं ईशान कोणमे मानताहै ईशानकौंणवासी उस बस्तूकूं नैर्ऋत कोणमे मानताहै ऐसैही निश्चयालंबी व्यवहारकूं निषेधैहै व्यवहारालंबीनीश्चयकूं निषेधैहै॥ ॥सवैया॥ ॥एककहूंतो अनेकहिदीषत एकअनेक नहीकछु ऐसो॥आदिकहूंतो अंतही आवत आदिक अंतक मध्यक के ॥गुन कहूंतोअगुनहै कहां गुनअगुनउभयोनाहिऐसो जोहिकहूं सोहैनहिसुंदर हैनोसहीपणजैसोकोतेसो॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥ उस सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव बस्तुकूं कोई कैसे मानतहै कोई कैसे मानत परंतु मानू भलाई बस्तुयेह मानतेहै जैसीहै नही भावार्थ बस्तक अपणास्वभावमे जैसीहै तैसी है सोहै बस्तका स्वभावमे तर्कको अभाव है॥ ॥चौपाई॥ ॥ज्ञेयाकारब्रह्ममलमानै नासकरणकोउद्यमठानै॥

वस्तुस्वभाव मिटैनाहि क्यूंही तातैंखेद करैसठयूंही ॥दोहा॥वस्तुविचा-
रतध्यावतै मनपावैविस्राम॥ रसस्वादत सुखऊपजे अनुभवताकोनाम
॥२॥ अनुभवचिंतामणिरतन अनुभवहैरसकूप अनुभव मारगमोक्ष
को अनुभवमोक्षस्वरूप॥३॥ ॥अथवचनिका॥ ॥अर्थात् येह
जेतीनयन्याय एकांत अनेकांत निश्चय व्यवहार स्याद्वाद प्रमाणन-
जेताहै तेताही वादाविवादहै वहुरिजेता
वादहै तेताही मिथ्यात्वहै जेता मिथ्यात्वहै तेताही संसारहै वास्ते॥
चौपाई॥ ॥सतगुरुकहैसहजकाधंधा येहवादविवाद करैसोअंधा
॥१॥ ॥औरस्कणोनादिकसमयसारग्रंथोक्तं॥ सवैया ३१सा॥ ॥
असंख्यात लोकपर माणजोमिथ्यातभावतेहीव्यवहारभावके
तहै॥ जिनकेमिथ्यातगयोसम्यकदरशभयोतेनियतलीन व्यवहारसै
कतहै॥ ॥पुनरोक्तं॥ ॥निश्चयव्यवहारमेंजगतभरमायोहै॥ ॥

भावार्थ॥ ॥ वस्त्वस्वरूप सम्यक् स्वानुभवगम्य ज्ञानमयि स्वभाव
तोस्वभावहीसे जैसीहै देखोचित्र

कत्तहै॥ ॥पुनरोक्तं॥ ॥

भावार्थ॥ ॥वास्वस्वरूप सम्यक् स्वानुभवगम्य ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु
तोस्वभावहीसे जैसीहै तैसीहै देखो चित्र हस्तांगुली सूचहै पूर्वपक्षी-
जिस वस्तुकूं पश्चिम तरफ मानैहै तैसैही पश्चिमपक्षी उसी वस्तुकूं पूर्वकी
तरफ मानैहै वस्तुतो नपूर्वकूं नपश्चिमकूं वृथाही पूर्वपक्षी पश्चिम पक्षी
परस्पर विरोध सूच है- क्यूंके वस्तु स्वस्वभावमे स्वभावहीसे जैसीकी
तैसी जहांकी तहां चलाचलरहित है इस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी जिसकूं पूर्ण अनुभव लेणा होय सो प्रथ-
म आपकूं मैकेहारा वागुरुपदेसात् ऐसो कल्प लेणो ऐसो आपकूं मा-
नलेणो के स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्य स्वभाव वस्तु
अपणी आपमे आप स्वभावहीसे जैसीहै तैसीहै जिस स्वभावमयि व
स्तुमै नर्कको अभाव मूलहीसैहै सोही मैहूं ऐसे अपणे आपकूं मैकेहा
रा वा गुरुके बचनहारा कल्पलेणो वादपीछे चित्र हस्तांगुलीमोनसहित

येकांतस्थानमै बैठकरिके देखवोही करो देखने देखने देखणारहेगा ना
चणेमे मजानाहीं नृत्यनाच देखणेमे बडा मजाहै ॥ ॥दोहा॥ ॥सम्य
क्ज्ञानस्वभावसे सदाभिन्न अज्ञान ॥ धर्मदासक्षुल्लककहै प्रेमचंद्र तु
मान॥१॥ चित्रांगुलिकुं देखके मनमे करोविचार॥
पावोगाभवपार॥२॥ जैसासूर्यका प्रकास पृथ्वी जलाग्नि आदि कर्ता
कर्म क्रियाके तथाशुभाशुभ वस्तूकेऊपरहै तैसैही
ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकाज्ञानगु
ण प्रकाशहै परंतु चित्रहस्तांगुलिसे अर चित्र हस्तांगुलीका भाव क्रि
याकर्म आदिजेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहै तासे ज्ञानगुण नतन्मयि
है नहोवेगा नहुयेथे बहुरि ज्ञानगुण अर जिसगुणीका ज्ञानगुणहै
वो चित्रहस्तांगुलीसे बहुरि चित्रहस्तांगुलीकाभाव क्रिया कर्म आदि
जेताकुछ शुभाशुभ व्यवहारहै तासै नतन्मयिहुये नहोयेगा नहै वि-

शेष ओर समजणा करणो जैसै येक मोटोचोडो लंबो स्वच्छस्वभावमयि दर्पण ताके

जेता कुछ शुभाशुभ व्यवहार है तासे तन्मयि हुये

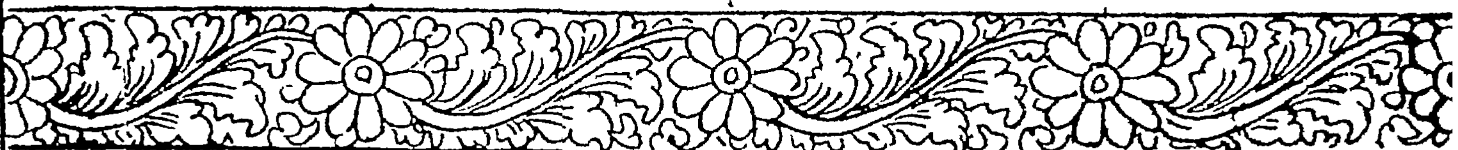
शेष और समजणा सुणो जैसे येक मोटो चोडो लंबो स्वच्छ स्वभावम
यि दर्पण ताके सन्मुख अनेक प्रकारका काला पीला लाल हरित सुपे
दादिक रंगका थांका टेढा लंबा चोडा गोल तिरच्छा आदि आकार है ता
की प्रतिछाया प्रतिबिंब उस स्वच्छ दर्पणमे तन्मयिवत दीखत है तैसे ही
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमे येह
मनुष्य देव तिर्यंच नारकीका वा स्त्री पुरुष नपूंसकका वा तनमन धन ब
चन तथा लोकालोक आदिकका शुभाशुभ जेता व्यवहार है ताकी प्र
तिच्छाया प्रतिबिंब उस स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्व
च्छ स्वभाव दर्पणमे तन्मयिवत दीखत है मानु कील राखे है मानु चित्रका
र लिख राखे है मानु काहु शिल्पकार टांचीसे कोर राखे है भावार्थ स्व-
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभावमयि दर्पण है सो
वी स्वभाव ही से स्वभावमे जैसा है तैसा है बहुरि तनमन धन बचनादिक

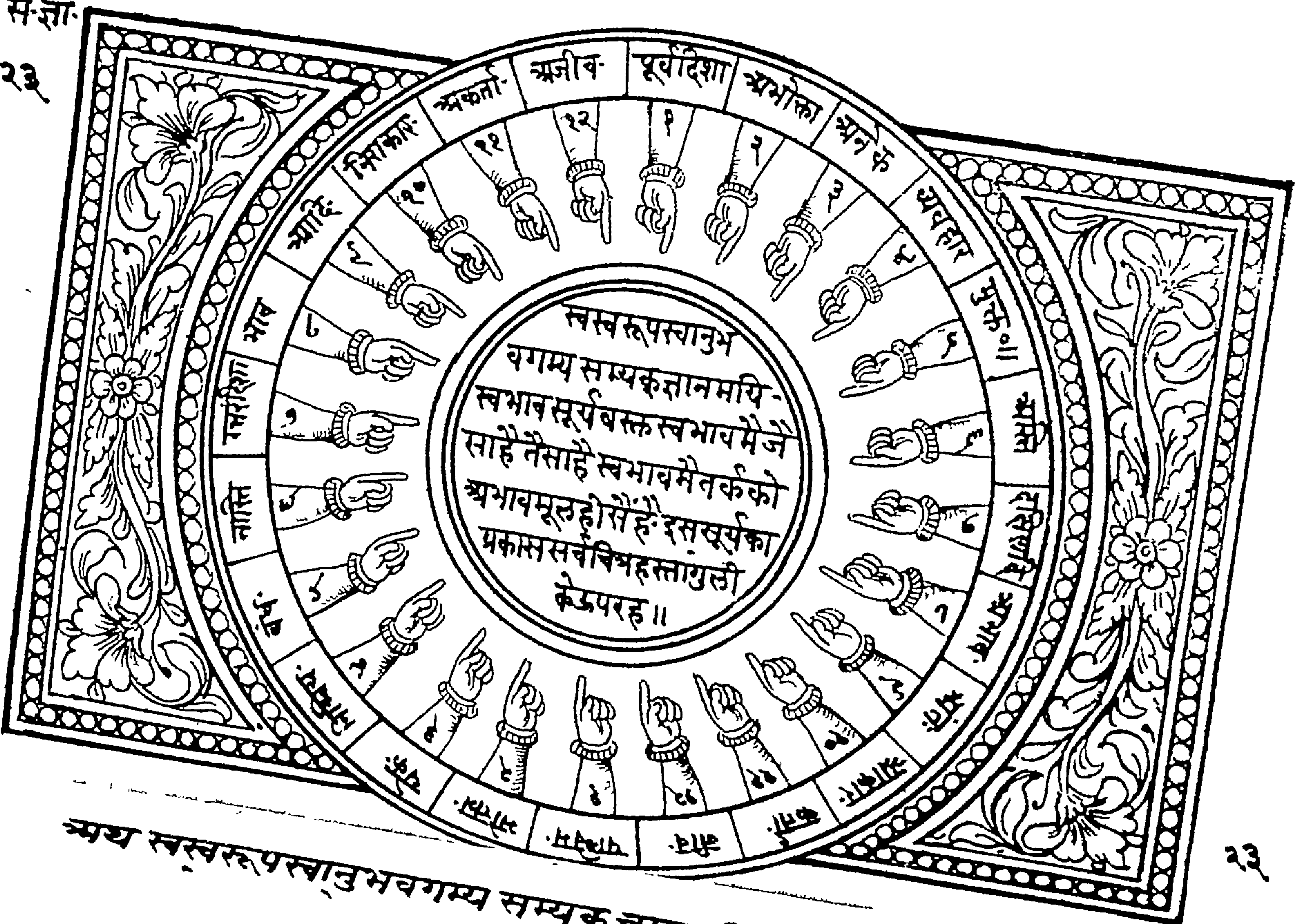
अर इस तन मन धन वचनादिक का शुभाशुभ व्यवहार बहुरि ताकी
प्रतिच्छाया प्रतिबिंब स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि
स्वभाव दर्पणमै तन्मयिवत् दीखतहै सोबी अज्ञानमयि स्वभावहीसे
स्वभावमै जैसाहै तैसाहै पूर्वोक्त स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
मयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणको साक्षात् स्वानुभवकी प्राप्तकी प्राप्ति
रुकाउपदेशविना तथा काल लब्धिपावक हुये बिना स्वस्वरूप सम्यक्
नको लाभ नहीहोय शृणो जैसै सूर्यमै प्रकाश तन्मयिहै तैसै जिस
ज्ञानगुण तन्मयिहै उसी वस्तुकूं मुनी ऋषी आचार्य
जीव कहतेहै सो निश्चय दृष्टीमै जीवराशी जीव मयिहै शृणो
ष्ठिमै जीवराशीके परस्पर जातिभेद नही स्वभावभेद नही लक्ष लक्षण
को भेदनहीं नामभेद नहीं स्वरूपभेद नही अर्थात् गुणगुणी अभेद
वास्तै जीवराशीके परस्पर गुणगुणी भेदनाहीं यदिस्यात्

परमयीहीहै येह अनादिसिद्धांत वार्ता वचनहैसो शब्दसे तन्मयं
अबहे

वालेजीवराशीके परस्पर गुणगुणी भेदनाहीं यदिस्यात्

दहैसो परमयीहीहै येह अनादिसिद्धांत वार्ता बचनहैसो शब्दसे
है अबहे मतवालेहोतथाहेजैनमतवालेहो हेवैश्नुमतवालेहो शिवमतवा
ले बौद्धमतवाले आदि षट्मतवालेहो जन्मांध षट् हस्तीको जथावत्
प नजानकरिके परस्पर बिबाद बिरोधकरतेकरते मरगये
हो षट्जन्मांधवत् परस्पर बिनसमजे बिबाद वैर विरोध
गुरुर्वाक्यं तृतीयंचात्मनिश्चयं अर्थात् शास्त्रमें लिखीहोय सोकी
रवसै वाणीरवरतीहोय बहुरि सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि
स्वभावमें अचलप्रमाणमें आवैउसीकू हेमलवालेमित्रोंहो समजो दोहा
जोसभजमें समजोनिश्चयसार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै तबपावोभवपार॥१॥ इति०





अथ स्वस्वरूपस्यानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावसूर्य वस्तु है ॥

अथ स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावसूर्य वस्तु है
तन्मयि होय करिकै ताका स्वानुभव ऐसे लेगा एक नयकै तो दुष्ट कहिये
द्वेषीहै बहुरि दूसरी नयके दुष्ट नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके-
दोय पक्षपातहै १ एकनयके कर्ताहै दूसरी नयके कर्ता नाहीहै ऐसै ये-
ह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक नयके भोक्ताहै दूसरी
नयके भोक्ता नाहीहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १
एकनयकेजीवहै दूसरी नयके जीव नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू न-
यके दोय पक्षपातहै १ एकनयके सूक्ष्महै दूसरी नयके सूक्ष्म नाहीहै ऐ-
से येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके हेतुहै दूसरी
नयके हेतु नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्षपातहै १ एक-
नयके कार्यहै दूसरी नयके कार्य नाहीं १ एकनयके भावहै दूसरीनय
केअभावहै ऐसैयेह चैतन्य विषै दोहुनयके दोहु पक्षपातहै १ एक

केयेकहै दूसरी नयके अनेकहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्ष
पातहै १ एकनयके सांतकहिये अंतसहितहै दूसरी नयके अंत नाहीहै
ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके नित्यहै दू
सरी नयके अनित्यहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १
एकनयके वाच्य कहिये वचनकरि कहनेमे आवैहै दूसरी नयके वचन-
गोचर नाहीहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक-
नयके नानारूपहै दूसरी नयके नानारूप नाहीहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दो
हूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके चेतकहिये जाननेजोग्यहै दूसरी
नयके चिंतवने योग्य नहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय
तहै १ एकनयकेदृश्यकहिये देखनेयोग्यहै दूसरी नयके देखनमे नाहीं
आवैहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके वे-
द्यक कहिये वेदने योग्यहै दूसरी नयके वेदनेमे नही आवैहै ऐसै येहचै-
तन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपातहै १ एक नयकेभावकहिये वर्तमानप

कहिये बेदने योग्यहै दूसरी नयके बेदनेमे नही आवैहै ऐसै येहचै-

तन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपातहै १ एक नयके भाव कहिये बर्तमानप्र
त्यक्षहै दूसरी नयके नाहीहै ऐसै येहचैतन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपात
१ ऐसै चैतन्यविषै येह सर्व पक्षपातहै बहुरि तत्ववेदीहीहै सो स्वस्वरू
स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य बस्तुकूं यथार्थ स्वानुभव क
रनेवालाहै ताके चिन्मात्रभावहै सो चिन्मात्रहीहै पक्षपातसे सूर्यप्रकाश
येक नन्मयि नहै नहोवैगा नहुयेये अर्थात् जैसै सूर्यसें अंधकार भिन्न
स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यहै सो विधिनि
अस्ति नास्ति राग द्वेष बैर बिरोध पक्षपात द्वैताद्वैतसै वा संकल्प विक-
१ जैसै सूर्यका प्रकासमे येक लघुहै तो दूसरो स्थूलहै येक मू
तो दूसरो पंडितहै येक भोगीहैतो दूसरो जोगीहै येक लेताहै तो दूसरो
येकमरताहै तो दूसरो जनमताहै येक भलोहै तो दूसरो बुरोहै येक मो
नीहै तो दूसरो बक्ताहै येक अंधोहै तो दूसरो देखतोहै येक पापीहै तो दूसरो

पुन्यवानहै येकउत्तमहै तो दूसरोनीचहै येक कर्ताहै तो दूसरो अकर्ताहै
येकचलताहै तो दूसरो अचलहै येक क्रोधीहै तो दूसरो क्षमावानवीहै ये
क धर्मीहै तो दूसरो अधर्मीहै कोई किसीसे नगीचहै तो
न्नहै कोई बंध्योहै दूसरो मुक्तहै खूलोहै कोई उलटोहै तो दूसरो
लटोहै इत्यादिक जैसे येह सूर्यका प्रकासमे सर्वहै तैसैही स्वस्वरूप स्वा·

सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमे पूर्वोक्त

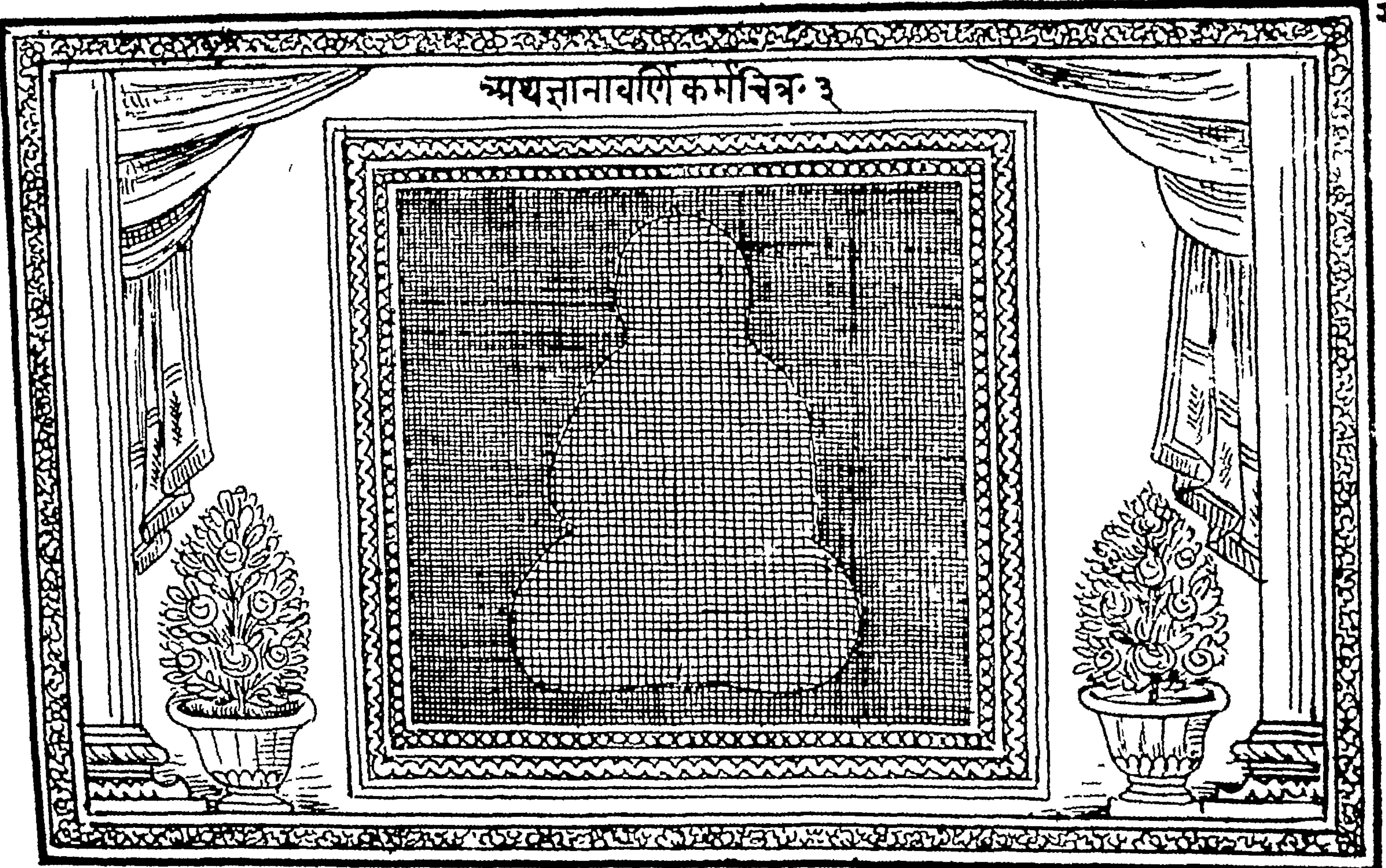
अर्थात् पूर्वोक्त पक्षपातहै सो पक्षपातसे अग्नि उष्णतावत् येकत
बहुरि जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तैसे पूर्वोक्त पक्षपातहै सो स्व
ज्ञानमयि सूर्यसे भिन्नहै प्रथम गुरूपदेसात् सर्वचित्र हस्तांगुली
के बिचमेहै सो अचल वर्णिकारिके बाद पश्चात्

कहहै मानैहै सो समजणा समजणेके द्वारा अपणा आपमे आप·
स्वसम्यक् ज्ञानमे संभवौ सो तो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवसे तन्मयि शोधन

सो अतन्मयि स्वस्वभावमे संभवै सो अपणीहै स्वस्वभावमे नसंभवै
अपणी कदाचित

स्वसम्यक् ज्ञानमे संभवै सोतो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवसै तन्मयि शोधन

संभवै सो अतन्मयि स्वस्वभावमे संभवै सो अपणीहै स्वस्वभावमै नसंभवै
सो अपणी कदाचित कोई प्रकारबीनहै नहोवैगी नहुईथी अब अवगाहता
अर्थ चेतकरो पीतांबर दासजी आदिजेना मुमुक्षु मेरा प्यारा मेरा वचनो
पदेस द्वारा स्वस्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानानुभव प्रापकी प्राप्ती लेऐ
चुकेहोतो इस सम्यक् ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसे अंत पर्यंत् दोय म-
हिनामै येकबेर पढलीया करो यावत् देहादिक भाष तावत्काल पर्यंत येह
मेरा लिषणा सद्भूत व्यवहार गर्भित समजणा १ ॥श्री॥ ॥श्री॥



॥ अथज्ञानावर्णीकर्मविवर्णमाह॥ ॥दोहा॥

१	मति	१	ज्ञान
२	श्रुति	२	ज्ञान
३	अवधि	३	ज्ञान
४	मनपर्य	४	ज्ञान
५	केवल	५	ज्ञान
६	कुमति	६	ज्ञान
७	कुश्रुति	७	ज्ञान
८	कुअवधि	८	ज्ञान

॥ अथज्ञानावर्णीकर्मबिवर्णमाह॥ ॥दोहा॥
ज्ञानावर्णी घातके हुवोज्ञानकोज्ञान ॥ धर्मदास
क्षुल्लककहे जिनआगमपरमान ॥१॥ अथव
चनिका॥ ॥जैसैदेवमूर्तिके आडो मुलमलके
वस्त्रको पटलहोय तबदूसराकूं देवमूर्तिस्पष्टदी
खैनाहीं तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानके येकपटवत् कर्महै सो आडोआजावे तब
निरंतर दृष्टीरहितकूं अंतरज्ञान दीखे नाही अथवा जैसे सूर्यके आडो वा
दल आज्यावै तब दूजाकूं सूर्यस्पष्टदीखै नाहीं तदवतही केवलज्ञानम
यि सूर्यकेपटलवत्त कर्म आज्यावै तबज्ञानरहितकूं दीखतानाही जैसे
सूर्यके आडा पटवत् अनेक बादल आज्यावे तोबी सूर्यहैसो सूर्यहीहै
यदि बादलरहित सूर्य होयतोबी सूर्यहैसो सूर्यहीहै सूर्यके आडाबाद

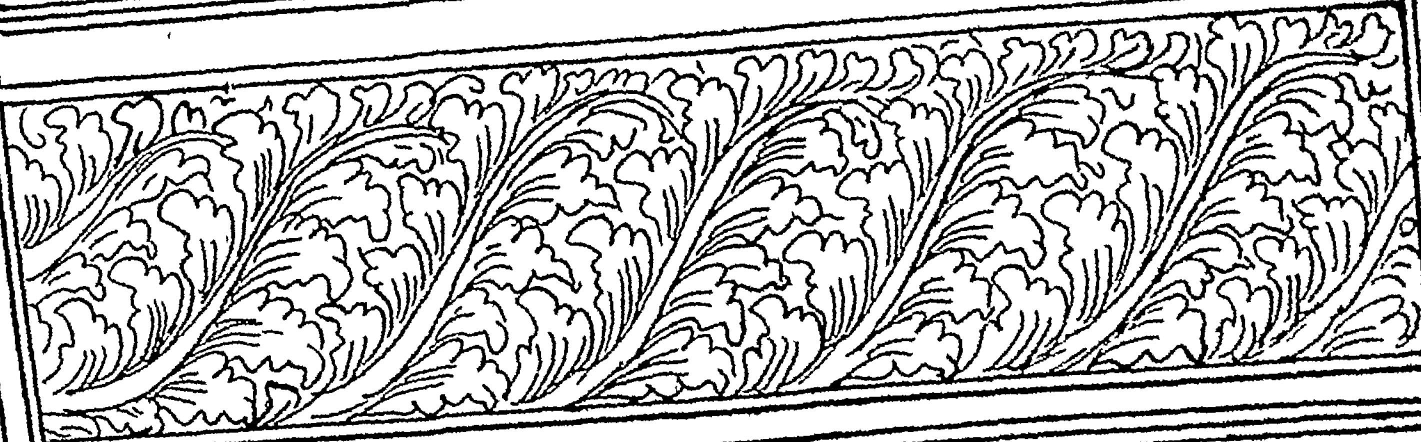
ल आज्यावे तब सूर्यकूं सूर्यही नमानताहै नसमजताहै न
सोबी मिथ्याती बहुरि सूर्यके आडा बादल आज्यावे तब कोई बादल-
हीकूं सूर्यसमजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्याती देवमूर्तिके-
आडोपट अर सूर्यके आडा बादल येह दोय दृष्टांतके द्वारा
एा बहुरि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुके प-
टवत् येक कर्महै ज्ञानरहितहै सो आडो आज्यावे तोबी सम्यक्ज्ञानस्व
भावमयि वस्तुहै सोकी सोईहै सोहै बहुरि जड अज्ञानमयि पटवत् क
र्महै जिससे रहितहोय सोबी घोस्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान
मयि स्वभाव वस्तू जैसाकी तैसी स्वभावमेंहै अर्थात् जैसे सूर्यके
मावास्याकी मध्यरात्रीके परस्पर अत्यंत भेदहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावके अरज्ञानावर्णि कर्मके परस्पर
तभेदहै क्यूंके कर्म अज्ञानहै वो ज्ञानहै कर्म अचेतन वो चेतन कर्म अ-

जीवहै वो जीवहै ज्ञानहैसो कर्मकूं जाणताहै कर्महैसो ज्ञानकूं नहींजा
ज्ञान

तभेदहे क्यूंके कर्म अज्ञानहै वो   कर्म अचेतन वो चेतन कर्मश्र-

जीवहै वो जीवहै ज्ञानहैसो कर्मकूं जाणताहै कर्महैसो ज्ञानकूं
णताहै ज्ञान अरु कर्म येह वस्तू दोयहै अर दोहू का लक्षलक्षण येकन
हीं जैसे सूर्य प्रकास येकहै तैसे ज्ञान अज्ञान नएकहै नहोवेगा नयेकहु
येथे ज्ञान अज्ञानका मेलहै तो ऐसाहै के जैसा फूल सुगंधका तिलतेल
का दुग्ध घृतकासा मेलहै बहुरि ज्ञान अज्ञान का अंतर भेदहै तो ऐसा
है के जैसा सूर्यका अर अंधकारका अंतर भेदहै तैसा येह अनादीवा
र्ताहै गुरुविना इसका सारको लाभ नही होवे जैसे सूर्यमे प्रकाशगुण
सूर्य स्वभावहीसैहै तैसै जिस बस्तुमे केवल ज्ञानादि ज्ञानसे तन्मयिगु
णहै सो केवल ज्ञानहै अर्थात् जिसमे केवलज्ञानादि गुण नाही सो अ
ज्ञान वस्तुहै अब जिसमे ज्ञानगुणहै असो केवल ज्ञानहैसो पर अपे-
क्षा अष्टप्रकारहै जैसे सूर्य प्रकास एक तन्मयिहै तैसे केवल ज्ञान बस्तु
अपणा गुणस्वभाव लक्षणकूं त्याग करिके जड अज्ञानमयि बस्तुसे न

येक कबि कदाचित् तन्मयि हुये नै होवैगा न होताहै अब हे सज्जन अष्ट
प्रकार ज्ञानाबर्णि कर्मको विचारकरै ज्ञानके अर कर्मके तन्मयिताहै के ना
ही उसका बिचार करि ॥ ॥ अथ दोहा ॥ ॥ प्रकास सूरज एक है जड
चेतन नहि एक ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै मनमैं धार बिबेक ॥ १ ॥ ॥ इति
श्री ज्ञानावर्णिकर्मचित्रयंत्रसहितसमाप्तः ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥




दर्शनार्थींचित्र

चक्षु ॥ अथदर्शनावर्णिकर्मप्रारंभः॥ ॥सोरठा॥ ॥ज्ञानभा

अचक्षु द॰ नुंजिनराज सर्वजगनकेऊपरें॥ धर्मदासकहेसार

केवल न॰ खकोकाजहे॥१॥ ॥अथबचनिका॥ ॥

करिके देखणेकी सक्ति तो एक पुरुषमें है परंतु द्वारपाल-
भीतर नहींजाणे देताहे तैसेंही जेसे सूर्यमें प्रकासहे तैसें
ऐंजाणऐंका गुणस्वभावसेंहीहे परंतु दर्शणावर्णिजातिको द्वारपा
लवत् येक कर्महे सो देखणे नही देताहे इहां असा अनुभव लेणा के
द्वारपाल उनकूं देखणेके अर्थ नहींजाणे देताहे अर कहताहे के गड
के भीतर क्या देखणेकूं जाताहे उत्तर जिसमे देखणे जाणवे का-
गुणहे उसीकूं देखणेकूं भीतर जाताहूं द्वारपाल रोकताहे कहताहेके
मतिजावो जेसा तेरेमे देखणे जाणनेका गुणहे तैसाही

येकूं देखणेका उद्योग इच्छा कर्नाहे सो वृथाहे जैसे एक अग्नि

येकूं देखणेका उद्योग इच्छा कर्नाहै सो जैसे एक अग्नि

खमे दबीहै अर दूसरी अग्नि व्यक्तहै तैसैही तेरे अर तूं जिसकूं
देखणेकूं जाताहै उसके अंतर समजणा शाखकी अपेक्षावत् भेद सम-
जणा स्वस्वरूपमे अभेद जैसो भीतर गढमैहै तैसोही तूंहै ॥ ॥प्रश्न॥
जैसेजैसो भीतर गढमैहै तैसोही मै केसोहूं ॥ ॥अब द्वारपाल
राउत्तर देताहै॥ ॥ स्रुणि तूं इस द्वार भवनमे तूं तेरा स्वमुखसे ऊंचा स्वर-
सें अलापकरिके तूंही तब द्वारपालके कहे प्रमाण ऐसैही ऊंचा स्वरसे
धाज करिके तूंही तब प्रतिध्वधाज वसीही आई तब वो निश्चय समज-
हीके जिसमे देखणेका गुण भीतरमैहै तैसाही देखणेका गुण मेरेमैहै
बमे किसकूं देखणेके अर्थ भीतर गढमे जाऊं अर्थात् मेरेमे देखणे जा-
णनेका गुण स्वभावहीसैहै अबमे किसकूं देखूं अर किसकूं नदेखूं ॥
दोहा॥ ॥दर्शणाबर्णी कर्मको प्रगट दिखायो भेद॥ तोबी गुरुबिन ना-
मिलै बहुत करो तुम खेद॥१॥ ॥अथ वचनिका॥ ॥जैसै सूर्यमे प्रका

सगुणहै तैसै जिस वस्तुमै देखणेका गुणहै सोही वस्तु दर्शणहै उसदर्शो
णकापरअपेक्षा ४ भेदहै सोबी सम्यक् दर्शणतो स्वभावकूं उलंघक
रिके चक्षो चक्ष होता नाहीं जैसै जन्मांध स्वपरशरीरकूं नहीं देखतहै
नहीं जाणतहै तैसैही अज्ञान वस्तुहै सोस्वपरकूं नहीं जाणतहै नहीं देख-
तहै वङुरिजैसै सडकके रस्ताके येकतरफ येकद्वारको मकान स्थानहै ता
केभीतर येकस्थान अर्थात् मकानके भीतर मकान तहां अंधारामे येकपु
रुष बैठहु वो उस मकानके द्वारा होकारिके बाहिर रस्तामे आतेहै जातेहै ता-
कूंबी जाणतहै अर स्वआपकूं बोजाणतहै तैसैही दर्शणहै सो स्वपरकूं
देखतहै जैसे सूर्जसे प्रकास भिन्न नहीं तैसै दर्शणसे देखणा जाणना क-
दापी भिन्न नहीं १ सर्वकूं देखताहै सो दर्शनहै १ इतिदर्शनावर्णि
कर्मसमासः ॥ ॥श्री॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥


वेदनीकर्मचित्र

॥ अथ बेदनी कर्म प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बिषय सुरव सो दुःरव है
स्वयनय प्रमाण ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै समज देरव मतिमान ॥ १ ॥ ॥
अथ बचनिका ॥ सहत लपेटी षड्ग धाराकूं पुरुष जिव्हासै चाटत है सो
कुछतो स्वाद मिष्ट भाष होत है विशेष जिव्हा रवंडन दुःरव भाष होना है
सेही बेदनी कर्म दो प्रकार साता असाता है इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयी स्वभाव वस्तु को अनुभव ऐसे लेणा जैसे
वा आकाशमै कोहू सुरवी कोहू दुःरवी है ताका सुरव वा दुःरव आकाशसै श
सूर्य अर सूर्यका प्रकाशसै येक तन्मयि होकरिके लागते नाहीं तेसैही संसा
रका सुरव दुःरव साता असाता कर्म उस स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानसूर्यकूं पोंहो चनानाहीं ज्ञानमयि सूर्यकूं लागन नाहीं
क ज्ञानमयि सूर्यके अर येह साता असाता बेदनी कर्मके परस्पर सूर्य अं
धकार कासा अनर भेद परस्पर हीके स्वभाव हीसै भेद है दोहू हीके सूर्यप्र
काशवत् येक तन्मयि ताहै न होवैगी न हुई थी स्यात् जैसे दर्पणमै ज॰

क ज्ञानमयि सूर्यके अर येह साता असाता
धकार कासा अंतर भेद परस्पर ही के स्वभाव ही से भेद है दोहूही के सूर्यम

काशवत् येकन तन्मयि ताहै नहोवेगी नहुईथी स्यात् जैसे दर्पणमे ज-
लाग्निकी प्रतिच्छाया भाषहोतीहै तैसैही स्यात् केवल ज्ञानमयी दर्पण-
मै येह साता असाता बेदनी कर्मकी भाव वासना भाष होताहै तोभी सा-
ता असाता वेदनी कर्मसे वो केवल ज्ञानमयि दर्पण तन्मयि नहुवा नहोवे
गो नहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावको अभावनस
मजणा नमानणा नकहणा ॥ ॥सवैय्या ३१ सा ॥ ॥जैसे कोहू चंडा
लीजुगल पुत्र जणे येक दीयो ब्राह्मणकूं येक राखलियो है ब्राह्मणके गयो
सोतो मदिरा मांसत्यागकीया ॥ ॥ बचनिका॥ ॥ ताकौ तो उत्तम ब्रा
ह्मणपणा को अभिमान आयो बहुरि दूसरो चांडालनीके घरहीमे रह्यो
ताकूं मदिरा मांसादिक के ग्रहण निमित्त सै हीणतापणासे वो आपकूं नीच-
मानतो हुवो इहां बिचार करिकै देखियेतो वह दोहूही उत्तम अर हीण येक
चांडालनीके पेटमैसै उत्पन्न हुये तैसैही येक कर्म रथतमैसे साता असाताव

दनी कर्मका दोयपुत्र समजणा निश्चय द्रष्टी मैंदे रवो सुनार सुवर्णका-
आभूषण करै तोवी सुनारहै सो सुनारहीहै बहुरि स्यात् वोहीसुनार ता-
म्र लोहका आभूषण वनावै तोवी जैसाको तैसो सुनार है सो सुनारहीहै
बहुरिजैसैं सुनार शुभाशुभ आभूषणादिक कर्म कर्ताहै सोशुभाशुभआ-
भूषणादिक कर्मसै तन्मयि हो करिकै नही कर्ता है तैसैंही सम्यक् द्रष्टी शु-
भाशुभ कर्म कर्ताहै परन्तु शुभाशुभकर्मसै तन्मयि होय करिकै नही कर्ता
है वास्ते गुरुपदेशात् सम्यक्द्रष्टी होणा जोग्यहै॥ दोहा ॥एक बेदनीक-
र्मका भेद दोय परकार॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै सातासात विचार॥१॥ ॥
बचनिका॥ ॥हेजीव येह साता असाता बेदनी कर्म तेराहै तब तो तूंही-
अधिष्टाताहै तथा येह साता असाता बेदनी कर्म तेरा नाहीं तो फेर क्यापि-
करहै तूं नकिसीका कोई न तुमारा तेरा तूंहीहै निराधारा॥ ॥इतिश्रीबेद-
नीकर्म चित्रसहित समाप्ताः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

करहै तूंनकिसीका कोईनतुमारा तेरा तूंहीहै निराधारा ॥ ॥

नीकर्मचित्रसहित समाप्ताः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥



॥अथमोहनीकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥परस्वभावपररूपकूं
अपनोआप।।येविकल्पसबछोडके नयेसिद्धगुणथाप॥१॥ ॥अ
थवचनिका॥ ॥जैसैमदिराकेपीएवालो आपपरकूं जाणनो नाही-
मदिराबसात यद्वा तद्वा वचन वोलताहै तैसेही मोहनीकर्मबसात् जीव
आपणाआपमे आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि-
स्वभावकूं नजाणतहै अरपरकूं ऐसा मानैहै येह तन मन धन वचनादि
कहै सोही मैहूं अर्थात् येही मोहहै रूणो निश्चय मोहका वचन कूंक
ताहूं येह तनमन धन वचनादिकहै सोहीमैहूं येकतो येह विकल्प बहु-
दूसरी येह विकल्पहै के येह तन मन धन वचनादिक हैसो मैनाहीं अ
र्थात् येहैसोही मैहूं येहैसो मैनाहीं येह दोहू ही विकल्पहै सोही निश्च
मोहहै इस दोहू विकल्पकूं अर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक ज्ञान
य स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि अग्नी उष्णताबत् सूर्यप्रकाशवत् मा-

नताहै जाणताहै कहताहै सो मोही मिथ्याद्रष्टीहै इससे भिन्नजो

मोहहै इस दोहू विकल्पकू अर
स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि अग्नी उष्णताबत् सूर्य प्रकाशवत् मा-

ननाहै जाणताहै कहनाहै सो मोही मिथ्यादृष्टीहै इससै
दृष्टी मै तूं येह वह येह ४ च्यार अर इन च्यारका
वे द्रव्यकर्म भाव कर्मनो कर्मसे तन्मयि येकमयि समजणा हाय हाय
हनी कर्मबसात् जिसकूं भला मानताहै उसीहीकूं बुरा मानताहै जिस-
कूं इष्ट मानताहै उसीकूं अनिष्ट मानताहै मोहीजीवकूं येह निश्चय
के जिसमै ज्ञानगुणहै सोही मैहूं यदि निश्चयहै तो फकत कहणेकाहै
स्वस्वरूप स्वानुभव नाहीं क्यूंके तनमनधन बचन आदिक अजीव वस्तु
के अर ज्ञानगुणमई जीवके सूर्य अंधकार कासा अंतर भेद परस्पर
पहीसैहै येह भेदविज्ञान जिसके अंतः करणमै गुरुपदेशात्
अचल निष्टैहै सो अद्दिलकहै विचक्षण पुरुष सदा मै एकहूं अपणे रस-
मै भर्यो आपणी टेकहूं मोह करम ममनाहीं नाही भ्रम कूपहै शुद्ध
सिंधु हमारो रूपहै वचनिका जैसेसूर्यमै प्रकाशगुणहै तैसे हे सज्जन

प्रेमी तेरेमें ज्ञानगुणहै तूं निश्चय समज तूं ज्ञानहै अरयेह मोहादिक अज्ञानहै भावार्थ ज्ञान अज्ञानकूं सूर्य प्रकाशवत एकही मानताहै समजताहै कहताहै उस मिथ्या दृष्टीकूं ब्रह्मज्ञानको उपदेस देणा वृथाहै॥ प्रश्न॥ ॥ मोह किसकूं कहतेहै॥ ॥उत्तर॥ ॥ नदीके तट येक पुरुष बहताहुवा पाणीकूं येकाग्रह मन करिके देखत देखत येह समजीके हमभी वहे जातहै इसीको नाम मोहहै तथा दश पुरुष परस्पर गणिना करिके नदीके पार उतरणेकी इच्छा करी येक पुरुष गणि नाकरिके अपणा घरसे दश आयेथे नवही रहगये आपकूं दशमूं नसमजताहै नमानताहै नकहताहै इसीको नाम मोहहै अर्थात् पुद्गलादिककूं आप सम्यक्ज्ञान मायिहै ताकूं येकही समजताहै सोही मोहहै॥ मोहनीकर्म चित्रसहित समाप्तः॥ ॥७॥

॥७॥


आयुकर्म

आयुकर्म यन्त्रम्	
मनुष्य·	आयु·
देवा	आयु
तिर्यंच	आयु
नारकी	आयु·

॥ अथ आयुकर्म प्रारंभः ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ खंडन मंडन·
आयुनाश भयेसिद्ध परमातम पाश ॥ अचलायू समअ·
चल अभेद लीन भये निजरूप अखेद ॥ १ ॥ ॥ वचनिका
जैसे कोई तस्कर बेडी खोडासे बंध्योहै तैसेही जीव
युकर्म वसात् मनुष्यायू देवायु नर्कायु तिर्यंचायूमे जहां तहां बंध
है आयू पूर्ण हुयेबिना एकायूकूं छोडकरिके दूसरी आयूमे नहीं
य अब अचलायूके अर्थ स्वस्वरूप स्वानुभव सम्यक्
व वस्तूको स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे घटके भीतर घटाकाश बंध्योहै
केभीतर मठाकाश बंध्योहै इत्यादि तैसेही देहरूपी घटमे आकाशव·
त् एक ज्ञान गुणमायि जीव बंध्योहै विचारकरो जैसे घटकेभीतर
शहै सोमहाकाशसे अलग नाहीं तैसेही देही रूपी घटके भीतर ज्ञानहै
सो केवल ज्ञानसे भिन्न नाही है ज्ञान तूं तेरेकूं केवल

सो केवल ज्ञानसे भिन्ननाही हे ज्ञान तूं तेरेकूं केवल

मजो मतिमानै क्यूंके केवलज्ञानसै भिन्न वस्तूहै सोतो अज्ञान वस्तूहै हे
सज्जन तूं ज्ञान वस्तु मूलहीसे स्वभावहीसै है फेर तेरेकूं तूं अज्ञान केसे
मानताहै हेज्ञान व्यवहार नयात् तु मनुष्यायु देवायु नरकायु तिर्यंचा
युमे बंध्योहै निश्चय नयात् हे केवल ज्ञान स्वरूपी रूपाणि पुद्गल मूर्ति आ
कार वस्तुहै तूं केवल ज्ञानमयि निराकार अमूर्ति वस्तु स्वभावहीसै है
बडे आश्चर्यकी वार्ताहै मूर्ति आकार वस्तुहै सो अमूर्ति निराकार वस्तु
ज्ञानमयि कूं कैसे बंधमे डालनहै असंभवति वार्ता कैसे संभवे हेज्ञान-
भरममे मतिडूबे देखणेजाणवेकागुण तेरेसै तन्मयिहै तूं बंधकूं अर
बध्याकूं अरबंधणेकाद्रव्य क्षेत्र कालभाव आदिककूं सहजही जाणन
देखतहै जैसे सूर्यका प्रकाश सर्व पृथ्वीके ऊपर सहजहीसे है तैसे हेज्ञा
न तूं बंध्या बंधकुं सहजही जाणतहै व्यवहार नय वसात् तूं बंध्योहै सो
व्यवहार ऐसाहै वो घृतकुंभ वाऊरवलीसडक चलतीहै रस्ता लूटतेहै अ

नी बलतीहै येह पांच दृष्टांत द्वारा सर्व व्यवहार कूं समजो निश्चय व्यवहा
रसे सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही परमात्मा सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानघनहै जैसे
देखो सूर्य के भीतर अंधकार नाहीं तैसैही सम्यक ज्ञान स्वभावमे शुभा
शुभ आयु नाही मनुष्यायू देवायू तिर्यंचायू नर्कायू येह ४ च्यार आयु
है ताकूं केवल ज्ञान जाणताहै अचल अखंडायू पंचमायूहै कुछ और
समजो जैसे किसीके पांवमें लोहाकी बेडीसें बंध्योहे सोबी दुःखीहै
बहुरि किसीके पांवमे सुवर्णकी बेडीसे बंध्योहे सोबी दुःखी तैसेही दा
न पूजा ब्रत शीलजप तपादिक शुभभाव शुभक्रिया शुभकर्मादि शुभबं
धहे सोबी सुवर्णकी बेडीवत् दुःखको कारणहै बहुरि पाप अपराध काम कु
शीलादिक अशुभ भाव अशुभक्रिया अशुभकर्मादि अशुभबंधहे सोबीलो
हाकी बेडीवत् दुःखको कारणहै इस शुभाशुभसे सर्वथा प्रकार भिन्न हो
णो निश्चयहीहै सो सत्गुरुका उपदेशविना मामकी प्राप्ति होतीनाहीहै

णो निश्चयहीहै सो मनगुरुका उपदेशविना मामकी प्राप्ति होतीनाहं

॥ ॥प्रश्न॥ ॥मोक्षकीअप्राप्तिसंभवहै॥ ॥उत्तर॥ ॥दधि-
मैसै घृत निकसे पश्चात् दधिमे नही मिलताहै ऐसाहीसमजणा॥१॥
॥ ॥इतिश्रीआयुकर्म विवर्णचित्रसहितसमाप्तः॥ श्रीजिनाय०॥
॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥





॥ अथनामकर्म विवर्णप्रारंभः ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ तुमरोनामन

॥ अथनामकर्म विवर्णप्रारंभः ॥ ॥चौपाई॥ ॥तुमरोनामनहीहैस्वा-
मी ॥ नामकरमतुमसैअलगामी ॥ शब्दव्यवहारमैनामअनंता ॥ व्यक्त-
रूपश्रीजिनअरिहंता ॥१॥ ॥दोहा॥ ॥जिनपदनहींसरीरको जिन-
पदचेतनमांहि ॥ जिनवर्णनकुछओरहै येहुजिनवर्णननाहि ॥२॥ ॥अथ
वचनिकाप्रारंभ ॥ ॥जैसे चित्रकार नानाप्रकारका आकारका नाम लिख
नाहै करनाहै सोजेता काला पीला लाल हर्या धोला रंगका चित्र आकारदी-
खनाहै सो पुद्गलकाहै सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूको नामक्या इसी व-
स्तूकोनाम व्यवहार नयात् जीवनामहै सो भी परसंगात् अनेकनामहै जैसे
माटीका घटकूं घृतसंगात् व्यवहारी जन कहतेहै सो घृतकुंभल्यावो अथवास-
मुदायवस्तुको नाम फोजहै तथा जेता कुछ वचनसे कहणेमे आवैहै सो सर्व
नामहै नाम देसमै एकही नामहै बहुरि इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य-
क्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे सूर्यमे प्रकाशादिक

गुण सूर्यस्वभावहीसैहै तैसै कोई वस्तु ऐसीहै जिसमै स्वपरकूं देखणा
जाणना येहगुण स्वभावहीसैहै विचार करो सर्वनाम अनामकूं देखना·
जाणताहै ताकोनाम क्याहै अथवा सर्वनाम अनामकूं कहताहै ताकोना
म क्याहै वचन और मौन येहबी दोयनामहै अथवा एकही वस्तु अपणा
स्वभाव गुणमयि स्वस्वभावमैजै सैहै तैसी अचल निष्ठैहै उसीसे तन्मयि
गुनवा प्रगट अनेक नाम तिष्टैतै जैसै स्वर्ण अपणा स्वभाव गुणादिक अ
पणे आपमै लीयेहुये अचल तिष्टैहै ताही मै कडा मुंदडा असरफी आदि
आभूषणादिक अनेक नाम सुवर्णमै तन्मयिहै नामहैसो बी अपेक्षा सेहै
जैसै पिताकी अपेक्षा पुत्रनामहै तैसैही पुत्रअपेक्षा पितानामहै तथा
तैसैही जीवकी अपेक्षा अजीव नामहै बहुरि अजीवकी अपेक्षा जीव नाम
है ऐसैही ज्ञानकी अपेक्षा अज्ञानहै बहुरि अज्ञानकी अपेक्षा ज्ञान नामहै
हाहाहा धन्यधन्यधन्य सर्वपक्षापक्षरहित ज्ञानगुणसंपन्न स्वस्वरूपस्वा

हाहाहा धन्यधन्यधन्य सर्वपक्षापक्षरहित ज्ञानगुणसंपन्न स्वस्वरूप
है ऐसेही ज्ञानकी

नुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वभाव हीसै जैसाकी तैसी जे-
सीहै तैसीहै ताकूं अंतर दृष्टी वा सम्यक्ज्ञान दृष्टीसै देखिये तो ननामहै न
अनामहै अर्थात् वस्तु अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य ज्ञानस्वभावमें जे-
सीहै तैसीहै नाम कहो अथवा मति कहो नाम और जन्म मरण येह पांच
प्रकारका शरीरहै ताकाहै पद्मनंदी पच्चीसी ग्रंथमें पद्मनंदि मुनी कहग
ये॥ ॥दोहा॥ ॥नामकर्मकी भावना भावे करति संभाल॥
क्षुल्लक कहै मुक्तिहोय ततकाल॥१॥ अपणो आपो देखके
प॥होयनिचिंत तिष्ठ्योरहै किसकाकरणाजाप॥२॥ नामकर्म कर्तारको
नामनहीं करणसार॥जोकदापि थो नामहै ताको कर्ता निर्धार॥३॥ ॥
इतिश्रीनामकर्मबिवर्णचित्रसहित समाप्ता॥ ॥७॥ ॥७॥





॥अथगोत्रकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥गोत्रा

॥अथगोत्रकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥गोत्रादिकसबकर्मकूं त्याग
भयेजिनराज॥धर्मदासक्षुल्लककरै वंदनसुखकेकाज॥१॥ ॥वचनि
का॥ ॥जैसाकुंभार छोटामोटा माटीकाबर्तन कर्ताहै तैसै स्वस्वरू
पज्ञानरहित कोईजीवहै सोनीचगोत्रऊंचगोत्र कर्मको कर्ताहै याहीतै
नीचगोत्रऊंचगोत्रहै इहां समजणा चाहिये माता पक्षकूं तोजाति कह
तहै बहुरि पिता पक्षकूं कुल कहतेहै जातिगोत्र येह दोयभेद कहणे मा
त्रहै अभेद वस्तुमै येह दोयभेद जल तरंगवत् तन्मयिहै जैसै आम्रवृ-
क्षके आम्रही लगलाहै बिचारकरो आम्रकीजातिबी आम्रहीहै अरआ
म्रकाकुलहैसो बी आम्रहीहै जैसैजलकीजाति मिश्री फिटकडी लूण नोसा
दर आदिहै क्यूंके इनकूं पाणीमै मिलावोतो येह मिलजातेहै अर्थात् मि
लज्यावेसो निश्चयजाति तैसैही नीचगोत्र ऊंच गोत्रकोही नीचऊंचगोत्र
है इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव

ऐसै लेणो जैसै कुंभार माटीका बर्तन छोटा मोटा विबधि प्रकारका बणावै
माटी चक्र दंड छोटा मोटा विवधि प्रकारका बर्तन भांडासे
नन्मायि होय नही कर्नाहै क्यूंके कुंभकार बिचार चिंतवन नही करे तो बी
कुंभकारके अंतः करणमे अचलनिश्चय येह है के मै माटी नहीं अर माटी
का छोटामोटा बर्तनादिक कर्म है सो बी मै नाहीं अर दंड चक्रादिक कर्म
है सोबी मै नाहीं अर येह मेरा सरीर हाड मांस चर्मादिक मयिहै सोबी मै
नाहीं अर तन मन धन बचनादिक है सो भी मै नाहीं इत्यादिक कुंभकारके
अंतःकरणमे अचलहै तोइहां निश्चय स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक
न स्वभावमै येही भाष भाव मालुम होनाहै के जैसै माटीको कार्य घट जै
सै माटी ताके बाहिर मांहि जल फेन तरंग बुद बुदा ऊपजताहै सो जलसे
ऐसै जो जाकोहै कार्य कारणरूप छानो नाहि तैसैही जिस वस्त
कर्म कारण कार्य कर्ता जिसका जोहिहै अर्थात् जैसै व्यवहार दृष्टीमै

देखिये तो माटीका बर्तन कुंभकार कर्ताहै — निश्चय दृष्टीमै परमा

ऐसे ओ जाकोहै
कर्म करण कार्य कर्ता जिसका जोहिहै अर्थात् जैसे व्यवहार दृष्टीमे-

देखिये तो माटीका बर्तन कुंभकार कर्ताहै बहुरि निश्चय दृष्टीमै परमा
र्थ सत्यार्थ दृष्टीमै देखिये तो कुंभकारके अर माटीके बर्तन अर माटी च-
क्र दंडादिक के एकमई पणो नाहीं वास्ते माटीका बर्तन कर्मको करणेवा
ली माटीहीहै तैसेही व्यवहार द्वारा नीचगोत्र ऊंचगोत्र जीव करैहै निश्च-
य स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान दृष्टी द्वारा देखिये तो ज्ञानमयि जीव नीच-
गोत्र ऊंचगोत्र नकरैहै अर्थात् गोत्रकर्म कोकरणेवालो गोत्र कर्महि कर्म
की विधि निषेध कर्मको कर्महि कर्ताहै निश्चय सम्यक् ज्ञान दृष्टीमे देख-
णा ज्ञानगुणमई वस्तु अमूर्तिहै अर कर्म मूर्तिहै कृत्यमहै जैसे सूर्यका
अर अंधेराका तत्स्वरूप मेल नाहीं तैसेही कर्मको अर केवल
मेल नाहीं ॥ ॥ इति श्रीगोत्रकर्म बर्णन चित्र सहित समाप्ता ॥ ॥



॥ अथ अंतरायकर्मप्रारंभः ॥ ॥ ॥ ॥

अथअंतरायकर्मयंत्रम्	
दान	अंतराय·
लाभ·	अंतराय·
भोग	अंतराय·
उपभोग·	अंतराय·
वीर्य·	अंतराय·

॥ अथअंतरायकर्मप्रारंभः॥ ॥ दोहा॥ ॥त्यागग्रहणसैभिन्नहै सदासुखी भगवान् ॥ धर्मदासक्षुल्लककहै स्वानूभवपरमान॥ १॥ ॥बचनिका॥ ॥जैसे राजा भंडारीकूं कहीके इसकूं एक सहस्र १००० रुपीयादे परंतु भंडारीनही देताहै तैसेही भीतर अंतह करणमै मनरायनो हुकम करताहै के सर्व माया ममता छोड देउ परंतु भंडारीवत् अंतरायकर्म नहीं छोडणे देताहै इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावको स्वानुभव इसप्रमाणसे लेणा मैकेह्यारा जैसे सूर्यसैं अंधारा अलगहै तैसै मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवसम्यक्ज्ञान मयी स्वभावसैं येह तनमनधन बचन आदिक पापपुन्य जगत संसार अलगहै तबतो इनकूं मै क्या त्यागूं अर क्याग्रहण करूं यदि जैसे सूर्यसे प्रकाश अलग नाहीं तदवत् मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य

क्ज्ञानमयि स्वभावसैं येह तन मन धन बचनादिक पाप पुन्य जगत
र अलग नाहीं तोबी क्या त्यागूं क्या ग्रहण करूं अथवा जैसे सूर्य सूर्य
कूं कैसे ग्रहण करे तथा सूर्य अंधकारकूं कैसा ग्रहण करे अर सूर्य अं
धकारकूं कैसे त्यागे तैसेही मै मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावकूं कैसे त्यागूं
अर ग्रहण कैसे करूं बहुरि मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावसे सर्वथा
र भिन्नहे बर्जितहे त्याजहीहे उसकूं कैसे त्यागूं अर उसकूं ग्रहणबी कै-
से करूं राजा भंडारीकूं कहताहे के इसकूं १००० सहस्त्र रुपिया दे परंतु
येह नही कहता के मै राजाहूं मेरेहीकूं उठाकरिके इनकूं दे दे अर्थात् रा-
जा परवस्तूकूं देणेका हुकुम कर्ताहे परंतु अपणा स्वभावलक्षण देणे-
का हुकुम नही कर्ताहे तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
स्वभाव बस्तु अपणा वस्तुत्वकूं नै किसकूं देताहे
स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी वस्तुत्व स्वभावकूं लेताहे भावार्थ स्वस्व-

रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान मयि स्वभावमे

स्वभाव वस्तु अपणा
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयी वस्तुत्व स्वभावकूं लेताहै भावार्थ स्वस्व-

रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावमै पुद्गलादिक जड अज्ञानम
यि वस्तुका व्यवहार लेणा देणा नसंभवै जैसे सूर्यमे प्रकाशगुण सूर्यस्व
भावहीसेहै तैसै जिस वस्तूमै देखणे जाणनेकागुण स्वभावहीसेहै
सो वस्तू द्रव्य कर्म भाव कर्मनो कर्मकूं केवल जाणैहीहै द्रव्य कर्म भाव क
र्मनोकर्मकूं कर्त्तानाहीं क्यूंके ज्ञानाज्ञानके परस्पर तम प्रकाशवत् तो अं
तर भेदहै बहुरि ज्ञानाज्ञान के परस्पर जल कमल वत् मेलहै बिचार करो ये
ह द्रव्य कर्म भाव कर्मनो कर्महै सो स्वभावहीसै अज्ञानवस्तु का भेदहै
कर्त्ता केवल ज्ञान स्वभाव मै कोणहै बहुरि येह ज्ञाना वर्णी आदि अष्टकर्म-
है ते सर्वही पुद्गल द्रव्य के परिणामहै तिनकूं केवल ज्ञानमयि आत्मा ना-
ही करै है जो जानहै सो जानहीहै निश्चय करि ज्ञानावर्णीरूप परिणामहै सो
जैसे गोरसमै व्यापक दही दुग्ध मिष्ट खाटा परिणामहै तैसे पुद्गल द्रव्यमे
व्यापणा करिके होतेसंते पुद्गल द्रव्यही के परिणामहै तिनकूं जैसे गोरसके नि

कट बैठा पुरुष तिस्के परिणामकूं देखैहै जानहै तैसेही आत्मा ज्ञान मयि-
है सो तीनि पुद्गलके परिणामनिका ज्ञाता द्रष्टाहै अष्टकर्मादिक का कर्त्ता
नाही तो क्याहै जैसै गोरसके निकट बैठा पुरुष तिस्कूं देखैहै तिस देखन-
रूप अपने परिणामनें व्याप्तपणौरूप होता संताहै तिसकूं व्याप्य करिदे
खैहीहै तैसैही पुद्गल परिणामहै निमित्त जाकूं ऐसा अपना ज्ञान ताकूं आ
पनै व्याप्यपणा करि होता ताकूं व्याप्य करि जानैही है ऐसै ज्ञानी ज्ञानही का
कर्त्ताहै अर्थात् ज्ञानीहै सो अज्ञान मयि वस्तुसे तन्मयि होय करिके कदाचित्
कोई प्रकार बी द्रव्यकर्म भाव कर्म नोकर्म आदि अज्ञानमयि कर्मको कर्त्ता ना-
हीं किंबहुना बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नै एक हुवो नै है
नै होवेगा ॥ ॥ इति अंतराय कर्म बिवर्ण समाप्तम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ भ्रांति खंडन दृष्टांत द्वादशमस्थल

॥ अथ भ्रांतिखंडन दृष्टांत द्वादशमस्थल प्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥स्वस्व
रूप सम भावमे नही भरमको अंस॥ धर्मदास सुलककहे सुणचेतननि
रवंस॥१॥ ॥बचनिका॥ ॥ दृष्टांत दृढताके अर्थहै स्वभावसम्यक्
ज्ञानदृष्टी रहितजीवहै सोतो आपकूं अरभरम भ्रांति संकल्प विकल्प
कूं येकही तन्मयिवत् समजताहे माननाहै कहताहे बहुरि कोईजीव
गुरूपदेस पायकरिके स्वभावसम्यक् ज्ञानदृष्टी हुये पश्चात् बि भ्रांति भर
ममें दुःखी होयकरिके येह समजतहे मानतहे कहताहे के तन मन धन
बचनसें बहुरि तनमन धन बचनका जेता शुभाशुभ वा व्यवहार क्रिया
कर्महे तासें अतन् स्वरूप भिन्न कोई परब्रह्म परमात्मा ज्ञानमयि सदा
काल जागती ज्योति नही है ताका समाधानके अर्थ दृष्टांत जैसें कोहू गुरु
शिष्य कूं कहीके हेशिष्य येह येक ल्वणको पिंड इस जल का भरया तसला
मै भगूनामे डालदे तब शिष्य गुरु आज्ञानुसार उस ल्वण पिंडकूं त्तिस ज-

लपूरित तसलाभ गूनामै डाल दीयो येक तरफ येकांतमै रख दीयो प
श्चात् दूजा दिवस फिर गुरू शिष्यकूं कहीके हे शिष्य गये दिवस तूं जलपू
रित तसलाभ गूनामै ल्वण पिंड डालाथा सो लावो तब गुरू आज्ञा प्रमा
ण शिष्य सीघ्रता पूर्वक जाय करिके तिस जलपूरित तसलाभ गूनामै
हस्त स्पर्श द्वारा खोजणे देखणे लगो बहुत बेर पर्यंत तसलाभ गूनामै ति
जलकूं मथन कीयो तथापि ल्वणानुभव भाष नही हुवो अर्थात् ९
दीख्यो तब शिष्य कहीके हे गुरुजी जलमै ल्वण नाही गुरू कहीके
शिष्य कहताहै के नहीहै गुरु कहताहै के हे शिष्य तूं कहताहै के नही है
वहांहीहै फेर शिष्य कहताहै के नहीहै तब गुरू कहीके हे शिष्य तिस तस
लामै जलहै तामैसो तूं येक अंजुली प्रमाण जल पीवो तब शिष्य जलपी
वणे लागो कुछ किंचित् पीयो पीते प्रमाण शिष्यकूं ल्वणानुभव तत्सम
यही हूवो अर कहीके गुरुजी ल्वणहै तैसै ही तनमनधन बचनसै बहुरि त

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ

पणे लागो कुछ
यही हूवो अर कहीके गुरुजी त्वएगहै तैसैही तनमनधन बचनसै बहुरि त

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसै सर्व
था प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्मप
रमात्मा सदाकाल जागती जोति जहां निषेद है तहांहीहै स्वानुभवमा
त्रगम्यहै १ कोईजीव आपकूं ऐसै मानतहै जाएतहै कहतहै के मैं सिद्ध
परमेष्ठी परब्रह्म परमात्मा नहीहूं ताकी येकता तन्मयिताके अर्थ दृष्टांत द्वा
रा गुरु समाधान देताहै हेशिष्य इस भवनमे तूं उच्चास्वरसे आलाप ऐसै
करिके तूंही तब गुरु आग्या प्रमाण शिष्य उस भवनमे जाय करिके उच्चास्व
रसै कहीके तूंही तब तिस भवनाका समैसै प्रति अवाज ध्वनि ऐसीही आ
ईके तूंही तब शिष्यके अंतःकरणमे अचल निश्चय येह हुई के जिस सिद्धप
रमेष्ठी परमातमाकी कर्णद्वारा वार्ताश्रवण कर्तायी सोतो स्वानुभव मात्र
गम्य मैहीहूं १ सिद्ध परमेष्ठी परमात्माकूं आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसै भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताका समा

धानकेअर्थ गुरूकहताहै तुमारा तुमारेही समीपहै इहां तीन

रा स्वस्वरूपसम्यक्ज्ञानको अनुभव देताहूं श्रवण करो जेसे येकस्त्री

पकी नयनी नाकमैसे निकाल करिके आपहीके कंठाभरणमे पहरादः

ई पश्चात् घरकार्य धंदा करणेमै येकाग्र चित्तहुई दोचार घटिका पश्चा

त् वाऽस्त्री अपणा नाककों हात लगायो तब भ्रांति उस स्त्रीकों येह

के मेरी नयनी मेरेसमीप नही हाय मेरी नथ कहांगई

रा दुःखितहुई श्रीगुरुकेचरण सरण आई अर गुरूसे कहीके स्वामी मेरी

नथ मेरे समीप नाहीं नहीजाणुं कहागई तब गुरूकही तेरी तेरेही

पहै देख इसदर्पणमे तब वास्त्री दर्पणमै स्वमुख देखणे लगी तत्समय

ही स्वकंठाभरणमे लगीहुई नथ अपणी आपके

गुरूसै कहीकेहे स्वामी मेरी मेरेही समीप नथहै ऐसेही सिद्धपरमेष्टीसें

सिद्ध परमेष्टी भिन्न नाहीं प्रश्न मैंतो सिद्धपरमेष्टीसेभिन्नहु उत्तर

दृष्टां

जैसे

४

कहीके हे स्वामी परमेष्ठी भिन्न नाहीं   प्रश्न · मैतो सिद्ध परमेष्टीसे भिन्नहु   उत्तर

जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहे तद्वत तूं सिद्ध परमेष्टीसे भिन्नहे नवतो तूंको
तपजप व्रत शील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संते बी क-
दाचित् कोई प्रकारवी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहुवो नहोवैगो नहै बहु
जैसे सूर्यसे प्रकास येक तन्मयि अभिन्नहे तद्वत् तूं सिद्ध परमेष्टीसे ये
क तन्मयि अभिन्नहे तोबी तूं सिद्ध परमेष्टिसे येक तन्मयि अभिन्न होणे केअ
र्थ कोड जप तप व्रतशील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संतेबी
कदाचित कोई प्रकारवी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहोवैगो नहुवोयोन
है १ सिद्ध परमेष्टीसे येकताकी अर भिन्नताकी येह दोहुही भ्रांति विकल्प
स्वभाव सम्यक् ज्ञानमै कदापि नसंभवे १ जैसे कंठमे मोतीकी मालाहे
मोतीकी माल मोतीकि मालके समीप तन्मयिहीहै ताकूं भरम भ्रांतिसे
अन्यस्थानमे खोजताहे ताकूं गुरु कहीके अन्यस्थानमै मोतीकी मालना
हीं तेराही कंठमे मोतीकी मालहे सो मोतीकी मालसै तन्मयि समीपहे ऐ

सेही सिद्ध परमेष्टीहैं सो सिद्ध परमेष्टीसे तन्मयि समीपहै १ जैसे सूर्य
के देखणेसे सूर्यकी निश्चयता सूर्यानुभव होताहै तैसेही सिद्ध परमेष्टी
परमातमा सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकूं देखणेसे सिद्ध परमेष्टी पर
मातमा सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकी निश्चयता स्वानुभवताहोती
है १ जैसे सूवर्णका कडा मुंदडा कंठी दोरा असरफी आदि स्वर्णसे
निश्चय स्वभाव दृष्टीमे देखियेतो भिन्न नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टी परमातमासे निगोदसे लेकरिके-
मोक्ष पर्यंत जेती जीवराशि येकेंद्री आदि पंचेंद्री पर्यंतहै सो निश्चय स्व
भाव दृष्टिमे देखियेतो भिन्न नाही १ अपूर्वानुभव देताहूं श्रवण करो
कोईजीव आपकूं सिद्ध परमेष्टीसे भिन्न समजताहै अर आपहीकूं सि
द्ध परमेष्टीसे अभिन्न समजताहै ऐसी येह दोउ कल्पना जिस जीवके अं
तःकरणमे अचलहै सो जीव मिथ्यादृष्टीहै १ जैसे लोकीकमे येह कह-

णा प्रसिद्ध है के देखोजी

हूपरमेष्टीसै अभिन्न
तःकरणमै अचलहै सोजीव मिथ्यादृष्टीहै १ जैसे लोकीकमै येह कह-

एगा प्रसिद्ध है के देखोजी तुम समज करिके काम कार्य कर्म कर्ता तो तुमारे
येह नुकसाए किस वास्ते होते अर्थात् सत् गुरु का उपदेस बचन द्वारा को

आपका आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान
मयि स्वभावकूं समज करिके पूर्वप्रयोगात् शुभ अशुभ काम कार्य कर्म
कर्ताहै ताका सम्यक् ज्ञान स्वरूपी धनको कदापि नुकसाए होएणे को नाहीं
१ जैसै लौकीकमै येह कहएगा प्रसिद्ध है के देखोजी रस्ता मार्गमै कंटका

विघ्न बहुतहै बच करिके जाएगा तैसेही कोईजीव सत् गुरु उपदेशब
चन द्वारा आपका आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञा
नमयि स्वभावकूं तनमन धन बचनसे बहुरि तन मन धन बचन का जेना-
शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मसें बचाय करिके बच करिके फेर तीनसै तें-
तालीस राजू प्रमाण येह लोक नामै बच करिके भ्रमण करै तोबी स्वभा
व सम्यक् ज्ञान है सो संसारमै फसएणेको नाही १ जैसै चक्की का पाटकेऊ

पर बैठी मखीहै सो चक्की को पाट चोतरफ गोल फिरताहै ताकेऊपर बै
ठी मखीबी फिरतीहै तैसैही स्वभावसे अचल सम्यक ज्ञानमयि परमात
मा संसार चक्रके ऊपर फिरताहै तोबी अचल को अचलहीहै १ जैसे स
मुद्र स्वभावमे जैसाहै तैसाहै तोबी व्यवहार नयात् समुद्रके कीनारो ह-
द्द प्रमाणहै वास्तै समुद्र बंध्योहै बहुरि समुद्रकूं कोई बंध कर्‍यो नाही वा
स्तै सोही समुद्र मुक्तहै तैसैही स्वयंसिद्ध परमातमा व्यवहार नयात् बं
ध मुक्तहै स्वभाव सम्यक ज्ञानमै स्वानुभव दृष्टीमे देखियेतो बंधमुक्त-
तो दूरहीरहो परंतु बंध मुक्तकी कल्पनाको असबी नसंभवे १ जैसे सूर्य
के भीतर अंधकार नाही तैसे येह जगत् संसार स्वानुभव सम्यक ज्ञान-
मयि सूर्यके भीतर नाहीं १ जैसे सूर्यका अर अंधकारका येक तन्मयि
ता नाही तैसेही ज्ञान मयि परमातमाका अर जगत संसारका येक तन्म-
यिता नाही १ जैसे बकरी मंडलीमे जन्मसमय सैही भरमसे परवसान
सिंह रहताहै अरदूजो सिंह जंगलमे

तानाहीं तैसैही ज्ञानमयि परमात्तमाका अर
यितानाही १ जैसै बकरी मंडलीमे जन्मसमय सैही

सिंह रहताहै अरदूजो सिंह जंगलमै स्वाधीन रहताहै दोहूही सिंह की-
जाति लक्षण स्वरूप नामादिक येकहीहै परंतु परस्पर अभेदमै भेदनि-
श्चयहै तैसैही निगोदसैं लेकरिकै मोक्ष वा सम्यक् ज्ञान स्वभाव पर्यंत जी
वराशि नामजाति लक्षणादिक युक्त येकहीहै परंतु परस्पर अभेद
पमै भेदहै येह भेदबुद्धि
के चरणकी सरण होएसैं मिटैगा १ जैसै येक मोटाचोडा लंबा बहुता
स्तीर्ण परमाणका स्वच्छ दर्पणमे अनेक प्रकारकी अनेक चलाचल रंग-
बिरंगी बस्तू दीखैहै तैसैही स्वच्छ ज्ञानमयि दर्पणमै येह अनेक
त्र मयि जगत संसार दीखताहै १ जैसै सूर्यका प्रकासमे कोई
है कोई पुन्य कर्त्ताहै कोई मर्त्ताहै कोई जनमताहै इत्यादि
भ पाप पुन्य जन्म मरणादिक सूर्यकूं लागतानाही सूर्यसै येह जन्म
ण पाप पुन्य तन्मयि होतेनाही तैसैही सम्यक् ज्ञानमयि

प्रकासमे पाप पुन्य जन्म मरण कर्मादिक शुभाशुभ होते है ताका फल
अरु मूलादिक है सो सम्यक ज्ञान मयि स्वभाव सूर्यकूं पहोंचते नाही ला
गते नाही। तन्मायि होते नाही १ जैसे सूर्यके इच्छा सूर्यकूं देखणेकी नसं
भवै तैसे ही ज्ञान मायि परमातमा कूं ज्ञान मायि परमातमा देखणेकी इच्छा
न संभवे १ जैसे धोबी निर्मल नीरका भर्या तलावमे कपड़ा धोता है ता
कूं लागी जल पीणेकी पिपासा सो मूर्ख धोबी बिचार कर्ता है के येह २ दो
य बस्त्र धोय पश्चात् जल पीउंगा दोय बस्त्र धोये पश्चात् फेरबी येही बिचा
र कीयाके येह धोय पश्चात् येह धोय पश्चात् ऐसे अनुक्रम संकल्प बिचार
करतो करतो धोबी निर्मल नीरको निर्मल नीरही मे धोबी मरगयो परंतु जल
नही पीयो तैसेही सर्वजीव राशि निर्मल सम्यक ज्ञान मयि जलका भर्या स
मुद्रमे परवस्तुकों उजल कर्ता है येह करे पश्चात् गुरुके उपदेस द्वारा सम्यक
ज्ञानरूपी नीर पीय करि सुखी होहुंगा येह करे पश्चात् सम्यक ज्ञानमयि नीर

मुद्रमे परवस्तु कों उजल कर्त्ता हे येह   पश्चात्
ज्ञानरूपी नीर पीय करि सुखी होहुंगा येह करे पश्चात् सम्यक्ज्ञानमयि नीर

गुरुपदेसात् पीउगा ऐसे करते करते मरण करिके कहांके कहां चल्जा
तेहे १ जैसे धोबी मैला कपडा वस्त्र कूं साबुण क्षार शिलादिक निमत्तसे
धोताहे परंतु धोबी वस्त्रसे साबणसे क्षारसे शिलादिकसे तन्मयि होय
नही धोताहे तैसेही शुभके लगी अशुभ कालिमाताकूं सम्यक्द्रष्टी धो
ताहे परंतु सम्यक्द्रष्टी शुभाशुभसे अर शुभाशुभका जेता व्यवहार क्रि
याकर्म हे तासे तन्मयि होयनहीं धौताहे॥ ॥दोहा॥ ॥भेदज्ञानसा
बणभयो समरसनिर्मलनीर॥ धोबी अंतर आतमा धोवैनिर्मलचीर॥१
जैसे कोरा नवीन पक्क मादीका कलसके ऊपर पवन प्रसंगात् रेणु आय लागे
हे तैसे सम्यक् द्रष्टीके कर्म रेणु आय लागतीहे १ जैसे बहुत वर्षसे भर्यो
तेलपूरितचीकणो माटीको कलस ताकेऊपर पवन प्रसंगात् रज रेणु आ-
य लागतीहे तैसे मिथ्याद्रष्टीके कर्म वर्गणा आये लागतीहे १ जेसे कोई
मूक पुरुषका मुखमे मिश्री गुड खांड डालदियो मूक कूं मिष्टानुभव हुवो

परंतु कहनहीसक्ता तैसैही कोईजीवकूं गुरुपदेशात् आपका आपकूं
आपमै आपमथि स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव हूवो परंतु कह नहीसक्ता

१ प्रश्न गुरुस्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव कैसे देताहोगा उत्तर
गुरूकी गुरूही जाणै तथापि कुछ कहताहूं जैसे कोई चंद्र दर्शणकोइ-
च्छक गुरूसे बूजीके चंद्र कहाहै तब गुरू कहीके वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके
ऊपर इत्यादिक अनेक प्रकारसे गुरू स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव देताहै
१ जैसे किसी पुरुषकी स्त्री अपणे भरतारसे कहीके तुम इस बालककूं
लडावो गोदमे लेवो तोमै घरकार्य करूं तब वो पुरुष स्वपुत्रकूं अपणी गोद
मे लेकरि लडाणे लाग्यो ततसमय बालक रूदन करणे लागो तब पुत्रको-
पिता तिस बालककी थिरता रूरवके अर्थ कहताहैके हे पुत्र रूदन मति-
करै यहां अपणी माता बैठीहै इहां विचारणा चाहियेकी माता तो तिस
बालककी है पुरुषकी नाहीं पुरुषकी तो स्त्रीहै ऽ स्त्रीकूं माता कहणा व्य-

वहार विरुद्धहै तथापि बालककी

यहां अपणी माता बैठीहै इहां बिचारणा चाहियेकी माता
बालककीहै पुरुषकीनाहीं पुरुषकीतो स्त्रीहै ऽ स्त्रीकूं माता कहणा व्य-

वहार विरुद्धहै तथापि बालककी स्थिरता करबके अर्थ वो पुरुष व्यवहार-
बचन बोलताहै तैसैही शिष्य मंडलीके करब स्थिरताके अर्थ गुरु
स्यात् अपभ्रंश बचन बोलताहै हेतु गुरुका उत्तमहै १ जैसे अग्नीमे क-
पूर चंदनादिक डाल दीजियेतिसकूं बी अग्नीजलय देतीहै बहुरि चर्म मला
दिक डाल दीजिये तिसकूं बी अग्नी जला देतीहै तैसेही सम्यक्ज्ञानाग्नि
विषे येह शुभाशुभ पाप पुन्यादिक जल जातेहै अर्थात् नहीरहताहै १ जै
से येकजात येक लक्षण येक स्वरूप येक तेज येकगुणादिक युक्त रतनरा-
सि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु हैवह रतन भिन्न भिन्न तथा जैसे अग्नी
का अंगाराकी रासि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु है वह अंगारा भिन्नभि
न्न तैसेही जीवराशि भिन्नभिन्नहै गुण लक्षण जाति नामादिक सर्वका ये-
कहै १ जैसे दधी मथन करिके तिसको माखण निकास करिके पीछाको पी
छो तिस छाच तक्र मठामे डालदेनो बी वो माखण छाच तक्रमै मिल करि-

के येक होणेको नाहीं तैसैही गुरु संसार सागरमैसे जीवकूं निकास क-
रिके पीछाको पीछो संसार सागरमे डाल देवैतोबी वोजीव संसार
रसे अग्नी उष्णतावत् मिल करिके येक होणेको नाही १ जैसै किसीके
पास सर्पकाजहर विष निवारणी बुटी जडी मंत्रसमीपहै वो सर्पसे
डरताहै तैसे किसीके पास स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान तन्मयिहै वो संसार-
सर्पसे नही डरताहै १ जैसै कुंभकारको चक्र दंडादिक प्रसंगात्
बहुरि दंडादिक प्रसंगात् भिन्नहुये पश्चात्बी वोचक्र कुछ किंचित् काल
पर्यंत फिरबि फिरतारहताहै तैसैही कोईजीवका ४ च्यार घातिया कर्म
भिन्नहुये पश्चात्बी पूर्व प्रयोगात् कुछकिंचित् कालपर्यंत संसारमै भ्रम
ताहै १ जैसै रूकी गोवरी छाणा कंडाके येककणिका मात्रबी अग्नी
गई तो सो अग्नी तिस रूकी गोवरी छाणा कंडाकूं अनुक्रमसे जलायक
रिके भस्मकरि देतीहै तैसैही कोईजीवके गुरुपदेशात् येक समय काल

मात्रबी सम्यक् ज्ञानाग्नि तन्मयि

नाहै १
गई तो सो अग्नी तिस रुकी गोवरी छाणा
रिकै भस्मकरि देतीहै तैसेही कोईजीवकेगुरुप देशात् येक समय काल

माचबी सम्यक्ज्ञानाग्नि तन्मयि होय लाग जावैगी तो अष्ट कर्मादि ना
मकर्म पर्यंत जलाय देगी बाद पश्चात् जो बचणे जोगहै सो को सोही स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव बस्तु अषंड अविनासीर
हगो १ जैसे काष्ट पाषाण चित्रामकी ऽस्त्री आकार फूतलीकूं कोई कामी
तीव्र काम राग भावसे देखते देखते ताको वीर्य बंध छूट जाताहै तैसेही
कोई धातु पाषाणकी पद्मासण षड्गासण ध्यान मुद्रायुक्त वैराग सूचक
मूर्तिकूं कोई मुमुक्ष तीव्र अपणा वीत राग भावसहित देखैतो तत्काल ताका
अष्टकर्मबंध छूट जाताहै १ जैसे व्यभिचारणी ऽस्त्री स्वघर कार्यादिक कर्ती
है परंतु ताके अंतः करणमे वासना व्यवचारि पुरुषकी तर्फ लगी रहतीहै तै
सेही सम्यक्द्रष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारीक काम कार्य कर्ताहै परंतु अं
तः करणमे ताके दृढ अचल वासना स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान
कीहै अर्थात् स्वसम्यक्ज्ञानकूं अर आपकूं अग्नि उष्णतावत् येक तन्मयि

समजताहै मानताहै १ जैसै गुमास्तो दुकान वा कोठीको काम कार्य
रागद्वेष ममता मोह युक्त कर्ताहै परंतु ताके अंतः करणमै अचल येह है के
येह धन परिग्रह बहुरि धन परिग्रहका शुभाशुभ फल मेरा नाहीं सेठ
काहै तैसैही सम्यक् द्रष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारका शुभाशुभ व्य
वहार क्रिया कर्म राग द्वेष ममता मोह सहित कर्ताहै परंतु ताके अंतः
करणमै अचल दृढ अवगाढ येह हैके येह संसारका जेता शुभाशुभ व्य
वहार क्रिया कर्म राग द्वेषादिक हैसो बहुरि ताका शुभाशुभ फलहैसो
मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुका तन्मयी
नाही येह संसारका शुभाशुभ कर्मादिकहै सो सर्व तन मन धन
सें तन्मयिहै तिसीहीका है १ जैसै स्वच्छ दर्पणमै अग्नि बहुरि १
प्रतिछाया दीखतीहै ताकरिके वो दर्पण उष्ण शीतल नही होतो तैसे:
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमै

शुभाशुभ क्रिया

प्रतिछाया दीखतीहै ताकरिके
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स्वच्छ सम्यक् ज्ञान मयि दर्पणमे

शुभाशुभ क्रिया कर्मकी प्रतिच्छाया भाष होतीहै ताकरिके वो स्वच्छ-
सम्यक् ज्ञान मयि दर्पण राग द्वेषसे तन्मयि होते नाहीं १ जैसे आकास-
मे काला पीला लाल मेघ बादल बीजली आदि अनेक विकार होताहै अ-
रबिगडताहै ताकरिके आकाश बिकारी नही होताहै तैसेही स्वसम्यक्-
ज्ञान मयि आकाशमे येह क्रोध मान माया लोभादिक होते संतेबी सो स्व
सम्यक् ज्ञानमयि रागद्वेषादिकसे तन्मयि होते नाही १ जैसे जिस घरमे
अग्नी लागेगी तो घर जलैगो बलैगो परंतु घरके भीतर बाहिर आकाशहैसो
कदाचित् कोई प्रकारबी जलैगो बलैगो नाही तैसेही देह रूपी घर तथा स-
रीर घरमे आधि व्याधि रोगादिक अग्नि लागेगी तो देह सरीर घर जलैगो ब
लैगो परंतु देह सरीरके वा लोका लोकके भीतर बाहिर स्वसम्यक् ज्ञान-
मयि निर्मल आकाश घनहै सो कदाचित् कोई प्रकारबी जलैगो बलैगो वा
मरैगो जन्मैगो नाहीं १ जैसे सूकी गोवरीके कणिकामात्रबी अग्नी ला-

गजावैतो तिस अग्नी प्रसंगात् सो सूकी गोवरी अनुक्रमसे जलजाती-
है तैसैही कोहू जीवके सत्गुरू वचनोपदेस द्वारा येक नेत्र टीमकारा-
वा येक समय काल मात्रवी सम्यक् ज्ञानाग्नी तन्मयि लाग
जीवका द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म अनुक्रम पूर्वक जलजाय बलजाय २
समे कदाचित् कोई प्रकार संदेह नाहीं १ जैसे कोहू १ स्त्री अपणा
तारकूं त्यज करिके अन्य पुरुषकी सेवा रमण आदि कर्तीहै सो १ स्त्री
वचारणी मिथ्यात्‌णीहै तैसैही कोहू अपणा आपमे आपमायि स्वस-
म्यक् ज्ञान मयि देवकूं त्यज करिके अज्ञान मायि देवकी सेवा भक्तिमे ली-
नहै सो मिथ्यातीहै १ जैसे कोहू मदिरा बारुणी पीवणेका सर्वथा प्र-
कार त्याग करैगो तब मदोन्मत्त पणाका त्याग संभवेगा तैसैही कोहू जीव
जाति लाभ कुल रूप तप बल विद्या अधिकार येह अष्ट मद सर्वथा
र त्यागैगा तब निश्चय मार्दवजो स्वसम्यक् ज्ञान गुणहै तासे तन्मयि होवै-

१ जिसके तिल

जाति लाभ कूल रूप तप
र त्यागे मा तब निर्भय मार्दवजो स्वसम्यक् ज्ञान गुणहै तासै तन्मयि होवे

गा १ जिसके तिल तुसमात्र परिग्रह नाही अर पंच प्रकारका सरीर त-
नहै तासै कदाचित् कोई प्रकारबी तन्मयि नाही सोही सतगुरुहै १ जै-
सै कोहू मद भंगादिक पीवे ताकरिकै मदोन्मत्तहै ताकूं लौकीकजन ऐसै
कहतेहै येह मतवालेहै तैसेही कोई अपूर्व मतिमंद मदिरा पीय करिके म-
दोन्मत्त होरत्याहै येह जैन मतवाले वैष्णु मत वाले शिव मतवाले बौद्ध म-
तवाले इत्यादि बहुरि इनकूं कोहू कहके तुम कोणहो तबवह स्वमुखवान्
अपणा आप कहताहैके हम जैन मत वाले हमवैष्णु मतवाले हम शिव
मतवाले हम बौद्ध मतवाले इत्यादि येह मतवाले स्वस्वरूप स्वानु भवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसै तन्मयि नाहीं १ जैसै सूर्य अपणा स्व-
भावगुण प्रकास नही छोडे तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान अपणा ज्ञान गुणकूंन
छोडै १ जैसै कोहू कंबल अंगकेऊपर ओढकरि मधु छताकूं तोडणे लागे
ताके तत् समय सहस्त्रादिक लगी मधु मक्षिका तथापि वो पुरुष अडंकू रह

ताहै तैसेही कोहू जीव गुरु वचनोप देशात् स्वसम्यक्
ल ओढलीनी ताकेयेह संसार मक्षिका नही लागती १
बोलताहै तैसैही किसीकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी तन्मयिता
गादताती हुई नही अर बडे बडे वेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पढते है सोका
क भाषितमेवच १ जैसे कस्तूरया मृगके समीपही कस्तुरी है परंतु क
स्तुरीकी सुगंध नासिका द्वारा धारण करिके कस्तुरीकूं
मे खोजता फिरताहै धावता दोडताहै तैसैही
मायि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै ताकूं जीव
लोकमे खोजताहै अज्ञानी जीवकूं येह खबर नाहीं के जिसकूं
हूं सो वस्तु तो मेरी मेरेही समीपहै मेरा स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयिहै
स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहूं १ जैसे इंद्र
सैही येह संसार कारखेल मिथ्याहै स्वसम्यक् ज्ञानमयि

स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा है १ जैसे इंद्रजालका खेल मिथ्या है तैसे
येह संसार का खेल मिथ्या है स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा सत्य है

१ जैसे स्वप्ना की माया झूठी है तैसेही संसार की माया झूठी है स्वसम्यक् ज्ञा
नमयि परमातमा सत्य है १ जैसे जहां देह नही तैसे तहां जन्म मरण नामा
दिक नाही अर्थात् जहा देह है तहांही तिनसे तन्मयि जन्म मरण नामादिक
है १ जैसे चलती चकी का दोहु पाट के बीच जेता गहू चीणा मुंग उडद आदि धा
न्य क्षेपये ते सर्व पिस जाते है आटा होजाता है येक कण दाणु बी नही बचता
है परंतु उसी चलती चकी मे कोई कोई बीज लोहा का कीला के नजीक रहता
है सो बच जाता है तैसेही संसार चक्र के बीच पड्या है जीव सो तो मरणादि
क द्वारा होकरि नर्क निगोद मै जाय पडते है परंतु कोई कोई जीव गुरु बचनो
पदेस द्वारा आपका आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा के
तन्मयि शरण होजाय है सो जीव जन्म मरण के दुःखसें बच जाते है १ जैसे स
र्पणी १०८ पुत्र जणती है जाणि करिके गोलाकार आपणी देह गोलाकार के
बीच सब पुत्र समुदाय कूं राखि करिके अनुक्रमसे सर्व कूं भक्षण करि जा

तीहै परंतु कोईकोइ गोलाकारमै निकस जातोहै सो बच जातोहै तैसैही
उत्सर्पणी अवसर्पणीका गोलाकारमैसै कोइ जीव निकस करिके भिन्न हु
वो सोनो बच्यो शेषरहे सो उत्सर्पणीका अवसर्पणीका मुखमेरहे १
से बांझ स्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका आदि अंत पूर्वापर सर्व विवर्ण श्रवण करा
वो तथापि तिस बांझ स्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका कदाचित् कोई प्रकारबी सा
क्षात अनुभव होते नाही तैसैही अज्ञ मिथ्यादृष्टिकूं स्वसम्यक् ज्ञानोत्प
त्तीका पूर्वापर विवर्ण श्रवण करावो तथापि ताकूं सम्यक् ज्ञानोत्पत्तिको
साक्षात् अनुभव होते नाहीं १ जैसै किसीको नाक छिन रवंडन है
ई दर्पण दिखावैतो वो नाकछिन अपणा दिलमे येह विचार करै के मेरो
नाक छिनहै इसी वास्ते यो मेकूं दर्पण बतावैहै तैसैही मिथ्यादृष्टीकूं
सम्यक् ज्ञान दर्पण दिखावणा भयाहै १ जैसै बांझ स्त्रीकूं पुरुषका
ग होतेसंतेबी पुत्र फल लाभानुभव नही होताहै तैसैही मिथ्यादृष्टीकूं

दृष्टां·

सम्यक् ज्ञान दर्पण दिखावणा अर्थाहे १ जैसे बांझ स्त्री कूं पुरुषका
होतेसंते बी पुत्र फल लाभानुभव नही होताहे तैसेही मिथ्या दृष्टी कूं

देव गुरु सास्त्र सत् पुरुषांको सतसंग होतेसंते बी स्वसम्यक् ज्ञान फल
लाभानुभव नही होताहै १ जैसै हंस दुग्ध पाणी मिले हुयेकूं भिन्नभि
न्न समजताहे तैसे स्वसम्यक् ज्ञानी येह लोकालोक कूं आपका आपमै
आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानकूं भिन्न भिन्न समजताहै १ जैसै स्वप्नाअव-
स्थामे घरकुटुंब बेटा बेटी ऽस्त्री मातापिता धनधान्यादिक दिखताहै-
ताकूं जाग्रत समय देखियेतो नदीखताहै अर्थात् स्वप्ना अवस्थाका मा
ता पिता स्त्री पुत्रादिक सर्व मरजाते हे ताका दुःख हर्ष सोक जाग्रत अव
स्थामे नही होते तैसेही जाग्रत अवस्था समयका माता पिता ऽस्त्री पुत्रा
दिक हे सो स्वप्नामै नही दीखताहे अर्थात् जाग्रत अवस्था समयका मा-
ता पिता ऽस्त्री पुत्रादिक सर्व मरजातेहे ताका दुःख हर्ष सोक स्वप्नाअव-
स्थामै नही होते १ सदाकाल देखता जाणताहे ताके सन्मुख येह स्वप्ना
समयका अर जाग्रत समयका संसार होताहे बिगडताहे १ जैसे स्वप्नास

मय कोई किसी को मस्तग छेदन कियो मारगेरयो तिस समय आपकूं
मरयो समज्यो मान्यू तोही जाग्रत हुवो तब कहणे लाग्यो के मैं स्वप्न मांमे
मरगयोथो तैसेही येह जन्म मरण पाप पुन्यादिक स्वप्नाकारवेलहे इस
खेलका तमासा देखता जाणताहे सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानहे १ जैसें मतवालो स्वमाताकूं माताही कहताहे परंतु ताको वि
श्वासक्या क्यूंके कदाचित् अपणी माताकूं अपणी स्त्री मानलेतो प्रमा
णक्या तैसेही येह मति मदिरामें मदोन्मत्त येह जैन मतिवाले
वाले शिव मतिवाले वेदांतमतिवाले बौद्ध मतिवाले आदि षट् मतिवा
ले हैं सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं और
और प्रकार मानले कह देवेतो प्रमाणक्या १ जैसें माटीका
कसैं बालक प्रीत कर्ताहे सोबी दुःखीहे बहुरि कोहु सत्य साचा घोटकसैं
प्रीत कर्ताहै सोबी दुःखीहे कारण उसका घोटककू कोहू तोडे फोडे चार

करसैं बालक प्रीत कर्नाहै सोबी दुःखीहै बहुरि कोहू सत्य साचा घोटकसे प्रीत कर्नाहै सोबी दुःखीहै कारण उसका घोटककू कोहू तोडे फोडे अर-

तिसका घोटककूं बी कोई चारो दाणु नदे वा ताडे तैसैंही कोहू जो माटी- की पत्थरकी चित्रामकी काष्टकी झूटी देष मूर्तिसे प्रेम प्रीत कर्नाहै सोबी दुःखहीको कारणहै बहुरि कोहु सत्य साचो देवहै तासै बी प्रेम प्रीत कर- ताहै सोबी दुःखहीको कारणहै अर्थात् स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव भिन्नहोय करिके परवस्तुसे प्रेम प्रीत करेगा सो दुःखानुभवमे लीनही रहैगा १ जैसे येक पुरुष पाषाणका देव मूर्तिकूं अर धातु मूर्ति देवकूं बहुरि काष्टकी देव मूर्तिकूं अर चित्र देव मूर्तिकूं बडे प्रेमभावसे ताकी पू- जा प्रणाम कर्तोथा दैवबसात् पाषाणकी मूर्ति तो फूटगई तूटगई धातुकी देव मूर्तिकूं चोर तस्कर लेगये बहुरि काष्टकी देवमूर्ति अग्नीमे ज ल बल करिके भस्म होगई अर चित्रामकी मेघ पवन वा हस्त स्पर्शात् बिगडगई अर्थात् धातु पाषाणादिककी देव मूर्तिमे नष्टहोणा कदूषण भनक्षानुभव होना देख करिके अपणो आपमे आपमयि स्वस-

स्यक ज्ञानानुभव गम्य स्वभाव स्वरूप आपही कूं देव समज करिके चुप
चाप रहे १ जैसै कोहू पुरुष किसी साहूकार की दुकान को द्रव्य रुचर्ग
रतनादिक दूरसे देख करिकै कहीकै मेरेकूं येह जेता द्रव्य रतनादिक मे
रेसे दूर अलगही दीखताहे ताका मेरे त्यागहे तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभ
वगम्य सम्यक केवल ज्ञानहे ताके येह संसार लोकालोकका स्वभावहीसे
त्यागहे २ जैसै कोई द्रव्यार्थि पुरुष राजाकूं जाण करिके ताकी दृढ श्रद्धा
करिके राजाके अनुसार चलताहे रहताहे ताकूं राजा द्रव्य देताहे तैसेही
कोहू जीवहे सो प्रथम स्वसम्यक केवलज्ञान राजाकूं अपणा स्वभावगु
णसे तन्मयि समजकरिके जाण करिके ताकी दृढ
केवलज्ञान राजाके अनुसार चलताहे रहताहे ताकूं केवल
व सम्यक ज्ञानमयि मोक्ष देताहे १ जैसै संस्कृत भाषामे मलेछ नहीस
मजे तो हावैतो मलेछकूं मलेछी भाषामे समजावणा तैसेही

दृष्टां·

कूं अज्ञान भाषामै समजावणा १ जैसै कोईक हैके दोहुराजा परस्पर
युद्धकरिरहाहै बिचारसै देखियेतो परस्परकी फोज लडतेहै
तो अपणे अपणे स्वस्थानमै निमग्नहै तैसैही ज्ञान अज्ञान दोहुही
पणो अपणा स्वस्थानमै अपणे अपणे स्वभावमै निमग्नहै अपणे अ
पणे स्वभावहीसै १ जैसै कोहू कहके राजाइस गांवकूं लूटताहै जलाद
यो इसगांवकूं बालदीयो इस गांमकूं बचादीयो इसग्रामकी रक्षाकरी
परंतु बिचारसै देखियेतो लूटणे मारणे बचाणेका जलाणेका इत्यादिक
कार्यहै ताकूं फोज सिपाई जमादार फोजदार आदि कर्तेहै राजा नह
तीहै तैसैही स्वसम्यक् केवलज्ञान राजाहै सोकिंचित् बी शुभाशुभ क्रिया
कर्म नही कर्ताहै १ जैसै सुवर्णका सुवर्णमयि भावकटिकूंड १
वर्णमयिही होताहै बहुरि लोहाका लोह मयिही होताहै तैसैही
सम्यक्ज्ञानका भाव क्रिया कर्म सम्यक्ज्ञानमयिही होताहै बहुरि

अज्ञानका भाव क्रिया कर्म अज्ञान मयिही होताहै १ जैसै मातंग चांडा
लकी बहुरि उत्तम ब्राह्मणकी क्रिया कर्म भाव येक नाही किंतु
अहै तैसैही ज्ञान अज्ञानकी क्रिया कर्म भाव येक नाही अर्थात
है १ जैसै कोइ पुरुष अहार कीयो सो अहार उदराग्नि प्रसादात मांसरु
धिर मज्जा मल मूत्रादि होयहै तैसैही जिसके गुरु वचनोप
त अंतःकरणमै सम्यक ज्ञानाग्नि प्रज्वलित भई ताके सर्व कर्म स्वमैवही अ
पणी अपणी प्रणतीमै प्रणवहै १ जैसै वैद्यके समीप विष नासनी दवा
है वो बैद मरण होणेजोग विष भक्षण करते संतेबी मरतो नाही
सम्यक दृष्टी पूर्वकर्म प्रियोगात विषय भोग भोगते संतेबी
नाही १ लौकीकमै प्रसिद्ध है जैसै कोइ स्त्री कूं भोगै सो पुरुष है तैसैही
ध मान माया लोभ मोह ममता मायाकूं भोगै सो सत्य
की छातीके ऊपर येह क्रोध मान माया लोभ मोह ममता मायाचढ रहीहै

सो पुरुषनही वो सत्यस्त्रीहै १ जैसे स्कवर्ण कर्दमके बीच पड्याहै तोहु सुवर्ण कर्दमसै येक तन्मयि लिप्त होणेको नाही तैसै ही स्वसम्यक्ज्ञा-
नी सम्यक् द्रष्टी सर्व कर्मके बीच पड्याहै तोबी सर्व कर्मसे तन्मयि नहील
पटताहै १ जैसे घटके भीतर बाहिर मध्य आकाश है सो घटोत्पत्ती होने
संते तो घट उपजतो नाही बहुरि घटको नास होनेसंते आकासको नास
नही होते तैसे ही स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान मयि परमातमा है सो देहको
नसते संतेतो बिनसतो नाही मरतो नाही बहुरि देहके उपजते संते उपज
तो नाहीं जन्मतो नाही १ सहज स्वभावही से आपा परकुं जाणताहै सो-
ही स्वसम्यक् ज्ञानहै १ जैसे तुषहै सो तंदुल नाहीं तैसेही पंच प्रकारका-
सरीर देहहै सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा नाही १ जैसे बांससै बां
स परस्पर घृष्ट होवैहै तब अग्नी सहज स्वभावहीसे उत्पन्न होतीहै
आत्मासे आत्मा तन्मयि मिलै तब सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक्ज्ञानाग्नि

उत्पन्नहोतीहै १ जैसै सूर्योदय समय स्वमेवही कमल प्रफुल्लित होता
है तैसेही किसीके अंतःकरणमे स्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्योदय होने सं
ते मनस्वरूपी कमल प्रफुलित होताहै भावार्थ मनमे बडीकुसी हर्षहो
ताहै के हाहाहाहा जिसके प्रकासमे येह लोकालोक प्रगट दीखताहै
ऐसा सूर्यका दर्शण लाभ हुवा अथवा विशेष हर्ष प्रफुलित पणो ऐसो·
केजिस सूर्यका प्रकासमे येह लोकालोक जगत संसार जन्म मरण ना·
मानाम बंध मोक्षादिकहै सो सूर्य स्वभावहीसे मैहीहूं १ जैसे फोजतो·
है परंतु तामे फोजदार नाही तो वाफोज वृथाहै तैसैही व्रत शील जप तप·
ज्ञान ध्यान दया क्षमा दान पूजादिकतोहै परंतु तामे स्वसम्यक् ज्ञानमयि
गुरूनही तो वह व्रत शीलादिक वृथाहै १ जैसे कोई स्त्री को भर्तार परदे
समैजाय करिके तत्रस्थलही मरगयो अब वास्त्री तिस भर्तारकी आसाधा
रण करिके भोगादिक उत्पत्तीका सिणगार काजल टीकी मैदी नथनी

सिणगार करतीहै सो वृथाहै तैसैही मोक्षमै गये स्वस्वभाव सम्यक्
तन्मयि होगये निर्ग्रंथगुरु सोतो अब पलट करिके पीछा आते नाही
वणकी फूतली क्षार समुद्रमै गई सो पलट करिकै आती नाही तदवत्हीस
मजणा अब चलेगये निर्ग्रंथगुरु ताकी आसा धारण करिकै संसारिक शु
भाशुभ भोगादिक उत्पत्तीका शुभाशुभ क्रिया कर्मादिक करणा वृथाहै १
सै कोहू जन्मसमयसे लगाय अद्यपर्यंत गुड शर्करा खाईनाही अर गुड स-
र्कराकी बार्ता बिबर्ण कर्नाहै सो वृथाहै तैसैही कोहू कदाचित् काहू प्रकार-
बी स्वस्वरूप स्वयंसिद्ध सम्यक्ज्ञानमयि परमात्मासै तो तन्मयि हुये
अर उनका गीत बेद पुराण सास्त्र
सो सूक पक्षीवत् वृथाहै १ जैसै सीलवंती स्त्री स्वघर त्याग कोई काल पर
घर प्रतिबी जावै आवै तोबी फिकर नाही तैसैही स्वसम्यक्द्रष्टी पूर्वकर्मप्र
योगात् कुछकाल संसारमै भी भ्रमण करै तथापि फिकर नाही १ जैसे

दय होने प्रमाण तत्काल तत्समयही अंधकार उपसम होजातेहै तैसेही किसीके अंतः करणमै स्वसम्यक्ज्ञान सूर्योदय होते प्रमाण तत्काल तत्समयही मोहांधकार उपसम होजातेहै १ जैसे व्यभचारणी ऽस्त्री अपणा स्वघर त्यागकरिके परघर नही जाती आतीहै तथापि ताकी वासना व्यवचारी पुरुषकी तरफ लगी रहतीहै तैसेही जिसकूं स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलता अवगाढ परमावगाढता नाही ऐसा मिथ्याद्रष्टीकी वासना भाव शभाशभ संसारकी तरफ लगी रहतीहै १ जैसे जिस कोठी वा दुकानको कामकार्य सेठ कर्त्ताहै ममता माया मोह सहित तैसेही गुमास्तो ममता माया मोहसहित कर्त्ताहै परंतु भीतर परिणाम भेद भिन्न भिन्नहै तैसेही किसी कूं गुरु वचनोपदेशात् स्वसम्यक्ज्ञानानुभव होणे जोग होत्तुके येकतो ऐसो बहुरि दूजो ऐसोषे संसारकूं या लोकालोककूं बहुरि अपणा स्वभाव सम्यक्ज्ञानकूं येक सूर्य

है मानताहै दूजोऐसो नेदोहूही संसारका कार्य कर्म कर्ताहै तामैयेक
दूजो निर्दोस १ जैसैसूकपक्षी स्वमुखात् रामरामराम बोलताहै परंतु
रूप सम्यक्ज्ञानमै तन्मयि बीज वृक्षवत् तथा
ऐसा रामकूंतो जाणतोनाही। फिरवो सूक पक्षी स्वमुखात् रामराम बोलता
है सो वृथाहै तैसैही मिथ्याद्रष्टी स्वयंसिद्ध स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञकूं तोजाणतो नाही अर स्वमुखात् णमोसिद्धाणं ऐसै बोलताहै सो वृ-
थाहै इहां विधि निषेधसै स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु
यिनसमजणा १ जैसै दीपज्योतिके भीतर कालो काजल कलंकहै
स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान दीपज्योतिके प्रकासमै कर्मसै तन्मयि कर्म कलंकहै
इहां कोई मिथ्याद्रष्टी दृष्टांतमै तर्कस्थापन करिकै स्वसम्यक्ज्ञानानुभवतो
नही ग्रहण करैगो अर सून्य दोष ग्रहण करैगो क्याकै दीपज्योतिमै
कलंक काजलहै परंतु दीपज्योतिकै बुजगये पश्चात् काजल वी कहांहै अर

दीपज्योतिबी कहांहै ऐसी तर्क द्वारा शून्यदोष ग्रहण कर्ताहै सो
स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभवसे सून्यहै मिथ्यादर्ष्टीहै १ पंचेंद्रियकूं
बहुरि पंचेंद्रियका जेता शुभाशुभ विषय वा भोगोप भोगादिककूंसह
ज स्वभावहीसै जाणताहै देखताहै सोही केवलज्ञानहै ऐसै नही स·
मजणा मानणा कहणाके घ्राणेंद्रियका विषय भोगकूं जाणताहै
कुछ ज्ञान ओरहै जिव्हा इंद्रियका विषय भोगाकूं जाणताहै सो कुछ·
ज्ञानओरहै ऐसैही कर्णेंद्रियका स्पर्श इंद्रियका विषय भोगादिककूं जा
णताहै सो कुछ ज्ञानओरहै बहुरि तनमनधन बचनादिककूं बहुरि तन·
मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभ क्रिया कर्मकूं ओर
जाणताहै सो कुछज्ञान ओरहै ऐसी भेदाभेदकी कल्पना
ई प्रकारवी स्वभावसम्यक्ज्ञानसे तन्मयि नसंभवे १ जैसे सूर्यका प्र·
कासमे पडी रस्सी रात्रिसमय सर्प भाष होतीहै तैसैही स्वसम्यक्ज्ञा·

नानुभव विना

नानुभव बिना ज्ञानहैसो जगत संसारवत् भाषहोताहै १
चांदी भाष होतीहै तथा मृग तृष्णामे नीर भाष होताहै तैसैही स्वसम्य-
क् ज्ञानमे तन्मयिवत् येह संसार जगत भाष होताहै १ जैसै अंधसमूह
कूं खेंच तनयन प्रवीण तैसै आतम ज्ञानबिना होय मोहमे लीन १
आकाशके धूलि मेघादिक नही लागते तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानके
न्ये बहुरि पाप पुन्यका फल नही लागते १ येह लोकालोक जगत संसार
कूं स्वसम्यक् ज्ञानहै सो सहज स्वभावहीसे जाणताहै ताकी बिधि नि-
षेद कोण प्रकार १ जैसै सूरबीर नरेश मलेंच्छादिक देसकूं जीत करिके
मलेंच्छादिक देसहीमे रहताहै तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानी क्रोध मान मा
या लोभ वा विषय भोगादिककूं जीत करिके तिसही विषय भोगादि-
कमै रहताहै १ तन्मायि तत्स्वरूप होय करिके नही रहताहै १
भीतर बाहिर मध्य आकाशहै सो घटकूं कैसे त्यागे अरग्रहण वी कैसेक

रे तैसैही येह जगत संसारके भीतर बाहिर मध्य स्वसम्यक् ज्ञानहै सो
क्या त्यागे ओर क्याग्रहण करे १ जैसे समुद्रके उपर कल्लोल उपजत
विनसतीहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि समुद्रमे घह स्वप्ना समयको·
जगत उपजतोहै बहुरि जाग्रत समयको जगत बिनसताहै बहुरि जा
ग्रत समयको जगत उत्पन्न होताहै ओर स्वप्न समय कोजगत विनसता
है १ जैसे जन्मांध रतन स्ववर्णादिकका आभूषण पहरनाहै सो वृथा
है तैसेही स्वसम्यक्भाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परभाव गाढविना व्र·
त शील तपजपनेमादिक संपूर्ण वृथाहै १ जैसे कोऊ पुरुष वृक्ष कुंप
कंडिकरिके स्वमुखवात् कहकेमे बंध मोक्षसें कब भिन्न होऊगा तैसैही बंध
मोक्षसें भिन्न होणेकी इच्छा कर्त्ताहै सो स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञान रहित
र्ख मिथ्या द्रष्टीहै १ भावाभाव विकारहै सो आपणे अपणे स्वभावहीते
है १ जैसे तोलमे गुंजा ओर स्ववर्ण बरोबरहै परंतु मूल स्वभावमे बरो·

बरनाहीं तैसैही जगतओरजगदीस येह दोन्यूंही बराबरहै परंतु मूलस्व
रूप सम्यक्ज्ञान स्वभावमे दोन्यूं बराबरनाही १ जैसैबिन धूम्रकी
सोभायमानहै तैसैही भ्रमरूपी धूम्र करिकेरहित स्वसम्यक्
भाव वस्तु सोभायमान भाषतीहै १ जैसेज्वरके अंतसमय अन्नप्रिय ला-
गताहै तैसैही शुभाशुभ संसारके अंत स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव
यलागताहै १ जैसे कुकर्दम राजा स्ववर्गकूं त्याग करि पर वर्गसूं मिश्रि-
तहोय मर्णादिक दुःखकूं प्राप्त हुवो तैसैही कोहू स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञान-
कूं छोडकरिके परस्वभाव परवर्गसे आपकूं तन्मायिवत् समझताहै मान-
ताहै सोजन्म मरणादिक संसारका दुःख भोगताहै १ जैसे मही
दीको प्रभाव एकताहीमे अनेक भांतनीरकी झरनहै पत्थरकोजोर तहां
धारकी मरोड होय कंकरकी रवानी तहां झागकी झरनहै पवनकीझकोर तहां
चंचल तरंग उठै भूमिकीनीचान तहां भवरकी पडितहै तैसैही एक स्वस्वरूप

सम्यक् ज्ञानमई आत्माहै वहुरि अनंतरसमयी पुद्गलहै तिन दोहुका पुष्प-
सुगंधवत् तथा घट आकाशवत् संयोग होते संते

१ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव हुये पश्चात् वी कुछ काल पर्यंत पूर्वकर्म
त् सम्यक् दृष्टि संसारमे भ्रमण कर्ताहै कैसे जैसे कुंभ कारको
भकार आदि प्रसंगात् परिभ्रमण करैहै परंतु दंड कुंभकार आदिक
संगसे भिन्न हुये पश्चात् वी कुछ काल पर्यंत परिभ्रमण करैहै तैसे १
परजो तन मन धन वचनादिककूं अर इनका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया क
र्मफलकूं जाणताहै तैसेही पलट करिके आपकूं ऐसे जाणेके येह तन
न धन वचनादिककूं वहुरि इन तन मन धन वचनादिकका जेता
व्यवहार क्रिया कर्म फलहै ताकूं मैके द्वारा मेजाणताहूं येह मेरा
व सम्यक् ज्ञानकूं जाणतेनाहीं ऐसे जाणे सोही कहीहै
मजकार घरनही जाणे दूजाकूं क्या

का भाव क्रिया कर्म फलसें तन्मयि तत्स्वरूप होय करिके नही भोगताहै १
जैसें स्त्रीबी पुरुषकूं भोग देतीहै सो पुरुषसें तन्मयि होय करिकें नाही दे-
तीहै तैसेंही संसारभ्रमजाल मायास्त्रीहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानम-
यि पुराण पुरुषोत्तम कूं भोग देतीहै सो पुरुषसें अलग होय करिकें देतीहै
तन्मयि होय करिकें भोग नही देतीहै १ जैसो काजलसें कालो कलंक
यिहै तैसेंही तन मन धन बचनादिकसें बहुरि जेता तनमन धन
कका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै तासें अज्ञान तनमईहै १
सें स्वच्छ दर्पणमे कृष्ण वस्त्रकी प्रतिछाया काली
है सो निस दर्पणकी नाही कृष्ण वस्त्रकीहै सो कृष्ण वस्त्रसें तन्मयिहै
ही स्वच्छ सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव दर्पणमे येह द्रव्यकर्म भावकर्म
यि संसारकी प्रतिछाया कर्म कलंकमयि तन्मयि वत्सी दीखतीहै सो
च्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणकी नाहीं द्रव्य कर्म भाव कर्मनो

हृदय हानमैनहीआवै १ तथा जबतक है अज्ञान तबीतक कुटंम कबीलाभा
ईहै ज्ञानहुवातो आतमा आपमै आपसमाईहै १ जैसैजैसी प्रीत प्रेम-
घर कुटुंब बेटाबेटीसैहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमासे तन्मयि
प्रेम प्रीत अचलहोय तो सहजविनायतन विना परिश्रमही संसार रुभारु-
भसै प्रेमराग टूटजाय १ जैसै सूर्यके सहजही अंधकारका त्यागहै तैसै
ही स्वसम्यक् ज्ञान सूर्यके सहज स्वभावहीसै येह भ्रमजाल संसारहै ताका
त्यागहै १ जैसै कोहू पुरुष ऽस्त्रीकूं भोगताहै परंतु आप स्त्रीसै बहुरि ता-
का भाव क्रिया कर्म फलसै तन्मयि तत्स्वरूप होय करिकै स्त्रीकूं नही भो-
गताहै तैसैही स्वसम्यक ज्ञानमयि परमब्रह्म परमातमा पुराण पुरुषोत्तम
पुरुषहै सो सर्व संसार भ्रम जाल माया स्त्रीकूं भोगताहै परंतु संसार भ्र-
मजाल मायासै जैसै अंधकारसै सूर्य भिन्नहै तदवत् संसार भ्रमजालमा
यासै भिन्न होकारे भोगताहै अर्थात् संसार भ्रमजाल माया स्त्रीसै अरता

स्वशरीरपै गिरे तोबी चलायमान नही हुये सर्वांगमै जिनके सर्प और वृ-
क्ष लता लपटगई मौनचलरहित इत्यादि अवस्था पर्यंत पहोंचगये येक-
वर्ष पर्यंत खडेरहे तथापि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानानुभवकी
परमावगाढतासै तन्मयि नही भये कारण ताके अंतः करणमै सूक्ष्म अनि
र्वचनीय येह वासना रहीके मै भरतकी प्रथ्वीके ऊपर खडाहूं पूर्वोक्त दि
शा अवस्थासै सर्वथा प्रकार भिन्न हुये तब स्वसम्यक ज्ञानानुभवकी परमा
वगाढतासै तन्मयि सूर्य प्रकाशवत् मिले १ गुरू भ्रमजाल संसारसै सह
जही भिन्न करदेताहै १ जैसै जलकुंडमै जलकेऊपर तेलबिंदू तरताहै तैसै
ही लोकालोकजगत संसारकेऊपर वा पंचभूत वा पुद्गल पिंड भाव राग द्वेष
केउपर तथा काम क्रोध कुशील आदिक जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया क
र्म है अरताका जैसा तैसा फलहै ताके सर्वकेऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप परमब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठी तरता

रहै ताकीहै सोतासै तन्मयिहै १ जैसै स्वच्छ दर्पणमै अग्नीकी प्रतिछाया
तन्मयिवत्सी दीखतीहै तासैतो वो दर्पण तोगरम उष्णनहीहोते वहुरि-
तिसही स्वच्छदर्पणमै जलनीरकी प्रतिछाया दीखतीहै तन्मयि वत्सी
तासै तो दर्पण शीतल नही होते तैसैही स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमै
काम कुशीलादिक रागमयिकी छाया भावभाष होते संते तोरागमयि हो-
तेनाही वहुरि शील व्रतादिक वैरागमयिकी छाया भावभाष होतेसंते वै
रागमयि होते नाही ऐसैस्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसै येह राग द्वेष-
तन्मयि नाही १ जैसै जलमै चंद्र प्रतिविंबहै सो पकडवामै हस्तमै नही आ
वै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्ठी द्रव्यकर्म भावकर्म नो कर्मादि
क वंधमैनहीआते १ जैसै गोमटनाम पर्वतकेऊपर वाहुवली राजसंपदाछो
डकरिकै धनधान्य स्वर्ण रतनादि वस्त्र पर्यंत वाह्य परिग्रह छोड करिकै
नग्नदिगंबर होय करिकै खडेरहे ध्यानमै ऐसालीन रहेजो वज्र पातादिक-

हु निकस करिकै बाहिर सडक चोगानमै दिलका दिलमै येह बिचार कर
ताहै के घरजलगयो बलगयो अर घरके भीतर शुभाशुभ अमुकी अमु
सो बीजलगई बलगई अब किसकूं क्या कहू यदि कहू तो·
क्या वह वस्तु अब अमुकी शुभाशुभ लाभ होणे की नाही वास्तै बोल
वृथाहै तैसै ही कोहु मुमुक्षु गुरुपदेशात् भ्रमजाल संसारसै अल
बिचार द्वारा देखताहै के पुद्गल धर्माधर्माकाश काल इन
पांचमै ज्ञानगुण स्वभावहीसै नाही अर मेरा स्वरूप स्वभावहै सो अब
गुरु कृपाद्वारा ज्ञानसै तन्मयिहै वास्तै बोलणा वृथाहै ऐसै कोहु मुमु-
क्षु नबोलताहै १ जैसै ज्वरके जोरसै भोजनकी रुचिजाय तैसैही मोह
कर्मसै अपणा स्वभाव सम्यक ज्ञान कूं येक तन्मयि समजताहै मानता
है कहताहै ऐसा मिथ्या दृष्टीकू स्वस्वरूप सम्यक ज्ञानानुभव सूचकउ
पदेस प्रियनही लागतेहै १ जैसै सूर्यका प्रकाशमै अनेक प्रकारकी शु

है सोकैसो इसभ्रमजालसंसारमै डूबैगा वा कैसै गुप्त ह्वैवैगा १
घटकहिये घीवको घटकोरूपनघीव नैसैत्यौंबर्णादिकनामरसै जडुनारू-
हनजीव १ जैसोरवांडोकहियकनको कनकम्यानसंजोग ॥ न्यारोनि
ररवनदेरिवये लोहकहसबलोक॥२॥ जैसैकोहू अग्नीसे जलताहुवा-
घरमैसै निकस करिके बाहिर सडक वा मारग चोगानमै रवडोरहकरि पुका
रतोहैके वाबस्तुजलतीहै अमुकी बस्तुबलतीहै तासै कोहु कहके तूं तो
नहीजल्यो नही बल्यो तूंतो नही जलताहै नही बलताहै तबघो कहके मै-
तोनही जलताहूं नही बलताहूं मैनो नही जल्यो नही बल्यो येह घरजलता
है बलताहै अर घरके भीतर अमुक अमुक बस्तू जलती १
कोहु मुमुक्ष गुरुपदेशात् इस भ्रमजाल संसारसे अलग होय करिके ऐ
से पुकारताहे के घो मरयो वो मरताहै मैतो नहीमरयो नमरताहूं इत्यादि-
कोहु मुमुक्षनो ऐसाबोलताहै बहुरि जैसै बलता जलताहुवा घरमैसैको

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट न करते संते ही सदा काल
गतीज्योतिका तन्मयि मेल करादेताहै धन्य है गुरु १ बेद कहिये केव-
लीकी दिव्यध्वनी सास्त्र कहिये महा मुनीका बचन तिनसेंवी सो स्वस्व-
रूप सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म
नही जाणवामै आवै बहुरि वो सम्यक्ज्ञान मयि सदा काल जागतीज्यो
ति परमातमा है सो पांचयंद्री षष्ठम मनसेंवी मन स्वानुभव नही जाण-
वामै आवै बहुरि सतगुरु सहज स्वभाव ही सै बिना परिश्रम ही
काल जागतीज्योति ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीकी तन्मयि-
ता कर देताहै गुरु धन्य है १ मनकूं बडे आश्चर्य होताहै क्याके पांच इंद्र
षष्ठम मनसैं अर केवलीकी दिव्यध्वनीसे बहुरि
दणे वाचणेसैं तो वो सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति नहीं·
जाण वामै आवै फेर गुरु कैसे दीरवाजे होगे कैसै जनादेते होगे क्या कह

भाशुभ वस्तु काली पीली धोली हरित रतन दीप चमक दमक पाप श्राप
देणा लेणा दान पूजा भोग जोगादिककूं देखताहै अर सूर्यका प्र-
कासकूं अर सूर्यकूं नही देखताहै सो मूर्खहै तैसैही स्वस्वरूप सम्य-
क् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमै येह लोकालोक जगत संसार का
कुशील क्रोध मान माया लोभादिक दीखताहै ताकूं तू मिथ्या दृष्टी दे-
अर पलटवा उलट हो करिके स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि स्वभा
व सूर्य परमातमाहै ताकूं नही देखताहै सोही मिथ्या दृष्टीहै १ स्वभा
व सम्यक्ज्ञानहै तासै कोई वस्तु तन्मयि नाही उसी वस्तु का स्वभाव स-
ज्ञानके त्यागहै १ मरजावै जलजावै गलजावै बलजावै इत्यादि
अनेक प्रकारका शुभाशुभ कष्ट करते संतेषी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्यस
ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठीका प्रतक्ष्यानुभवकी
अचलताका अखंड लाभ नही होवै सतगुरु महाराजस

भाव सम्यक् ज्ञानसे भिन्न समज करिके पश्चात् विषय भोगादिकसे अ
तन्मयि होय करिके विषय भोगाकी संगति करे सोजीव परम पवित्र शुद्ध
होजातोहै १ वस्तु स्वभावमे येह शुद्धाशुद्ध है सो स्यात् कथंचित् प्रका
र १ स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूसे तूं
ह वह च्यारशब्द तन्मयीनाही १ जैसे काहू सूर्यका प्रकाशमेसे येक अ
णुरेणु उठाय करिके अंधकारमे क्षेपदे तासे तो सूर्योदय कुछ कमती हो
तेनाही बहुरि कोहू अंधकारमेसे येक अणुरेणु
शमे क्षेपदे तासे सो सूर्योदय बढी होते नाही तेसेही स्वस्वरूप
गम्य सम्यक् ज्ञान सूर्योदयमेसे येह अनंत संसार निकस करिके कहु क
हांजाते रहता सेतो सोसम्यक् ज्ञान सूर्योदय शून्य कमती होते नाही व
हुरि कहु कहांसे येह संसार है तेसाही और अनंत संसार स्वस्वरू
क् ज्ञान सूर्योदयमे आय पडे तासे सोसम्यक् ज्ञान सूर्योदयकी वृद्धी

तेह्नोगे अर शिष्यबी कैसैसमजताहोगा हाहाहाहा गुरु धन्यहै हाय खे-
द गुरु नही होतेतो मैइस भ्रमजाल संसारसे भिन्न कैसे होता १ जैसे
कके अंकबिना बिंदु प्रमाणभूतनाही तैसैयेकगुरुविना

सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूतनाहीं १
जैसै बीजराखि स्रख भोगवै जोकिसाण जगमांहि तैसै स्व स्वरूपी
क ज्ञानमयि सम्यक दृष्टीहैसो अपणा आपमै आपमयिस्वभावधर्म
कूं आपका आपमै आप मयि समजकरिकै पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय-
भोगादिकका स्रख भोगताहै १ जैसे स्रपेद काष्ट अग्नीकी संगतीसे
ष्ण काला होजाताहै कोयला होजाताहै फेर कारणपाय पलट करिकै
संगती करैतो कोयला जलबल करिकै स्रपेद खाक होजातेहै तै-
कोहूजीव विषय भोगादिककी संगती पायकरिकै अशुद्ध हो
करिके गुरु आज्ञा प्रमाण विषय भोगादिक कूं अपणा स्व-

थ्या दृष्टी है बहुरि जैसै सूर्यसै अंधकार भिन्न है तदवत् कोई पापपुन्य
सै भिन्न होय करिकै पश्चात् पाप पुन्य पूर्व कर्म प्रियोगात् कर्त्ता है सो ज्ञा
नी सम्यक्ज्ञान दृष्टी है १ जैसै ज्येष्ठ वैशारव मासमै मध्यान्ह समय सू
र्यका प्रकाशमै मरूस्थल भूमिमै मृगमरीचका जल दीरवता है तदवत्
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यका प्रकाशमै येह लो
कालोक दीरवता है ज्ञानकूं १ अभेदमै अनेकभेद अभेदसे तन्मयि जै
सै वृक्ष अभेद ताहीसै तन्मयि अनेकभेद मूल सारवा लघु सारवा फल॰
पत्र फलमै अनेक फल अनेक फलमै अनेक वृक्ष येक येक वृक्षमै अने
क लघु दीर्घ सारवादिक अनंत भेद है तैसै ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य॰
सम्यक् ज्ञानमयि जिनेंद्र मूलमै अनंतजीव राशी भेद है सो जिनेंद्रसै त॰
न्मयि अभेद है १ जैसै गंगा यमुनादिक नदी समुद्रसै मिली है तैसै ही गु
रूपदेस पाय करिकै सम्यक् दृष्टी जीव जिनेंद्रसै तन्मयि मिले है १ जैसै॰

१ अवधिज्ञान १ मनपर्ययज्ञान १ केवलज्ञान १ ऐसैहे ज्ञान तूसर्वसं
सारस्वांगसे स्वभावहीसैभिन्नहै तू मनुषनाही तूं देवनाही तूंतिर्यंच
तूं नारकीनाही तूं स्त्रीपुरुषनपूंसकनाही बहुरि मनुष्यादिक अरस्त्रीपु
रुषनपूंसकका जेताशुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहे सोबी तूं ना
ही तूं तो येक निर्मल निर्दोष निराबाध शुद्ध परम पवित्र ज्ञानहे जैसे का
चकी हांडीमे दीपकहै ताका प्रकाश काचकी हांडीके भीतर बाहिर दोहु
तरफहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान दीपिकाको प्रकाश लोकालोकके
र बाहिर दोहु तरफ येकसोहीहै १ जैसे स्ववर्णकी छुरीसे बी कलेजा-
फट जातेहे अर लोहाकी छूरीसे बी कलेजा फटजाते है तैसैही ज्ञान म-
जीवका पापसैबी भला नाही होने अर पुन्यसैबी भला नाही होने १
॥ ॥प्रश्न॥ ॥ पापपुन्यकरणाके नाही करणा उत्तर पापपुन्य
अग्नीउष्णतावत् येक तन्मयि होय करिके पाप पुन्य कर्ताहे सो

दृष्टी आपअपणा अंतः करणमै येह निश्चय समजताहै मानताहै के
ह बहिर दृष्टिवान् मेरेकूं स्त्री पुरुष नपूंसकादिक मानतेहै कहताहै
नताहै सो वृथाहै मेरो स्वभाव सम्यक् ज्ञानहै सोतो नःस्त्रीहै नपुरुषहै
न नपूंसकादि कोई बी किंचित् मात्र स्वांग मेरा स्वरूप सम्यक् ज्ञानसे त-
न्मयि नाहीं १ जैसै येक पुरुषतो निर्मल नीरका भऱ्या तलावके किनारे
तिष्ठे हुये इच्छा प्रमाण निर्मल नीर प्रतिदिवस पीय कारिके स्रवीहै बहु
रि जो कोई पुरुष तलावसे लक्षयोजन भिन्न येक क्षीरोदधि समुद्र निर्म
ल नीरको भऱ्योहै ताके किनारे तिष्टे हुयो इच्छा प्रमाण।
करिके स्रवीहै तैसैही संसारमै पूर्वकर्म प्रयोगात्
प्रमाण लालपर्यंत रहणेवाले सम्यक् दृष्टीका बहुरि संसारसे
क्षहै नामै रहणेवाले स्वसम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टीका अर्थात्
दोहूका स्रव समसमानहै १ जैसे दुग्धका भऱ्या कलसमै येक नील·

येक स्कवर्णसे अनेकनाम कडा मूंदडा कंठी दोरा असरफी कांचन कन
क हेम आदिहै सो तन्मयिवत्‌है तैसेंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क्‌ज्ञानमयि स्वभाव बस्तुमें येह जिनेंद्र शिव शंकर ब्रह्मा ब्रह्म बिष्णु
नारायण हरि हर महेश्वर परमेश्वर ईश्वर जगन्नाथ महादेव आदि अनं
त नाम तन्मयिवत्‌है १ जैसे कोई पुरुष ऽस्त्रीका कपडा बस्त्र आभूषणा
दिक धारण करिके अर्थात्‌ स्कंदर देवांगनावत्‌ बणकरिके नाटिककी
रंगभूमिमे नाचणे लग्यो तत्‌ समय नाटिक देखणे वाले पुरुष मंडलीक
हताहैके होहोहो ध्या स्कंदर स्त्रीहै ऐसा बचन सभा मंडलीका श्रवण
करिके सोस्त्री स्वांग पुरुष आप अपणे दिलमें जाणताहै मानताहै के
मेंऽस्त्री मूलहीसे नाही येह सभामंडलीके पुरुष मेरा निजस्वभावगुण-
लक्षणतो जाणते नाही बिना समजसे येह मेरेकूंऽस्त्री कहताहै मान
ताहै जाणताहै सो वृथाहै तैसैंही स्वस्वभाव सम्यक ज्ञानमयि सम्यक्‌-

जनाहै माननाहै कहताहै तैसैंही आकास अमूर्ति निराकार अजीव म·
यिहै ताका बहुरि स्वसम्यक ज्ञानमयि अमूर्ति नीराकारजीवमयि है
ताका परस्पर अमूर्ति अमूर्तिपणा बहुरि निराकार नीराकारपणा·
येक तन्मयिवत् मिथ्या दृष्टीकूं भाष होताहै परंतु सूक्षम
जो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानी सम्यक दृष्टी दोहू
कूं बहुरि दोहु नीराकारकूं भिन्नभिन्न समजताहै माननाहै
१ परमातमा स्वसम्यक ज्ञान मयि हैसो आदि अंत पूर्ण स्वभाव सं
युक्तहै येह परसंजोग पररूप कल्पना रहित मुक्तहै ॥ प्रश्न केसे
है उत्तर श्रवणकरो जैसे प्रथम आदिमे पूर्णचिन्ह बिंदु है सोकी
सोही अंतमेबी पूर्णचिन्ह बिंदूहै देखो स्वानुभव दृष्टीके द्वारा आदि
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० अंत १ बहुरि जैसे सूर्य प्रात काल
है सोही सूर्य सायंकाल अंतहै तो क्या मध्यान्हकाल नहीहै अर्थात

मणी रत्न डालदीजिये तब दुग्धका अर नील मणी रत्नका रंग अर दुग्ध-
का रंग येकसा ही नीलमणी रतन तेजवत् समान भाष होताहै तैसै ही-
ज्ञान ज्ञेय येकसा भाष होताहै परंतु ज्ञान अज्ञान कोई प्रकार-
बी येक तन्मयि होने नाही १ जैसे माटीका घटमे घृत भर्‍यो
ए तिस घटकूं घृत घट कहतेहै कहो भला परंतु घट माटीको माटीमयिहै-
माटीका घटके अर घृतके अग्नीउष्णतावत् येक तन्मयिता हुई नहोवैगी न-
है तैसै ही ज्ञानमयि जीवके अर अजीवज्यो तन मन धन बचनादिकके अर
जेता तन मन धन बचनादिकका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै ताके
स्पर सूर्य प्रकासवत् नयेक तन्मयिता हुई अर नहै नहोवैगी १ जैसे ला-
ल लाखके ऊपर लग्यो लाल रतन तार तनमे लाखकी लाली अर रतनकी-
लाली दोहू लाली येकसी तन्मयिवत् दीखतीहै परंतुहै वह दोहू लाली
भिन्नभिन्न ताकूं असल जहोरी होताहै सो दोहू लालीकूं भिन्नभिन्न सम

क्षकूं गुरुपदेस द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानानुभवकी
प्रामकी प्राप्ति ताकी अचल अवगाढताहुई ताको मन ऐसो हो जातोहै·
के ऊपरतो व्यवहार करै पण भीतर स्वप्नसमानजूं भाषै तथा ताको
ऐसो हो जातोहैके मेरो मनहै परंतु मै मननाही बहुरि मनका जेता शु·
भाशुभ व्यवहार है सोबी मै नाही अर जेता शुभाशुभ व्यवहारका सु
ख दुःख फलहै सोबी मैनाही बहुरि मैहै सो येक येह शब्द है वास्तै मै
शब्दकूं अर मनादिककूं जाणताहै सोही सोहं अभ्रस्थल पर्यंत मनहो
जाताहै· १ जैसे मैला मल मूत्रमे रतन पड्योहै ताकूं लेणा जोगहै म
ल मूत्रकी मैलाई दुर्गंधि तासै अपणा द्वेस गिलान भाव धारण करिकै·
रतनकूं नही ग्रहण कर्ताहै सो मूर्खहै तैसैही तन मन धन वचनादिक·
मे पड्योहै स्वसम्यक् ज्ञान रतन ताकूं कोई तन मन धनादिकका शु·
भाशुभ विकार देख करिकै ताकी गिलान धारण करिकै स्वसम्यक् ज्ञान

तैसैही स्वसम्यक ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य सदाकालहै १ "जैसैजैसोपी
वैपाणी तैसैतैसी बोलैवाणी" तैसैही जिसकूं गुरूपदेस द्वारा आप
का आपमें आपमयि स्वसम्यक ज्ञानानुभवकी प्रामकी प्राप्ती अचल
हुई सो स्वमुखवात् ऐसै बोलताहै के स्वसम्यक ज्ञानमयि परमातमाहै
सोही सोहं प्रश्न ऐसैतो बहुतसे बाल गोपाल बोलताहै उत्तर
जैसे रात्री समय येक स्वान प्रत्यक्ष चोरकूं देख करिके भूक भूक बोल
ताहै ताका शब्द श्रवण करिके सहरमे बहुतसे श्वान तद्वत् ही भुक-
भूक बोलताहै तैसैही स्वसम्यक ज्ञानानुभव ज्ञानीका स्वमुखवात् शा-
ब्द श्रवण करिके सम्यक ज्ञानानुभव रहित मिथ्या दृष्टीबी ऐसैही बो
लताहै केहमही परमातमाहै मिथ्यादृष्टीकूं येह निश्चय नाहीके शा-
ब्दके अर सम्यक ज्ञानीके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद है १
बहुरि "जैसैजैसो खावै अन्न ताकै तैसो होवै मन्न" तैसैही किसी मुमु

नमयि परमातमाका नाही १ जैसै नवका रंगरंगीलीहै सोबी पारउता
र देतीहै बहुरि रंगरंगीली नवका नहींहै सोबी पार उतार देतीहै तैसैही
स्वानुभव ज्ञानमयि कोहू गुरुहै सो न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य
छंदादिक युक्तहै सोबी संसार सागरसे पार उतार देताहै बहुरि कोहु गु
रुहै सो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवि परंतु न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार का
व्य छंदादिकरहितहै सोबी संसार सागरसे पारउतार देताहै १ जैसेगो
रस अपणे दुग्ध दही घृत माखण आदि पर्यायसै भिन्ननाही बहुरि
दुग्ध दही घृत माखण आदिकहै सो गोरससे भिन्ननाही तैसेही स्वस
म्यक् ज्ञान मयि परमातमासे सुख स्वसत्ताचेतन जीव ज्ञानादिक भि-
न्ननाही बहुरि सुख स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादि कहै सो स्वसम्यक्-
ज्ञानमयि परमातमा भिन्ननाही १ जैसे नाख्यो धूलीकूं धोवणेवालो
सुवर्णकी कणिकाकूं नही जाणताहै तो इच्छा आवे जेता कष्टकरो धू

रतनकूं तन्मयीधारण नही कर्ताहै सो मूरखं मिथ्यादृष्टीहै १ जैसे कोई
कहीके सूर्य कहां रहताहै ताको उत्तर ऐसो हैके सूर्य सूर्यके भीतर तन
मयी रहताहै तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान सूर्यहै सो स्वसम्यक्ज्ञान सूर्यही
मे रहताहै निश्चयनयात् १ जैसे पुष्पमे सुगंधहै तथा जैसे तिलमे तै
लहै वा जैसे दुग्धमे घृतहै तैसेही यह लोका लोकहै तामे तथा तन मन
धन बचनहै तामे बहुरि तन मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार
क्रिया कर्महै तामे अतन्मयि सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक्ज्ञानहै १
हे मुमुक्ष मंडलीहो स्वसम्यक्ज्ञानसे तन्मयि होयकरिके देखो कोबि
धि को निषेध १ जैसे दर्पणमे काला पीला लाल हरित आदि अने
करंग बिरंग बिकार दीखताहै सो दर्पणका तन्मयि नाही
स्वसम्यक्ज्ञानमयि दर्पणमे यह राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ का
म कुशीलादिकका बिकार तन्मयि सा दीखताहै सो स्वच्छ सम्यक् ज्ञा

रणकौ असमर्थहै जो दोहूकी येकता हुई तो जलावणेकी क्रिया विषै
समर्थ होय तैसैही सतगुरू उपदेसात् केवल ज्ञानगुणीका अर ता·
कागुण देखणाजाणनेका अर्थात् दोहूकी येकता तन्मयिता होय त·
ब सहज स्वभावहीसे अष्टकर्म काष्टकूं जलावणेकी क्रिया विषे सम·
र्थहोय १ जैसे सूर्य मेघपटल करिके आच्छादित हुवा प्रभारहित क
हियेहै परंतु सो सूर्य अपणे स्वभावतै तिस प्रभासे त्रैकाल भिन्न होय
नाही तैसैही स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्यके करम भरम वा द्रव्यकर्म
भावकर्म नोकर्मस्वरूपी बादल पटल करि आच्छादित हुवा ताकूं ज्ञान
प्रभारहित कहियेहै परंतु सो स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्य अपणा
आपमै आप मयि आपकागुण स्वभाव ज्ञान प्रकाशसै त्रैकाल कोई प्र·
कारबी भिन्न होय नाही १ जैसे पाचक होतीसीजती हांडीमैसे येकचा
वल देखिये तो सीजगयो तो सीजताहुवा सर्वचावलकोनिश्चयानुभवहो

ली धोवणे का उनकूं कदाचित् वी स्वर्ण लाभ होने नाही तैसैही कोई
मुनी साधू सन्यासी भोगी जोगी ग्रहस्ती आदि कोई स्वसम्यक् ज्ञानमयि
परमातमाकूं तो जाणने नाही अर व्रत जप तप ध्यान दान पूजादिक-
का बहुप्रकार कष्ट करते है तो करो उनकूं कदाचित् वी स्वसम्यक् ज्ञानम
यि परमातमा को लाभ होते नाही १ जिस जती व्रती जोगी जंगम मु
नी परमहंस वा भोगी ग्रहस्ती आदि भेषमै स्वसम्यक् ज्ञानानुभव अ-
चल हुवा सो जती व्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस भोगी ग्रहस्ती ध
न्य है धन्य है धन्य है सहस्रबेर धन्य है १ जैसे अग्नि द्रव्य है तामे उष्ण-
ताका गुण है जो इस अग्नि उष्ण गुण विषे भिन्न भई तो इंधनकूं जलाय
न शके जो कदाचित् अग्नीसे उष्णगुण भिन्न होय तो काहे करि जलावै
अग्नी भिन्न हुई तो उष्णगुण किसके आश्रय रहे निराश्रय हुवा वह वी
जलावणेकी क्रियाते रहित होय गुण गुणी आपसमे जुदे हुये कार्यका

स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि प
थंचित् प्रकार तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि प
रमातमा स्वस्वभावमें नउपजेहै नबिनसैहै बहुरि तिसहीसैं तन्मयि
जीव चेतनादिक पर्याय है सो उपजैहै बिनसैहै सोबी कथंचित् प्र
कार १ जैसें समुद्र अपणे जल समूह करि उत्पाद व्यय अवस्था कूं ना
हीं प्राप्त होना अपणे स्वरूप करि स्थिर रहै है परंतु च्यारही दिशा
नकी पवन करिकें कल्लोल का उत्पाद व्यय होयहै तोबी सदा नित्य टं
कोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञा
नार्णव केवल ज्ञानमयि समुद्र अपणे स्वगुण स्वभाव समरस नीरस
मूह करि उत्पाद व्यय अवस्था कूं नाही प्राप्त होना अपणे स्वरूप क
रि स्थिर रहैहै परंतु मनुष देव तिर्यंच नारकी येही च्यार दिशानकी पव
न करिकें संकल्प विकल्प राग द्वेषादिक कल्लोल का उत्पाद व्यय होयहै
तोबी सदा नित्य टंकोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै १ जैसैं सुनार आभूषण

जाता है के सर्व चावल सीजगये तैसैही अनंत गुण मयी स्वसम्यक ज्ञा
न परमातमा ताकायेकबी गुण को किसी कूं गुरुपदेस द्वारा अचला
नुभव हुवो तो निश्चय समजणा के जेता परमातमा का गुण है ते नास
वे गुणाका ताकूं अचलानुभव हो चुक्या १ जैसे घटके प्रथम कुंभ
कार है तैसे तन मन धन बचनके बहुरि जेता तन मन धन बचनका शु
भाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मके प्रथम आदिनाथ स्वसम्यक ज्ञानम
यि परमातमा है १ जैसे कुंभकार घट चक्रादिकसै तन्मायि होय करि
के घटकर्म कूं नही कर्ता है तैसैही स्वसम्यक ज्ञान मयि परमातमा है
सो तन मन धन बचनादिकसै तन्मायि होय करिके शुभाशुभ व्यवहार
क्रिया कर्म नही कर्ता है १ जैसे नय दोय है येक द्रव्यार्थिक येक पर्या
यार्थ जैसे सुवर्ण स्ववर्णत्त करिके न उपजे है न बिनसै है बहुरि ति
सही सै तन्मायि कटि काटि कादिक पर्याय बिनसै है उपजे है सो येक

गभूमिमैजीवाजीवपुष्पगंधवत् येक होय करिके
नाचताहै ताकूं सतगुरु ज्ञाता कहीके तूं तो जिस्मे ज्ञानगुण तन्मयि
तूंहै येह मनुष देव तिर्यंच नारकी या स्त्री पुरुष
तूं स्वांग नाही बहुरि स्वांगका अर तेरा सूर्य प्रकाशवत् येक
नाही तूं इस स्वांगकूं जाणताहै येह स्वांग तेरेकूं जाणते नाही तूं
बहुरि येह मनुष्यादिक स्वांगहै सो अज्ञान वस्तु है जैसे सूर्यांधकारका
मेल नाही तेसै येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका अर तेरा येक मेल नाही
सूर्य प्रकास इस पृथ्वीके ऊपर है ताका अर पृथ्वीका मेल है तैसे हे ज्ञा-
नसूर्योदय तेरा अर येह मनुष्यादिक स्वांग है ताका मेल है हे ज्ञान देख
जाल संसार स्वांगसे व्यतिरेक भिन्न है श्रवण करि समज मैं क
हताहूं अंतमै दोय अक्षर आवै ताके द्वारा तेरा तूं ही स्वानुभव लेणा
मति ज्ञान १ कुश्रुति ज्ञान १ कुअवधि ज्ञान १ मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान

ते नाही १ जैसे येक दीपक के बुज जाएगेसे सर्व पूर्ण अनंत दीपक नहीं
बूजते तैसेही येक जीव के मर जाएगेसे सर्व पूर्ण अनंत जीवसे
नेंद्र मरते नाही १ सर्व भाव पदार्थ या द्रव्यक्षेत्र काल भय भाव भोगजोग
पाप पुन्यादिक संसार है तासे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ ज्ञानमयि
स्वभाव वस्तु तन्मयि नाहीं वास्ते स्वस्वरूप ज्ञान हैसो सर्व संसार पाप पुन्य
भाव पदार्थादिक जेता शुभाशुभ व्यवहार है ताको निश्चय स्वभाव ही
से त्यागी है स्वसम्यक्‌ ज्ञान है ताके परवस्तु का सहज स्वभाव हीसे
है कैसे जैसे यथानाम कोपि पुरुषः परद्रव्यमिदमिति ज्ञात्वा त्यजति त
थासर्वान् परभावान् ज्ञात्वा विमुंचति ज्ञानी १ जैसे नाटिक की रंगभूमि
मे कोहु स्वांगधारण करिके नाचता है ताकूं कोहू ज्ञाता जाणलेके तूं तो-
अमुका है तबवो स्वांगधारक पुरुष नाटिक की रंगभूमि मेसे निकस
के यथावत् जैसा को तैसो होय करिके रहता है तैसेही येह लोकालोक रं

हताहै तोबी चंदन अपणा गुण स्वभाव सुगंध पणा शीतल पणा कूं-
छोड करिके जहर विषमयि विषवत् होते नाही तैसैही स्वसम्यक् दृ
ष्टीके पूर्वकर्म प्रयोगात् शुभाशुभ कर्म लाग रहाहै तिस करिके तिस
सैं तन्मयि होते नाही १ जैसै सूर्यके भीतर सूर्यसै अंधकार तन्मयि
नाही तैसैही स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यके भी
तर अज्ञान तन्मयि नाही १ जैसै जिस नगरमै अज्ञानी राजाहै ताके
ऊपर केवलज्ञानी राजा होसक्ताहै बहुरि जहां केवलज्ञानही राजाहै
ताके ऊपर कोईबी अधिष्ठाता नसंभवै अर्थात् तैसैही स्वस्वरूपी·
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि त्रैलोक्यनाथ परमातमाके ऊपर ता
से अधिक कोई नहै नहोवैगा नकोई हुवो १ जहां भरम होताहै तहां
ही भरम नाहीहै जैसै सरल मार्गमै सायंकाल समयकोहू रस्सीकूं
पडी देख करिके संकावान हुवो के हाय सर्पहै तबकोहू गुरुकेहीके हे·

दिक कर्मको कर्ताहै परंतु आभूषणादिक कर्मसै तन्मयि तत् स्वरूप-
होयकरिकै नाही कर्ताहै तैसैही आभूषणादिक कर्मका फलकू त-
त्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै तैसैही स्वसम्यक् स्वानु
भव ज्ञानी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्म कर्ताहै परंतु तन्मयि तत्स्वरू
प होय करिकै नाही कर्ताहै तैसैही संसार का शुभाशुभ कर्म का फल
से तत्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै १ अधुनाचेत् २
वस्तु का स्वभाव बचनसे तन्मयि नाही अर्थात् वचन गम्य नाही लोका
लोककूं बहुरि जेता लोका लोकमे अपणे अपणे गुण पर्याय सहित
द्रव्य अचल अनादिसे जैसाहै तैसा ताकूं येकही समयमै सहजही नि
राबाधि पूर्वक जाणताहै देखताहै सोही सर्वज्ञ देवहै ऐसा सर्वज्ञ देव
से तन्मयि होयकरि तिसही का स्वस्वानुभव ज्ञानमे लीनहै सो संदेहसं
काउपजावने नाही १ जैसै चंदन वृक्षके जहर विषमयि सर्प लपटार

बत्स भय मति करै येह तो रस्सीहै सर्पनाही १ तन मन धन बचनसे
बहुरि तन मन धन बचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै
तासें तत्स्वरूप तन्मयि होणेकी जिसके स्वभावसैंही इच्छा नाहीसो नर-
ज्ञानीहै १ कर्तासें होवे तिसको नाम कर्महै दान पूजा व्रत जप तप सामा
स्वाध्याय ध्यानादिक शुभकर्महै पाप अपराध चोरी हिंसा कुशी-
लादिक अशुभ कर्महै अर्थ येहके शुभाशुभ कर्मको कर्ताहै सो शुभा-
शुभ कर्मसे अग्नीउष्णतावत् येक आपकूं तन्मयि समज करिके मानके
कर्ताहै सोतो मिथ्यादृष्टीहै बहुरि शुभाशुभ कर्मसे आपकूं सर्व
था प्रकार भिन्न समज करिके फेर शुभाशुभ पूर्व प्रयोगात् कर्मकर्ताहै
सो स्वसम्यक्दृष्टीहै १ जैसें सूर्यके भीतर प्रकास तन्मयिहै तैसे जिसब
स्तुमें देखणे जाणने का गुण तन्मयिहै सोही बस्तु दर्शणहै और बस्तकूं
दर्शण मानताहै समजताहै कहताहै सो मूर्ख मिथ्यादृष्टीहै १ जहांतलक

दृष्टां·

घरमे अंधकारहे तहांही प्रकाशहै क्यूंके प्रकाशनही होते तो
की खबर कैसे होती कैसे जाणते जिसका प्रकासमे सूर्य दीखताहै
अर अंधकार आदि दीखताहै सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्-
ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीहै १ जैसे जहां पृथीके
र कूप खोदेगा तहांही पाणी नीर निकलताहै तैसेही तन मन धन
नादिकके भीतर बहुरि तन मन धन बचनादिकका जेता
वहार क्रियाकर्महै ताके भीतर आकाशवत् व्यापक स्वसम्यक्
ब्रह्मकूं कोई खोजेगा तो प्रगट प्रसिद्ध होताहै १ शरीर पिंडसे
क् ज्ञानमयि परमातमा तन्मयि होते तो कदाचित् कोई प्रकार बी कोइ बी
नही मरते तथा येह लोकालोक जगत संसार दीखताहै तासे सो स्वस-
म्यक् ज्ञानमयि परमातमा तन्मयि होते तो हरकिसीकूं दीखतो हो हो·
हो ऐसा अपूर्व बिचारकी पूर्णता श्रीसद्गुरूके चरणकी शरण बिना

होगी १ जैसै जहालग पक्षीके दोय पक्ष तन्मयिहै तहांपर्यंत
इदर उदर भ्रमताहै उडता बैठताहै बहुरि जिस समय तिस पक्षीकी दो
हु पक्ष खंडन निर्मूल होजाय तव सो पक्षी इदर उदर भ्रमण
होय जहांको तहां स्थिर अचल रहताहै तैसैही जहां पर्यंत जीवके निश्च
य व्यवहार की तन्मयिताहै अवगाढताहै तहा पर्यंत च्यारगती चवरासी
लक्षयोनिमै भ्रमण कर्त्ताहै बहुरि जिस समय जिस जीवके काल
पाचक द्वारा तथा सतगुरूके उपदेस द्वारा निश्चय व्यवहारकी पक्ष खंड
न निर्मूल होवैगी तत्समयही च्यारगति चवरासी लक्षयोनीमे भ्रमण-
कर्त्ते रहित होय जहांके तहां अचल स्थिर रहताहै १ जैसै उडद मुंगकी
दोय दाल हुये पश्चात् मिलते नाही अर बोवै तो उगते नाही तैसैही जीवा
जीवकी जहां सर्वथा प्रकार भिन्नताहै गुरुप्रसादात् तहां
तन्मयिता येकता नाही दोहूकी येकतासै संसार उत्पन्न होतेथे सो अव

होणेको नाहीं १ जैसै आंधाके स्कंधाके ऊपर बैठे पांगुलो इहां विचार करो देखो अंधातो चलताहै अर पांगुलो देखताहै तैसेही अंधवत् ये चक्र ताके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान सो पांगुलावत् संसार चक्रके उपर बैठेहुवो केवल देखता जाणताहै १ देखणा जाणना येह निज धर्म केवल ज्ञानकाहै १ प्रश्न संसारकूं चक्र संज्ञा कैसेहै उत्तर जाग्रतमे येह संसार दीखताहै सोही पलट करि के स्वप्नामे दीखताहै बहुरि जो संसार स्वप्नामै दीखताहै सोही पलट करिके जाग्रतमे दीखताहै ऐसे येह संसार चक्र फिरताहै प्रश्न संसारचक्र किस भूमिकाके ऊपर फिरताहै उत्तर अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् येह संसार चक्र आप आपहीके आधार जल प्रश्न सुसप्ति और तुर्या समय संसार चक्र कहां रहताहै कहा फिरताहै उत्तर येक पुरुष सुलोचन अर्थात् ताके नेत्र तोहै परंतु

के तनमंन धन बचनादिक मूलहीसे नाही ताके आगे येह संसार चक्रभ
मणयुक्त नाचताहै स्वलोचन पुरुष देखताहै परंतु कहता नाही १ जैसे
से कमती ज्यादा भोजन जीमणेसे बेमारी दुःख होताहै तैसेही कोइ
संसारका विषय भोग कमती ज्यादा भोक्ताहै कर्ताहै सोही दुःखी बे-
मार होताहै अर्थात् जहां बराबरका व्यवहार क्रिया कर्म है तहां बिरो
ध भाव नसंभवे १ शब्दातीतका शब्द सूचहै १ जो वस्तु निरंतर है तामे
विधि निषेधको अवकाश कदापि तासे तन्मयि नसंभवे १ जैसे वैद्य पु-
रसहैसो विषकूं उपभोगता संता मरणकूं नही प्राप्त होताहै कारण नि
स वैद्यके समीप दूसरी बिषनासनी दवाई है तैसेही जिसके समीपस्व
सम्यक्ज्ञान तन्मयिहै सो कर्मजनित पूर्व प्रयोगात् विषय उपभोगभो
गते संतेबी मरते नाही १ जैसे सुवर्ण अग्नीसे तप्त होते संतेबी अपणा
सुवर्णपणा आदिगुण स्वभाव छोडते नाही तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान-

दृष्टी पूर्व कर्मप्रियोगात् कर्म बेदना दुःखरूपी अग्नीमे तप्तायमान होने
संतेबी अपणा स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानादिगुण छोडते नाही १ जैसे ज-
लतीहुई तेलकी कढाईमे अपूपायत सूर्यको प्रतिबिंब जलताहे बलना
है तोबी आकाशमे सूर्यहै सो नजलता नमरता तैसे ही संसारमे स्वस्व
सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा मरताहे जनमताहे तो
बी स्वस्वभावे कदाचित् कोई प्रकारबी नमरता नजन्मता १ जिसकी गुरु
पदेसात् स्वभाव दृष्टी अचल हुई सो सहस्त्र बेर धन्य बाद योग्यहै १ जैसे
मदिराके तीव्र व्यसनि भावकूं जाण करिके तिस मदिराकूं कमतीबी नही
पीताहे अरज्यादाबी नही पीताहे इस प्रमाण मदिरा पीवते संतेबी म
दोन्मत्त नही होने तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी मोह मदिराके तीव्र व्यतिभा
वकूं जाण करिके तिस मोह मदिराकूं कमतीबी नही ग्रहण कर्ताहे ब
हुरि अधिकविशेषबी नही ग्रहण कर्ताहे इस प्रमाण मोह मदिराकूं स्व

सम्यक्दृष्टी ग्रहण कर्त्ते संतेबी स्वसम्यक्ज्ञान स्वभावकूं छोड करिकेमो
ह मदिरासे अग्नीउष्णतावत् येकतन्मयि होते नाहीं १ जैसे वृक्षके ल
गेहुये फलयेकबेर परिपक्क होय परिजायतो वो फल फेर पलटकरिके
उस वृक्षके नाही लागतो तैसेंही कोईजीव कालपाय करिके गुरुपदेस
द्वारा अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक्ज्ञानानुभव
पूर्णानुभव होय करिकें येकबेर संसार जगनसें भिन्नहुये पश्चात् फिर
लटकरिके संसारजगनसें तन्मयि होतेनाहीं १ ओरबी तीन दृष्टांत-
द्वारा स्वसम्यक्ज्ञानानुभव लेणा जैसे दहीमेसें माखण घृतभिन्नहुये
पश्चात् पलटकरिके दहीमे मिलतो नाही १ वृक्षकी जड उपडे पश्चात् कु
छ काल पर्यंत फल फूल पत्ता हरित रहताहै परंतु दस पांच दिवसमेस्व
यमेवहि रूक्ष सूक जाताहै १ चणीकचीणा भूजदिये पश्चात् बोवें
तो उगतेनाही अर खावैतो स्वाद लागने १ तिलमेसै तेल निकसे

न् पलट करिके नही मिलते १ इत्यादि०

रतन आदि अनेक वस्तुसै भरया होयहै सो येक जल करि भरयाहै तोहू
तामै निर्मल छोटी बडी अनेक लहरी कल्लोल उठैहै ते सर्व येक जलरूप-
हीहै तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान मयि समुद्रहै सो रतन त्रय सम्यक्क दर्श-
ण सम्यक्ज्ञान सम्यक्क चारित्र येही तीनरतन आदि अनेक
शब्दादिक वस्तुसै भरया होय है सो येक समरस जल करि भरयाहै तो-
हू तामै निर्मल कुमतिज्ञान कुश्रुतिज्ञान कुअवधिज्ञान
न श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मन पर्ययज्ञान केवलज्ञान आदि येही छोटी
बडी तामै अनेक लहरी कल्लोल उठैहै ते सर्व येक स्वसम्यक्क ज्ञानमयि-
स्वसमरस जल नीरहीहै १ जैसे लोद फिटकडी का पुटबिना मजीठरं-
गमै वस्त्र भीजो रहै चिरकाल तोहू वस्त्र सर्वथा नही होवै लाल
व संसारमैहै चिरकालसैहै सो सर्वथा प्रकार कदाचित् कोई

पणा जीव स्वभाव छोड करिके अजीवसै येक तन्मयि होते नाही १ जैसै निश्चय करि सुवर्णहै सो कर्दमके बीच पड्याहै तोहु कर्दम करिके तन्मयि लिप्त होते नाही सुवर्णके तन्मयि काई लागती नाही तैसैही स्वसम्यक् दृष्टी निश्चय करि संसार कर्दमके बीच पड्याहै तोहु ताके राग द्वेष रूपमे लाई तन्मयि लिप्त होता नाही १ जैसै शंख श्वेत स्वभावहै सो शंख सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनकूं भक्षण करै है तोहु ताका श्वेत भावहै सो कृष्ण करणेकूं समर्थ नाही हूजियेहै तैसैही स्वसम्यक् दृष्टीका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभावहै सो सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनका भोग उपभोगकूं भोगता संताबी तोहु ताका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभावहै सो अजीव अचेतन अज्ञानमयि भाव करणेकूं समर्थ नाही हूजियेहै १ जैसै सहस्रमण काच खंडमे येक असल रतन पड्योहै तोबी सो असल रतन अपणा रतन-

स्वभाव गुण लक्षणादिककूं छोड करिके जिस काचखंड वत् होते नाही तेसैही स्वसम्यक् दृष्टि अनंत अज्ञान मयि संसारमे पड्याहै तोभी अपणा स्वसम्यक् ज्ञान स्वभावकूं छोडकरिकै संसार अज्ञानमयिसे तन्मयि तत्स्वरूप होतेनाही १ जैसे दुग्ध जलमिले हुयेकूं हंस जल छोडकरिके दुग्धको ग्रहण कर्ताहै तेसेही क्षीर नीरवत् मिलेपेहसंसार अर स्वसम्यक ज्ञान ताकूं स्वसम्यक् दृष्टी हंस अज्ञान मयि संसारकूं छोड करिके स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञान मयि स्वभावकूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसै हस्तीका मस्तगमे मांस अर मोती मिलेहै तामे काग पक्षीहै सोतो मोती छोड करिके मांस ग्रहण कर्ताहै हंस पक्षी हैसो मांस छोड करिके मोती ग्रहण कर्ताहै तेसेही दृष्टीतो स्वसम्यक् ज्ञान गुण छोड करिके अज्ञानकूं ग्रहण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी अज्ञान औगुणकूं छोड करि के स्वसम्यक ज्ञानगुण

कूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसै परवस्तकूं परवस्तसै तन्मयि होय करिकै
ग्रहण कर्ताहै सो निश्चय तस्कर चोरहै सोई दर उदर शंका
भ्रमण करैहै बहुरि अपणा आपमै आपमायि आपही काथ
ग्रहण कर्ताहै सो साचो सत्य निश्चय साहुकार है सो इदर उदरनिः
शंकासहित भ्रमण कर्ताहै बेफिकर तैसैही मिथ्यादृष्टीहै सो तो त
स्कर चोरवत शंकासहित संसार चारगति चौरासी लक्ष योनीमे भ्रम
ण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टीहै सो जैसै कुंभकार का चक्रके ऊपर
अचल बैठी हुई मखी परिभ्रमण करैहै तैसैही सत्य साहुकार वत्
स्वसम्यक् दृष्टीहै सो निःशंक बेफिकर संसार च्यारगति चौरासी ल
क्ष योनीमे भ्रमण करैहै १ जैसै येक पुरुष नदीके तटपर खडो हु
वो तीव्र वेगसे बहताहुवा नीरकूं एकाग्रह ध्यान करिकै देखैया ति
स कारणसे उसकूं येह भ्रांति हुई के हम भी बहेजाने है पुकारता था

दुःखीथा ताकूं दयालमूर्तिसद्गुरू कहताहैके तूं दुः
नही बहताहे येह तो नदीकोनीर बहताहै अबतू इसदुःखसें
प्रकार भिन्न होणेके अर्थ सर्वथा प्रकार बहताहुवा नदीकानीर कूंम
ति देखै तूं तेरी तरफ देख तब गुरू आज्ञा प्रमाण भ्रांतिमै बहता पु-
रुष बहताहुवा नदीकानीरकूं देखणा छोड करिके अपणा आपही
तरफ देख करिके आपकूं अचल नही बहता समज करिके बहुत कु
सी आनंदहुवो अर गुरुके चरणमै नमोस्तु करिके कहीके
मै बहेजातोथो सो आप मोकूं बचादियो तैसेही
हुयेकूं बचादेताहे १ सारांस हे मुमुक्षजनहो बहताहुवा
ल संसारसे बचणेकी तुमारेको इच्छा हैतो इस भ्रमजाल संसारकूं दे
खणेके अर्थ तो तुम जन्मांधवत् होजावो बहुरि तुमारा तुमसे
धि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावहे ताकूं देखणे

केअर्थ तुम सहस्र सूर्यवत् अचलहोजावो १ जैसे रसोई पाक
मे आटो दाल चावल घृत सर्करा गुड लवण मिरच भांडा बासण लक
डी इंधन आदि भोजनकी सामग्री अर भोजन बणावणे वालो
बेहै परंतु अग्नी बिना तांदुलादिक सर्व सामग्री कचीहै तैसेही सिद्धप
रमेष्टी का स्वस्व भाव सम्यक् ज्ञानाग्नि बिना येह मुनी पणा त्यागी ब्रती
लक ब्रह्मचारी पणा दान पुन्य पूजा पाठ सास्त्राध्ययन ध्यान धारणा
उपदेस देणा लेणा आदि तीर्थयात्रा जप तप शुभाशुभ व्यवहार
शुभाशुभ व्यवहारका क्रिया कर्म अर ताका शुभाशुभ फल आदि स
र्व कचाहै व्रथाहै मिथ्याहै यदिस्यात् पूर्वोक्तका फलहै तो स्वर्ग नरकहै
बहुरि स्वर्ग नरकहैसो अरहट घटियंत्रवतहै १ ज्ञान संसार सागर-
के भीतर बाहिरहै परंतु जैसा येह संसारहै तैसो ज्ञान नाही १ जैसेच
कमक पत्थरीमे अग्नीहै सो दीखतानाही तोबी अग्नीहै तैसे संसारज

गनमे स्वसम्यक ज्ञान प्रसिद्ध है सो दीरवतो नाही तोवी स्वसम्यक्
नप्रसिद्ध है १ जैसै मूरर्व लोक कोई नयन्याय द्वारा कहता है के
जलती है बलती है परंतु पूर्ण दृष्टीसे देरिवये तो अग्नी स्वभावमे अग्नी
नजलती नबलती तैसेही असत्य व्यवहार द्वारा देरिवये तो स्वयंज्ञा॰
नमयि जीव मरता है जन्मता है निश्चय सत्यजीवत्व स्वभावमे देरिवये॰
तो नजीव मरता है नजीव जन्मता है १ जैसै हम रवूब चोकस ठिक निश्च
य करचूके सूर्यके सन्मुरव अंधकार नाही तैसैही स्वसम्यक्
सूर्यके सन्मुरव अज्ञान रूपी अंधकार नाही १ जैसै सूर्यके अर अंध
कारके येक तन्मयि मेल नाही तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यके अ
र अज्ञानमयि अंधकारके परस्पर येक तन्मयि मेल नाही १ जो जिस
सै भिन्न है वो उससै भिन्न है इतिन्यायम् १ जैसे सूर्य प्रसिद्ध है ताही
का प्रकाशमे घट पट मठ आदि प्रसिद्ध है तैसेही स्वयं सम्यक् ज्ञानम

का प्रकाशमे घट पट मठ आदि

यि सूर्य प्रसिद्ध है ताहीका प्रकाशमे येह लोकालोक जगत संसार प्र-
सिद्ध है १ येह तन मन धन बचनादिक है सो बहुरि तन मन धन
दिकका जेता शुभाशुभ भावकर्म क्रियादिक अर इनका फल येह
वस्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानकूं जाणते नाही १ स्वसम्यक् ज्ञानका
ह लोकालोक जगत संसारका मेलतो असा है जैसा फूल सुगंधका-
सा दुग्ध घृतवत् तिल तेलवत् बहुरि येह लोकालोक जगत संसार है
ताका अर स्वयं सम्यक् ज्ञान है ताका परस्पर अंतर भेद है तो
जैसा सूर्य अंधकारका परस्पर अंतर भेद है तैसा १
समुद्र है तहां पर्यंत कल्लोल लहरी चलती है तैसे ही जहां
म्यक् ज्ञानार्णव है तहां पर्यंत दान पुन्य पूजा व्रत शील जप तप ध्या
नादिक की बहुरि काम कुशील चोरी धन परिग्रह भोग बिलासकी इ
च्छा बांच्छा रूप लहरी कल्लोल चलती है १ जैसे कमल जलही मे उ-

त्पन्न हुवो बहुरि जलहीमै रहताहै परंतु जलसै लिप्त तन्मयि नाहै
ते तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी येह लोकालोक
सारमै उत्पन्न हुये अर इसीही संसार जगत लोकालोक मै रहताहै
रंतु येह संसार जगत लोकालोकसैं लिप्त तन्मयि नाही होते १
दी समुद्रसे भिन्न नाहीं तैसैही जिस वस्तुमै ज्ञानगुणहै
द्रसैभिन्न नाही १ जैसे सुवर्णकी वस्तु सुवर्णमयीही है बहुरि लोहाकी वस्तु लोह
मयीहीहै तैसैही स्वयंज्ञानमयिजीवकीवस्तुस्वयंज्ञानमइहै बहुरि अज्ञानमयी
जीवहै ताकी वस्तु अज्ञान मयिहीहै १ जैसे मृग मरीच का जल
है सो नही दीखते प्रमाणवत् मिथ्याहै तैसैही येह जगत संसार दीख
नाहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानसे तन्मयि होयकरि स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञानकी तरफ देखते संते मिथ्याहै १ जैसै मृग
उपसम होती नाही वस्त्र गीला होते नाही तैसैही तीव्र स्वयं

ज्ञानमयि सूर्यका भला बुरा येह मृगमरीचका जलसै भर्या संसार जगत है-
तासै होते नाही १ जैसै जहांको धासी तहांको मरमजाणे तैसै ही स्वसम्य
क्ज्ञानमै तन्मयि होय कारि रहता है सो स्वसम्यक् ज्ञानको मरमजाणता है
१ जैसै जिस हांडीमे खाणेकूं मिले ताकूं फोडणा तोडणा बिगाडणा जो
ग्य नही तैसैही येह लोकालोक जगत संसारमै जिसकूं स्वस्वभाव सम्यक्
ज्ञानकी मानकी प्राप्ति भई ऐसा संसारकूं बिगाडणा जोग्य नही १ जैसै-
पूर्णजलसै भर्योघर शब्द नाही कर्ताहै तैसैही परिपूर्ण स्वस्वभाव समर
सनीरसै तन्मयि स्वयं स्वसम्यक् ज्ञानहै सो शब्दसै तन्मयि होय कारिके न
ही बोलताहै १ जैसै जहां पर्यंत मंडपहै तहां पर्यंत वेलि बिस्तीर्ण होर
हीहै ऐसै नहीसमजणा के बेलडीमे बिस्तीर्ण होणेकी सक्ती नहीहै त
सैही उस स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि परमातमाको ज्ञा
न लोकालोक पर्यंत बिस्तीर्ण होयरह्योहै ऐसै नही समजणा के उस-

ज्ञानमयि परमातमामैं येतावन्मात्रही ज्ञानहै अर्थात् जैसा येह लोका लोकहै ऐसाही और सहस्त्र लक्ष लोकालोकबी होयतो वोस्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा येकही समयमात्र कालमें निराबाध पूर्वक जाणै परंतु येह लोकालोक शिवाय दूसरो ज्ञेयकोई हैहीनाही भावार्थ जा॰ णैकिसकूं जाणताही है सो क्या जाणै

ज्ञानमयि परमातमा का ज्ञानप्रकाशके भीतर अणुरेणुवत् नहीं- जाणै किदर कहां पडेहै १ जैसे स्वप्नाकी मायाकूं छोडणाक्या अरग्रह॰ णकैसे करणा तैसेही वो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै सो इसअ ज्ञान मयि लोकालोक जगत संसारकूं छोड करिके कहां पटके कहांडा लै बहुरि ग्रहण करिके कहांराखे कहांधरे १ जैसे कांचकी हांडीमें दी पक भीतर बाहिर प्रकासरूपहै तैसेही किसी जीवकूं गुरुपदेस द्वारा॰ स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान सरीरके भीतर बाहिर पसिद्ध होवे सो

सहस्त्रवेर धन्यवाद योग्यहै १ प्रश्न स्वसम्यक्ज्ञानमयि परब्रह्म पर मातमाको अचलानुभव कैसे

सहस्त्रवेर धन्यबाद योग्यहै १ प्रश्न स्वसम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म पर
मातमाको अचलानुभव कैसै होय उत्तर हेशिष्य इस भवनमै तूं उच्चा
स्वरसै अलाप ऐसै करिके तूंही तब शिष्य गुरुआज्ञा प्रमाण निस भवनमं
उच्चा स्वरसै कहीके तूंही तब तत् समयही पलट करिके
के कर्णद्वारा होकरि अंतः करणमै प्रतिध्वनि सोकीसोही पहोंचीके तूं
ही तब शिष्य प्रतिध्वनी श्रवण द्वारा निश्चय धारण करिके स्वसम्यक् ज्ञा-
नमयि परब्रह्म परमातमाहै सोही सोहं १ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव अव-
एाकरो जैसै कोहू पुरुष नीरसै भरया घटमै सूर्यको प्रतिबिंब देख
संतुष्टथो ताकूं निश्चय सूर्यकूं जाणतो पुरुष कहीके तूं ऊपर आकाश
मै सूर्यहै ताकूं देख तब वोपुरुष घटमै सूर्यकूं देखणा छोड करिके ऊप
र आकाशमै देखणे लागे तब निश्चय सूर्यकूं देख करिके अपणा अंतः
करणमे बिचार कियाके जैसो ऊपर आकाशमे सूर्य दीखताहै तैसोही

घटमें सूर्य दीखताहै जैसोइहां तैसोउहां तैसोउहां जैसोइहां नइहां·
नउहां अर्थात् जैसोहै तैसोजहांको तहां तैसेही स्वसम्यक्
सूर्यहै सो तोजैसोहै तैसो जहांको तहांस्वानुभवगम्यहै सोहै येह नय·
न्याय शब्दसे तन्मयि बणरह्याहै पंडितसो स्वानुभवगम्य सम्यक्

परब्रह्म परमातमाकूं अनेक प्रकारसे कल्पहै सोअथाहै १ जैसे
किसीको प्रियपुत्र द्वादश वर्ष पश्चात् परदेसमेंसे आयो आते प्रमाण मा·
ता माता सज्जनादिकसे मिले ताको आनंद हुवो सो फेर वो आनंद रहनाना

आनंदको हेतु परदेसमेंसे आयो सो पुत्रविद्यमानहै
लापसमय प्रथमानंद हुवाथा तैसा आनंद अवहै नाही इहां प्रथमानंद
संभवैहै इसी आनंदसे सर्वानंदरूपहै तैसेही प्रथम स्वयंसिद्ध स्वस·
म्यक् ज्ञानमयि परमातमा परमानंदमयि प्रथमहै उसीसे भोगानंद जो
गानंद धर्मानंद विषयानंद हिंसानंद दयानंद आदिजेता आनंदशब्द·

है सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा परमानंदका है १ जैसे
कटीमें बैठे पुरुष तिस करीके [illegible]

है सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा परमानंद् का सूचक है १ जैसे कुटीमै बैठे हूवो पुरुष तिस कुटीके द्वारा होकरिकै बाहिर मनुष्य पशू पक्षी वृषभ घोटकादिक परहै ताकूं जाणतहै बहुरि स्वयं आपकूंबी जाणतहै तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान मयि सम्यक् दृष्टी स्वयं देह अंधकुटीमे बैठ करिकै आपापरकूं जाणतहै १ जैसो बीज ताको तैसो फल १

देखताहै बहुरि नेत्रकूं नही देखताहै सो अंधवत् स्यात् तैसैही ज्ञानसै जाणताहै बहुरि ज्ञानकूं नही जाणताहै सो अज्ञानवत् स्यात् १ नट नाना प्रकार का स्वांग धारैहै परंतु आप अपणा दिलमे जाणताहै नताहै के येह जैसा स्वांगहै तैसो मैनाही तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान मयि सम्यक् दृष्टीहै सो अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मायिहै ताकूं तो स्वांगं न मानतहै न समजतहै परंतु स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानसे तन्मयी नाही तिस सर्वहीकूं स्वांग जाणताहै मानताहै १ जैसे घरके अ-

ग्नी लागे ताके प्रथम कूप खोदणा जोग्य है तैसै ही येह देह कुटीके काला
ग्नि लागे ताके प्रथम सद्गुरू वचनोपदेस द्वारा देह कुटीके भीतर बाहिर म
ध्य निरंतर स्वसम्यक् स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मायि स्वभाव वस्तु है
ताकूं तन्मायि समज लेणा मान लेणा योग्य है १ जैसै चकवा चकवी सा
यंकाल रात्री समय अलग अलग होजाते है सो कोण उनकूं द्वेष भाव-
से अलग अलग कर्त्ता है वहुरि प्रात काल सूर्योदय समय वह चकवा च-
कवी परस्पर मिलते है ताकूं कोण प्रीतराग भावसे मिलाते है तैसे ही
जीव अजीवकूं कोण तो प्रीतराग भावसै मिलाया है वहुरि कोण द्वेषभा
वसै अलग अलग करता है १ जैसै स्वर्णका अनेक भेद अलंकार है
ताके अनेक भेद अलंकारकूं गलादेवै तो येक केवल स्वर्ण ही है तैसै ही येक स्व-
यंसिद्ध स्वसंम्यक् ज्ञान है ताका भेद कुमतिज्ञान कुश्रुति ज्ञान कुअवधि-
ज्ञान मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्ययज्ञान केवलज्ञान

ज्ञान मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्ययज्ञान

दि भेदहै ताकूं गालदेइ वोदे तो येक केवल स्वयंसिद्ध स्वसम्यक्ज्ञानही
है १ जैसे सूर्यका प्रकासमे अंधकार कहाहै सूर्य निकास लीयातो प्र-
कहाहै आत्मज्ञानीकूं जगत संसार मृगजलवत्तहै सूर्यनहोय-
तो मृगजल कहांहै ऐसे गुरुपदेस द्वारा आपकूं आपमे आपमयि आप
हीमे आपकूं खैचलियेसे आकार कहांहै ऐसे जगत संसारहै सो भरम
है भरमउडगयेतो जगत संसार कहांहै १ जैसे जल अग्नीको संयोग पा
य करिके गरमहै परंतु गरम है नही क्यूंके उसी गरम जलकूं अग्नीके ऊ
पर डालदे पटकदेतो अग्नीउपसम होजानी है बूजजाती है तैसे ही स्व
सम्यक्ज्ञानहै सो क्रोधादिक अग्नीको संयोगपाय करिके संतप्त होजा
तेहै परंतु संतप्त होते नाहीं क्यूंके उसी स्वसम्यक्ज्ञानकूं क्रोधादिक अ
ग्नीकेऊपर वा संसार जगतकेऊपर डालदे पटक देतो क्रोधादिक अग्नी ब
हुरि संसार जगत उपसम होजातेहै १ जैसे सूर्यको प्रकास तथा आका

श सर्वत्रहै तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान सर्वक्षेत्र कालभव भावादिकहै
है निश्चयनयात् १ स्वसम्यक्ज्ञान स्वभावमै रात्री दिवसका भेद नसंभ
वै इसी वास्तै स्वसम्यक्ज्ञानको नाम सदोदय सूर्यहै १ जैसै बालक
डका लडकी बाल्य अवस्थामै गुदागुदी बनाय करिकै मैथुन
पभोग आभाषमात्र कर्ताहै परंतु योवन
नादिक भोगोपभोग उसीही लडका लडकीकूं निश्चय प्राप्त
नब पूर्वकृत्य गुदागुदीकूं असत्य जाण करिकै येक ठिकाणै समेट क॰
रिकै राख देताहै तैसैही किसीकूं गुरुपदेश द्वारा काललब्धी पात्रकद्वा
रा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान स्वभावकी अचलता
ढता होणेजोग्य होचुकी सो धातु पाषाण काष्टादिककी मूर्ति जहांकीत
हां दूसरे बालववके अर्थ राख देताहै १ जैसै समुद्रका जल खाराहै
सी समुद्रके तट कूप खोदै तो जल मिष्ट निकलताहै

करिके कोहू संसार क्षारसमुद्रके तट
जलकालाभ होवेगा १ जैसे दोहा बीजराखरूख भोगवे ज्यू की
साएजगमांहि ॥ त्यूचक्रीनृपरूखकरै धर्मबिसारनाहि ॥१॥ तैसैही-
कोहू स्वसम्यक ज्ञानमयिस्वभावबीजकूं आपका आपमे आपमयि आ
पहीके पास आपही राख करिके
ताहे ताको स्वभावधर्म कदाचित् कोहू प्रकारबी नष्ट होनेनाही १ जैसे व्र
क्षकी जड मूलमे इच्छाप्रमाएजलडालो परंतु समयपाय फल लागेगा-
तैसेही मिथ्यादृष्टीकूं इच्छा प्रमाए स्वसम्यक ज्ञानोपदेस देवो तथा सा-
क्षात् सूचक वचन कहोके तूही जिनेंद्र शिव स्वसम्यक ज्ञानमयि स्वभाव-
सूर्यहे ऐसा सूचक वचन कहते संतेबी मिथ्या दृष्टीके स्वसम्यक ज्ञानानु
भवकी अचलता परमावगाढता काललब्धी पाचकहुये बिना होतीनाही
१ जैसे सूर्य प्रकाश कर्ताहे अंधो नही देखतो तो सूर्यकूं क्या दोष तैसे स

नगुरू सम्यक् ज्ञानोपदेस कर्ता है मिथ्यादृष्टी स्वसम्यक् ज्ञानानु भवकी
परभावगाढता नही धारण कर्ता है ताको सतगुरू कूं क्या दोष १ जैसे
दीपकतो अन्य घट पटादिक वस्तू कूं प्रगट नाही कर्नो क्यूं के वह
दीपक कूं ऐसे कहती नाही प्रेरणा करती नाही के हे दीपक तुम हमकूं
प्रगट करो तैसे ही दीपक उस घटपटादिक वस्तू कूं कहतो नाही प्रेर·
णा कर्तो नाही के हे घट पटादिक वस्तू हो तुम मोकूं प्रगट करो तैसे ही-
स्वसम्यक् ज्ञान दीपक है सो तो अन्य संसार वा तन मन
स्तू कूं बहुरि तन मन धन वचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया
कर्म है ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल है ताकूं प्रगट नाही कर्नो क्यूंके
येह संसार तन मन धन वचनादिक वस्तु है सो बहुरि इनका शुभाशुभ
व्यवहार क्रिया कर्म है सो अर इनका शुभाशुभ फल है सो स्वसम्यक्
ज्ञानदीपक कूं ऐसे कहते नाही प्रेरणा कर्ने नाही के हे स्वसम्यक्

दीपक तुम हमकूं प्रगट करो तैसे ही स्वसम्यक् ज्ञान दीपक है सो इस
संसार तन मन धन वचनादिक अर

दीपक तुम हमकूं प्रगट करो तैसैही स्वसम्यक ज्ञान दीपक है सो इस संसार तन मन धन बचनादिक वस्तुकूं अर इनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म है ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल है ताकूं ऐसे कहते नाही प्रेरणा कर्ता नाही के हे संसार तन मन धन बचनादिक वस्तु हो अर तन मन धन बचनादिक वस्तुके जेता शुभाशुभ व्यवहार कि कर्म हो अर इनके शुभाशुभफल हो तुम मोकूं प्रगट करो २ जैसे बाजीगिर अनेक प्रकारका तमासा चेष्टा कर्ता है परंतु आप अपणा दिलमै जाणता है के येह जैसा मै तमासा चेष्टा कर्ता हूं तैसो मै मूल स्वभावहीसै नाहीहूं तैसैही स्वसम्यक ज्ञानमयि सम्यक दृष्टी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्ता है परंतु आप अपणा दिलमै निश्चय जाणता है के जैसा मै संसारका शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्ता हूं तैसा तन्मयि कदाचित कोई प्रकार बी नाहीहूं जैसा कर्म चेष्टा कर्ता हूं तैसो मै मूलस्व

भावहीसे नाहीहूं १ जैसे बाजीगिर मिथ्या मृगजलवत् आम्रवृक्ष ल-
ताकूं देख करिके किसी पुत्रको कहीके हे पुत्र यहो बाजीगिर-
आम्र वृक्ष लगायो सो मिथ्याहे परंतु पुत्रको पिता बाजीगिरकूं
नही जाणतोहे तैसेही स्वसम्यक्दृष्टी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म
थ्या जाणतोहे परंतु जो कर्मसे अतन्मयि होय कर्मको कर्ताहे
थ्या नहीं जाणताहे नमाननताहे नकहताहे १ जैसे खंडी पांडु आपस्व
मे वही श्वेतहे अर परजो भीत आदिककूं स्वेत करेहे परंतु आप भीत-
आदिकसे तन्मयि होती नाही तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान हे सो सर्व संसार
आदिककूं चेतन वत् करि राखेहे परंतु आप संसार आदिकसे तन्मयि
होते नाही १ जैसे जेलखानामे बेडीसे बंधे तस्करादिकवीहे अरनि
सही जेलखानामे निर्बंध शिपाई जमादार फोजदारबीहे तैसेही सं-
सार कारागारमे मिथ्यादृष्टी तो कर्मबंधयुक्तहे बहुरि स्वसम्यक्

कर्मबंध रहितहै १ दृष्टांतमे तर्ककर्ताहै जिसकूं स्वभावसम्यक् ज्ञा
नको लाभनही होताहै १ जैसे सर्बतमे मिश्री एलायची दुग्ध काली
मिरच बिदामबीज केशर जलमिश्रित बहुत द्रव्यहै सो अपणे अप-
णे स्वभावगुण लक्षणमे मग्नहै तथापि येक सर्बत नामहै तैसैही-
जीव पुद्गल धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकासद्रव्य कालद्रव्य येह षट्मयी
संसारहै तामे ज्ञानगुण जीवमेहै ओर पांचद्रव्यमे नाही १ जैसे समुद्र
मे अनेक नदी नालाकोजल जावेहै तहां येह बी भाग नाहीहै के योज
लतो अमुकी नदीकोहै बहुरि योजल अमुकी नदीकोहै तैसेही स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव समुद्रमे येह बिभाग नही
है केयोज्ञाननो जैनकोहै अर यो ज्ञान बैष्णुकोहै अर योज्ञान शिवकोहै
यो बोधका योनयायिक चार्वाक् पातांजली सांख्यकोहै इत्यादि कवी
भाग बिधि निषेध स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानार्णवमे नसंभवे १ जैसे कोहू-

पुरुष सन्निपात युक्ति अपणा स्वघर मे सूतोहै अर भरम भ्रांतियुक्त क
हताहैके मै मेरा घरमै जाऊं तैसैही स्वयं ज्ञान मयि जीव अपणा ज्ञानम
यि स्वभाव मोक्षसे भिन्न नाहीं तथापि भरम भ्रांतिसे मोक्षमे जाणेकी
इच्छा कर्ताहै १ आगे फकत केवल दृष्टांत द्वारा अपणा आपमे आप
मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका अनुभवला
नुभव लेणा इति अथ केवल दृष्टांत संग्रह प्रारंभ दोहा नमोंज्ञा
नसिद्धांनकूं नमोज्ञानशिवरूप ॥ धर्मदासबंदनकरे देखआतमाभूप
॥१॥ प्रश्न स्वसम्यकज्ञानमयि आत्मा कैसाहै अर कैसे पाइये
को उत्तर दृष्टांत द्वारा कहतेहै येह आत्मा स्वसम्यकज्ञान मयि चेतनस्व
रूप अनंत धर्मात्मक येक द्रव्यहै ते अनंतधर्म अनंत नयकी गम्यहै
नंत नयहै सो सब श्रुति ज्ञानहै तिस श्रुतज्ञानप्रमाणकरि आत्मा अ-
नंत धर्मात्मक जानियेहै इस वास्ते नय निकारि स्वभाव

दिखाइयहै सोही आत्मा द्रव्यार्थक नयकरि चिन्मात्रहै दृष्टांत जैसे व-
स्त्र येकहै तैसे स्वभाव सम्यक ज्ञानमयि आत्मा येकहै १ जैसे वस्त्र-
सूत तंतु आदिकरि अनेकहै तैसैही स्वसम्यक ज्ञानमयि आत्मा दर्शन-
ज्ञान चारित्र सुख सत्ता चेतन जीवत्वादिकरि अनेकहै १ जैसे लोह मयिबा
ण अपणा द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव करि अस्तिहे तैसैही स्वसम्यक ज्ञान-
मयि आत्मा अपणी आपमे आपमयि आप द्रव्य आपहीमे आप रहता
हे वास्ते आपही क्षेत्र आपहीमे आप वर्तनाहे यास्ते आपही काल आप
ही आपका स्वभावहै मैहे वास्ते आपही भवभावकरि अस्तिहे १ जैसे लो
हमयि बाणपर द्रव्य क्षेत्र काल भव भावादिकरिनास्ति तैसैही स्वसम्यक
ज्ञानमयि आत्मा परद्रव क्षेत्र काल भव भावादिकरि नास्ति १ जैसे दर्पण
मे स्वमुख नही देखो तोबी स्वमुखहै बहुरि दर्पणमे
मुखहै तैसैही हे स्वसम्यक ज्ञान तूं तेरेकूं संसार जगत जन्म मरण नामा

नाम बंध मोक्ष स्वर्ग नर्कादिकमें नहीं देखै तोबी तूं अनादि
तर सम्यक्ज्ञानहीहै बहुरि है स्वसम्यक्ज्ञान तूं तेरेकूं सूर्य प्रकासवत्
क तन्मयि तेरा तेरेही भीतर तूंही तेरेकूं देखे तोबी तूं सोका सोही
दि अनंत निरंतर स्वसम्यक्ज्ञानहीहै १ जैसें कोहू स्वहस्तसे आपही·
का स्वस्थानमे आपहीकी स्वसिंदूकमे तिजोरीमें रतन राखे राख करिके
और वर्तिमे लागजावे तब तिस रतनकूं भूलबीजावैहै परंतु जब
रै तबही सो रतन अनुभवमे आवैहै तैसैही कोहू शिष्यकूं सतगुरु
नोपदेस द्वारा तथा काल लब्धि पाचक द्वारा स्वस्वरूप स्वसम्यक् ज्ञानानु
भव होणे जोग थो सो होगये परंतु पूर्व कर्म बसात् और ब्रतिमे लागजावे
तब तिस स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकूं भूलिबी जावैहै परंतु जब याद करै तब·
साक्षातषो स्वानुभषमे आवैहै १ इसीके अर्थ तीन दृष्टांत जैसे येक बेर·
चंद्रकूं देखलीये चंद्रानुभवनहीजाते १ जैसै येक बेर गुडकूं खाये पश्चात्

गुडानुभव नहीं जाते जैसे येक बेर भोग भोगे पश्चात्
जाते १ दर्पणकूं सदा

संदेहकूं देखवीये

गुह्यानुभव नही जाते जैसे येकबेर भोग भोगे पश्चात् भोगानुभव नही जाते १ जैसे काहू दर्पणकूं सदाकाल स्वहस्त मे लियेरहताहे ताकी म ष्टीषेर वेर देखतहे निरत करिके स्वमुख दीखते नाही दर्पणकी मष्टीकूं प लट करिके स्वच्छ दर्पणमे स्वमुख देखैतो स्वमुख दीखै तैसेही मिथ्या दृष्टी इस संसार तन मन धन वचनकी तरफ बहुरि तन मन धन वचनादि कका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म अर इनका शुभाशुभ फ लकी तरफ देखताहे वास्ते स्वसम्यक् ज्ञान नही दीखतो नही स्वानुभव मे आतो बहुरि इन संसार तन मन धन वचनादिककी तरफ देखणा छो डकरिके स्वसम्यक् ज्ञानकी तरफ निश्चय देखैतो स्वसम्यक् ज्ञानही दीखै स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होवै १ लोकालोक कूं जाणवाकी बहुरि नही जाणवाकी येह दोहु कल्पना कूं सहज स्वभा वहीसै जाणताहे सोही स्वसम्यक् ज्ञानहे १ जैसे हरित रंगकी मेंदीमें

सं·दी लालरंगहै परंतु दीखतो नाही पत्थरीमे अग्नीहै परंतु दीखतीनाही दृष्टां·

६३ दुग्धमै घृतहै परंतु दीखतोनाही तिलमै तैलहै परंतु दीखतो नाही
पुष्पमै सुगंधहै परंतु दीखती नाही तैसैही जगतमे स्वसम्यक्ज्ञान
मयि जगदीश्वरहै परंतु चरमनेत्र द्वारा दीखतोनाही किसीकूं सतगुरु
बचनोपदेस द्वारा काललब्धि पाचक द्वारा स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे तन्म·
मे अचलदीखताहै १ जैसे व्यभिचार·

एणीस्त्रीस्वघर कार्य कर्तीहै परंतु ताको चित्त मन व्यभिचारि
फ लागरह्योहै तैसैही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारिक
म कार्य कर्ताहै परंतु ताको चित्त मन स्वसम्यक्ज्ञान मयि
तरफ लागरहतोहै १ जैसे जिस स्त्रीका शिरकेऊपर भरतारहै स्यात् सो
स्त्री पर पुरुषका निमित्तसे गर्भवी धारण करै तो ताकूं ६३
तैसैही किसी पुरुषका मस्तगसे तन्मयि मस्तगकेऊपर

मयि परब्रह्म परमातमाहै स्यात् सो पुरुष परकर्म वसात् दोषवी
करैतो तापुरुषकूं दोष लागत् नाही बडेका सरणा लेणेका फल

मयि परब्रह्म परमातमा है स्यात् सो पुरुष परकर्म वसात् दोषवी धारण
करैतो तापुरुषकूं दोष लागने नाही बडेका सरणा लेणे का येही फल
है १ जैसे मूका पुरुषका मुखमै गुडखंड देकरि पश्चात् मूकासै बूजीके
कहो मूकागुडकेसा मिष्टहै इहां मूकाकूं गुडका मिष्टानुभवहै परंतु क
हनही सक्तो तैसैही किसीकूं गुरु बचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक्ज्ञानानु
भवकी अचलता परमावगाढता होणेजोगथी सो होचुकी परंतु कहन
हीसक्तो १ जैसे हस्तीका दंत बाहिर दीखणेका औरहै
खणे खाणेका औरहै तैसैही जैन बैष्णु आदिक आचार्य
का रचेहुये बेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पुराणादिकहै सोतो हस्तीका बाहि
रका दंतवत् समजणा बहुरि भीतरका आसय असल जिसकाजो ही
जाणै १ बंधको बिलास डालदीजे पुद्गलपे तथा देहीका विकार तुम दे
हाशिर दीजिये १ स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानहै सोतो तन मन धन बचनादि

कसे तन्मयि न स्वरूप कदापि नाही फिर गुरु स्वसम्यक् ज्ञानानुभव-
की अचलता अवगाढता निश्चयता करदेताहै धन्यहै गुरु सहस्त्रवेर
धन्यहै १ जैसे जैन वैश्नु बौद्ध शिवादिक कोउही हो जो चौरी करैगो-
सो बंधमें पडैगो तैसैही कोऊही हो जो कोऊ गुरु वचनोपदेस द्वारा वा
काललब्धि पाचक द्वारा आप का आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानानु
भवकी अचलता परमावगाढता धारण करैगो सोही संसार भरम जा-
लसे भिन्न होयके सदाकाल स्वानुभवमे मग्न रहैगो १ प्रश्न ॥
आत्मा कैसाहै अर कैसे पाइये ताका उत्तर दृष्टांत द्वारा कहनेहै येह आ-
त्मा चैतन स्वरूप अनंतधर्मात्मक येक द्रवहै ते अनंतधर्म अनंत नयकी
गम्यहै अनंतनय सब श्रुतज्ञानहै तिस श्रुतज्ञान प्रमाण करि आत्मा
अनंतधर्मात्मक जानियेहै इसवास्ते नयनिकरि वस्तु दीषाइयेहै सोही
आत्मा द्रव्यार्थिक नय करि चिन्मात्रहै दृष्टांत जैसे वस्त्र येकहै अर सो-

आत्मा पर्यायार्थिक नयकरि ज्ञान दर्शनादिक रूपकरि अनेक है जैसै सोही वस्त्र सूतके तंतु वनि करि अनेकहै अस्तित्व नयकरि सो-
आत्मा स्वद्रव क्षेत्र काल भावनिकरि अस्तित्व रूपहै जैसै लोहम-
अपणे चतुष्टय अस्तित्व रूपहै लोहातो द्रव्यहै धनुष अरगुणके बीचरहेहै तातै वह बाणका क्षेत्रहै जो साधनेका समय है सो काल है निसाणेके सन्मुखही है सो भावहै इस भांति अपणे चतुष्टय करि-
लोहमयि बाण अस्तित्व रूपहै और नास्तित्व नय करि सोही आत्मा परद्रव षेत्र काल भावकरि नास्तित्व रूपहै जैसै लोह मयी बाण सोही लोहाके बाण नाही और धनुषगुण वाचि नाही और साध्या नाही और निसाणेके सन्मुष नाही ऐसे सोही लोहमयी बाण परचतुष्टयकरि नास्तित्व रूपहै और अस्ति नास्ति नयकरि स्वचतुष्टय पर चतुष्टय करि क्रमसौं सोही आत्मा अस्ति रूपहै जैसै सोही बाण स्वचतुष्टय परचतु-

ष्टय क्रम विवस्या करि अस्ति नास्ति रूप होहै अर अव्यक्त
ही आत्मा येकही बार स्वचतुष्टय परचतुष्टय करि अव्यक्त है जैसे
बाण स्वपर चतुष्टय करि अव्यक्तव्य सधैहै और अस्ति अव्यक्तव्य नय
करि सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और येकही बार स्वपर चतुष्टय करि-
अस्तिरूप अवक्तव्य बाणके दृष्टांत करि जानना और नास्ति अव्यक्त
व्य नयकरि सोई आत्मा परचतुष्टय करि और येकही बार
नास्तिरूप अव्यक्तव्य बाणके दृष्टांत करि जानना और अस्ति-
नास्ति अव्यक्तव्य नयकी ये सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और
यकरि और येकही बार स्वपर चतुष्टय करि अस्तिनास्ति रूप अव्यक्तव्य
बाणके दृष्टांत करि जानना सविकल्पनय करि सोही
जैसे येक पुरुष कुमार बालक जुवान वृद्ध भेदनि करि
और अविकल्पनय करि सोही आत्मा अभेद है जैसे येक पुरुष पुरु

षत्व करि अभेदरूपहै नामनय करि सोही आत्मा शब्द ब्रह्मकरि नामले करि कह्या जावहै स्थापना नयकरि सोही आत्मा पुद्गलका अवलंबनक रि थापियेहै जैसै मूर्त्तिकपदार्थ थापियेहै द्रव्य नयकरि सोही आत्माअ तीत अनागत पर्याय करि कहियेहै जैसै श्रेणिक महाराजा तीर्थंकरका दलवाराहै भावनयकरि सोही आत्मा जिसभाव परिणाममैंहै तिस परि णामसे तन्मयी होहै जैसै पुरुषाधीनस्त्री विपरीति संभोगविषै प्रव- र्ती तिसपर्याय रूपहोहै सामान्य नयकरि सोही आत्मा अपने समस्त पर्यायनिविषै व्यापीहै जैसै हार सूत सर्व मुक्ताफलनिविषै व्यापीहै वि शेष नयकरि सोही आत्मा येक पर्याय करि कहियेहै जैसै तिस हारकाये क मुक्ताफल सब हार विषै अव्यापीहै नित्य नयकरि सोही आत्मा पहै जैसै नट अनेक यद्यपि स्वांग धरैहै तथापि सोही नट कहै करि सोही आत्मा अवस्थांतर करि अनवस्थितहै जैसै सोही नट रामराव-

णादिकके स्वांग करि और का और होहै सर्वगत नयकरि सकलपदार्थ
वर्त्तिहै जैसे षुली आंष समस्त घट पटादिविषै पदार्थविषै प्रवर्त्तै है अ
र सर्वगतनय करि आपही विषै प्रवर्तै है जैसे मुंद्या हुवा नेत्र आपही
विषै है सून्य नयकरि केवल येकही सोभायमान है जैसे सूना घर येक
होहै असून्य नयकरि अनेक करि मिल्या हुवा सोभै है जैसे अनेक लो·
कनिकरि भरी नांव सोभै है ज्ञान ज्ञेयके अभेद कथनरूप नयकरि येक
है जैसै अनेक इंधनाकार परिणया हुवा अग्नि येक है ज्ञान ज्ञेयके भेद
करि कथन करि अनेक है जैसे अनेक घट पटादि पदार्थनिके प्रतिबिंब·
निकरि मार्तंड अनेकरूप होहै नियतिनयकरि अपने निश्चित स्वभाव·
कौंलिये होहै जैसे पाणी अपणे सहजीक स्वभाव करि सीतलता लिये
होहै अनियतिनयकरि अनिश्चित स्वभाव होवै जैसे पाणी अग्नीके संबं
धसौं उष्ण होहै स्वभाव नयकरि काहू करि समारया नाही होता जैसे स्वभा

वकरि कांटा बी नाही घड़े धडयासा तीषा होवै है कालनयकरि
के आधीन सिद्धत्व है

वकरि कांटाबी नाही घडे धडयासा तीषा होवैहै कालनयकरि काल
के आधीन सिद्धत्वहै जैसे ग्रीष्म कालके अनुस्वार सहज डालका आंब
पकैहै अकाल नयकरि कालके आधीन सिद्ध नाही जैसे कृतम
उपमा करि पालके आंब पकैहै पुरुषाकार नयकरि जतनसे सिद्ध होवै
है जैसे सहित उपजायवेके वास्ते जतन करैहै काष्टके मादल विषे यक
मक्षिका राषियेहै तिस मधुमक्षकाके शब्दसौ और सहतकी मक्षिका
आय आय मधुच्छता करैहै ऐसें जतन सौभी सहतकी सिद्धि होवैहै
तैसें जतनसौंभी सिद्धहै दैवनयकरि यतन बिना ही साध्यकी सिद्धि
होवै जैसे जतन कीयाथा सहतके वास्ते मादल विषे मधुमक्षकाका
और तिस मधुछता विषे दैव संजोगतै माणिक पाइयेहै तैसें यतन
बिनाभी सिद्धि होवै इश्वर नयकरि पराधीन हुवा भोगवैहै जैसे बाल
कधायके आधीन हुवा खान पान क्रिया करैहै गुणिनयकरि गुणाकूं

ग्रहण करणे वाले है जैसे उपाध्याय करि सिखाया हुवा कुमार गुण ग्राही होवे अगुणि नयकरि केवल साक्षीभूत है गुणग्राही नाही- जैसे उपाध्याय करि सिखाइये जो है कुमार तिसकारषवाला पुरुष गुणग्राही नाही होता कर्त्तानय करि रागादि परिणाम तिनका कर्त्ता है सै रंगरेज रंगका करणेवाला होवै अकर्त्ता नय करि रागादि का कर्त्ता नाही साक्षीभूत है जैसे रंगरेज अनेक रंग करै है और कोहू तमासगीर तमासा देषै है कर्त्ता नाही होता भोक्ता नय करि सुष दुष का भोक्ता होवै जैसै हित अहित पथ्य कूं लेता रोगी सुष दुष कूं भोगवे है अभोक्ता नय करि सुष दुष का भोक्ता नाही केवल साक्षी भूत है जैसे हित अहितका पथ्यका जो भोक्ता है रोगी ताका तमासगीर धनवंत चाकर साक्षीभूत है क्रिया नय करि क्रियाकी प्रधानता करि सिद्धि होवै जैसै काहू अंधने महा दुखनेंका हु पाषाणके

अपना माथा फोडे तहां तिस अंधके मस्तग विषे ज्यो रुधिर बिकार था
सो दूर भया तातै ताके द्रष्टी हुई और तिसही जागे उनकूं निधान पाया
तैसें क्रिया कष्टकर भी बस्तुकी प्राप्ती होवै ज्ञान नयकरि विवेकहीका
प्रधानता करि वस्तुकी सिद्धि होवै जैसे काहू रतन परिक्ष क पुरुषथा
तिननै काहू अजाण दीन पुरुषके हात चिंतामणि रत्न देख्या तव तिस
दीन पुरुषकूं बुलाय अपणे घरके कूणामे जायकरि येक चींणाकी मू
ठीके वदले चिंतामणि रतन लीना जैसे क्रिया कष्ट नाही ज्ञान करि व-
स्तुकी सिद्धि होवै व्यवहार नय करि येह आत्माकूं बंध मोक्ष अवस्था
की द्विविधा विषे प्रवर्तै है जैसे परमाणु स्नूं बंधे षूलैहै तैसे येह आत्मा
बंध मोक्ष अवस्थाकौं पुद्गल सूं धरैहै निश्चय नयकरि परद्रव्यसौं बं
धमोक्ष अवस्थाकी द्विविधाकूं नाही धरैहै केवल अपणेही परिणा
मनिसौं बंधमोक्ष अवस्थाकौं धरैहै जैसे येकला परमाणु बंधमोक्ष

अवस्थाकौं जोग अपणे स्निग्ध रुक्ष गुण परिणामकौं धरतासंता
ध मोक्ष अवस्थाकौं धरैहै असद्भूत नयकरि यह आत्मा औपाधिक
भेदस्वभावलियेहै जैसै येक मृत्तिका घट सरावा आदि अनेक
षहोहै सद्भूत नयकरि निरुपाधि अभेदस्वभाव रूपहै
रहित केवल मृत्तिकाहोयहै इत्यादि अनंतनयनिकरि वस्तुकी
होवै वस्तु अनेकप्रकार बचन बिलास करि दिखाइयेहै जेता बचन
तेताही नयहै जेती नयहै तेताही मिथ्या बादहै श्लोक सएव·
मुक्त्वानयपक्षपातं स्वरूपगुप्तानिवसंतिनित्यम्॥ विकल्पजालच्युत
सांतचित्ता सएवसाक्षातदमृतंपिबंति १
चितिद्वौद्वाव्यतिपक्षपातौ॥ यस्तत्ववेदीच्युतपक्षपातस्तस्यास्तिनि·
त्यंखलुचित्चिदेव॥२॥ इत्यादि· जानैंयेक नयकौं सर्वथा मानिय·
तो मिथ्याबादहोय अरज्यो कथंचित्मानियेतो जथार्थ अनेकांतरूप·

सर्वज्ञ बचन होय तातैं येकांतना निषेध है येक ही वस्तु अनेक
येह आत्मा नय करि और प्रमाण करि जानिये है जैसे येक
जब जुदे जुदे नदीनके जलनि करि साधिये तब गंगा जमुनादि
स्वेत नीलादि जलनिके भेद करि येक येक स्वभावकौं धरै है तैसें
आत्मा नयनिकी अपेक्षा येक स्वरूपकौं धरै है और
मुद्र अनेक नदीनिके जलनिकरि येक समुद्र हो है भेद नाही अनेकां-
तरूप येक वस्तु है तैसें येह आत्मा प्रमाण विवक्षाकरि
मयि येक द्रव्य है इस प्रकार येक अनेक स्वरूप नय प्रमाण करि साधि
नयनि करि येक स्वरूप दिखाइये है प्रमाण करि अनेक
पाइये है इस प्रकार स्यात् पदकी सोभा करि गर्भित नयनिके स्वरूप-
करि और अनेकांतरूप प्रमाण करि अनंत धर्म संयुक्त है शुद्ध चि-
न्मात्र वस्तु ताको जे पुरुष अवधारै है ते पुरुष साक्षात् आत्मस्वरूपके

अनुभवी होवे येह आत्मा द्रवका स्वरूप जानना अब तिस आत्मा·
की प्राप्तिका प्रकार दिषाइये है येह आत्मा अनादि कालतै लेकरि पुद्ग
लीक कर्मके निमित्ततै मोह मदिराके पान करि गमन हुवा घूमहै समु
द्रकीसी नाही आपही विषै विकल्प तरंगनिकरि महाक्षोभितहै क·
मकरि प्रवर्तैहै जो अनंत इंद्रियज्ञानके भेद तिनकरि सदाकाल पलट
वेकौं प्राप्त होवे येक रूप नाही अज्ञान भाव करि पररूप बाह्य पदार्थ
निविषे आत्म बुद्धी करि मैत्री भाव करैहै आत्मविवेककी सिथिलता
करि सर्वथा बाहिरमुख हुवाहै बारबार पुद्गलीककर्मके उपजावनहारे·
जोहै राग द्वेष भाव तिनकी हैतता विषे प्रवर्तैहै ऐसै आत्माकूं शुद्ध स
चिदानंद परमातमाकी प्राप्ती काहेसे होय कहांसे होय औरयेही आ
त्माजो अषंड ज्ञानके अभ्यासतै अनादि पुदगलीक कर्म करि उपजाया
जोथा येह मिथ्या मोहताकौं आपना घातक जान भेदविज्ञान करि आ

पसे जुदा करि केवल आत्म स्वरूपकी भावनाते निश्चल थिर होय तो आ
पने स्वरूप विषै निस्तरंग समुद्रकीसी नाई निःकंप हुवा तिष्टै है येकही
बार तृप्त भयाजो है अनंत ज्ञानकी सक्तिके भेद तिनकरि पलटता नाही
अपणी ज्ञानकी सक्तीनि करि बाह्य पररूप ज्ञेय पदार्थनि विषै मैत्री
भावनाही करै है निश्चल आत्मज्ञानकी विवेक करि अत्यंत स्वरूपसौं
सन्मुख हुवा है पुद्गलीक कर्म बंधके कारण जो है राग द्वेष भाव तिनकी
द्विविधातै दूर रहै है ऐसाजो परमातमाका आराधक पुरुष है सो भग
वंत आत्मा पूर्वही न अनुभयाथा अरज्ञानानंद स्वभाव है परमब्रह्म
है ताकौं प्राप्त होवहै आपही साधक है अवस्थाके भेदतै साध्य साध
क भेद है येह समस्तही जोहै जगतजीव सोभी ज्ञानानंद स्वरूप जोहै
परमात्म ज्ञान तिसकूं प्राप्त होउ अर आनंदरूप ज्यो है अमृत जलति
सके प्रभाव करि परिपूर्ण वहै जो है वह केवलज्ञान रूपणी नदी तिस

विषेज्यो आत्म तत्व मग्न होइ रत्या है और जो तत्व समस्त ही
क देषवेकूं समर्थ है अर जो तत्व ज्ञान करि प्रधान है अर वो तत्व
श्रेष्ठ महा रतन की सी नाई अति शोभायमान है अर वो तत्व लोका-
लोकसें अलग है जैसा लोकालोक है तैसो वो तत्व नही है अर जैसो
तत्व है तैसा लोक अलोक नाही सूर्ज अंधारा कासा अंतर है
अर उस तत्व के अर वो तत्व लोका लोक कूं देषवे जाणवेकूं समर्थ
अर लोकालोक उस तत्व कूं देषणे जाणणेकूं समर्थ नही है उस तत्व-
कूं स्याद्वाद रूप जिनेश्वर के मत कूं अंगिकार करिये जगत जन अं
करिये जगत जन अंगिकार करो जाते परमानंद सुष की प्राप्ति होय १
जैसे दीपक के ज्योति के भीतर कालिमा कज्जल है तैसे ही केवल
ज्योति परमातमा के भीतर येह जगत जुगत जोग तू
धि निषेध बंध मोक्षादिक है येक दीपग सें हजार दीपग जोये परंतु

थ दीपज्योति तो जैसाको तैसो भिन्न है सोहीहै कलस हांडा वास-
ण होताहै अर बिगड जाताहै परंतु माटी तो नहोवै अर नविगडै स्व-
र्णका कड़ा मुंदडा हो जाताहै अर बिगड जाताहै परंतु स्वर्ण तो न
होवै अर नबिगडै लाषू मण गहूं चीणा मूंग मोठ होताहै अर षरच हो
जाताहै अर फेर वही लाषूमण गहूं चीणा मूंग मोठ जैसा का तैसा उत्पन्न
होताहै अर्थात् बीजका नास कदाचित् बी नाही समुद्र मैसे हजार कलस
पाणीका भरि करिकै बाहीर नीकास दे तो समुद्र तो जैसाको तैसो है सो
हीहै अर उसी समुद्रमै हजार कलस पाणीका अन्यस्थानसे भरि करिकै
लाय समुद्रमै डारदे तौ भी समुद्र जैसा को तैसो है सोहीहै अर स्त्री रंडा
पदस्तकूं प्राप्ति होवै अर फकत काजल टीकी नथ येह नही पहरै अर
और सर्व आभूषण पहर रहै तो बी उसकूं रंडाही कहणा जोगहै मो-
ती समुद्रके पाणीमै होताहै अर उस मोतीकूं सो वरस लग बी पाणी मै-

पटक्यो राषे तौबी वो मोती गलता नही अर वो मोती हंसके मुषमे·
जाते प्रमाण गलजातोहै सूर्य है सो सूर्य कूं वृथाही ढूंढताहै अर अं·
धा है सो अंधारासें अलग होएकी वृथाही इच्छा करतो है सास्त्रमे·
लिषते हैके मुनी २२ बाईस परिस्या सहता है १३ तेरा प्रकार को चारि
त्र पालताहै १० दस लक्षण धर्म पालताहै १२ भावनाहै १२
रको तप कर्ताहै इत्यादिक मुनी कर्नोहै तो इहां ऐसा विचार आताहै मु·
नीनो येक अर परिस्या २२ चारित्र १३ प्रकार को दस लक्षण धर्म वा येक
धर्मका दस लक्षण १२ बारा तप १२ भावना इत्यादि बहुत भूमि कुछ ओ
रहे अर बाइस परिस्या कुछ ओर है बाइस परिस्याको अर मुनीको
उष्णतावन् तथा सूर्य प्रकाशवत मेलनहीं ऐसेही तेरा प्रकार का चारित्र·
का अर मुनीका मेल अग्नी उष्णता वा सूर्य प्रकासवत मेलनाहीं वा ऐसे
ही दसलक्षणधर्म बारातप बारा भावनाका अर मुनीका मेल अग्नी उष्ण·

तावत् सूर्यप्रकासवत् मेल नाही। आकासमै सूर्य है ताको प्रतिबिंब घृ
ततैल की तप्त कडाहीमै अवटतहै तोबी उस सूर्यका प्रतिबिंबको नास-
होतो नाहीं कांचका महलमै स्वान अपणा ही प्रतिबिंबकूं देषकरिके भु
क् भुक् करिके मरतोहै फटककी भीतमै हस्ती अपणी प्रतिछाया देष-
करिके आप उस भीतसै भड भेटलेकर आपका आप दांत तोडिकरिके-
दुःखी हुवो वानर मूकट वड वृक्षके ऊपर रात्री समय बैठ्योथो वृक्षके नी
चे येकसींह आयो चंद्रमाकी चांदणीमै उस वानरकी छाया सिंघकूं दी
षी देषकरिके वोसिंघ उस छायाकूं सांचो वानर जाण करिकै गर्जना करि
के उस वानरकी छायाकी पंजाके दीनी तब वृक्षके ऊपरि बैठो हुवो वानर
भयवानहोय नीचे आय पड्यो एकसिंघ कूपमै अपणी छाया देष करि
कै आप अपणा दिलमै जाणीके यो दूसरो सिंघहै तब गर्जना करि तो
कूवामैसैं अवाज सिंघशब्द सादृश आई तब वोसिंघ उछल करिके कूप

मे गीर पड्यो॰ येक गऊचरावणे वालो गवाल के तुरत को जन्म्यो सिंघ को॰ बच्चो हात लगगयो तब वो गुवाल उस सिंघके बच्चाकूं ले आयो स्याय क रिके बकरी बकराके सामील राष दीयो वो सिंघको बच्चो बकरीको

अर आपणो आपो भूल बकरा बकरीकूं अपणा संगाती

रहताहै ललनीको स्रुवो अपणा पंजासे पकड वानरो चीणाकी मू॰ ठी वांधीसो छोडतो नाही छद्रव्यहै ताका नसात होव नपांच होव यहै अंधकारयुक्त येक मोटा स्थानमे दस वीस पचास मनुष होवे सो प॰ रसपर शब्द वचन श्रवण करिके वो उसका निश्चय कर्ताहै २ अर शब्द॰ श्रवण करिके देषणे जाणणेकी इच्छा कर्ताहै मेघ वादलमे सूर्यहै ता॰ कूं कोई कालो वा मेघ वादलसा दृश्यमान तो है सो मिथ्या दृष्टांहै

जेकूं आडा मेघ वादल आय जावे तब सूर्ज आपका सूर्जपणाकूं छोड॰ करिके कहै बिचारके मै तो सूर्ज नही मेघवादल हूं ऐसो सूर्ज आपकूं स॰

मजै तो वो सूर्जबी मिथ्यादृष्टीही है मार्गमे पंक्ती बंध वृक्ष है ताको
वो पंक्ती बंध है येक पुरस उस छाया पंक्तीके बराबर चल्यो जावै है
पल छाया जावै है येक आवै है तप्त लोहाके गोलामें अग्नी भीतर बा-
हिर है परंतु अग्नी लोहा अलग अलग है चंद्रमा बादलमे छुप रह्या है
परंतु चंद्र और बादल अलग अलग है ध्वजा पवनके संजोगसे स्वमे
वही उलजती है अर सुलजती है चूरण कहणेमात्र येक है परंतु
ठ मिरच पीपल हरडे आदि सर्व देख अलग अलग है येक बूंदडीमें
अनेक बुंद है येक कोटमे अनेक कांगरा है येक समुद्रमे अनेक लह-
री कलोल है येक सुवर्णमे अनेक आभूषण है येक माटीमे अनेक
हांडा वासण है येक पृथीमे अनेक मठ मकान है तैसे ही येक परमा
तमाका केवलज्ञानमे अनेक जगत झलक रह्या है कृष्णरंगकी गौ ४
भलाइ हो परंतु उसको दुग्ध मीठो ही होना है लोहाके पिंजरामे बैठ्यो

हुयो पोपट राम राम कहता है केवल राम राम कहणेसे लोहा का बंध
नही टूटया तो ऐसा राम राम कहणेसैं जमका फंद कैसे टूटेगा येक
पुरुष पराई अस्त्री लंपट थो ताको आयो रूमो वो पुरुष रूमा समय
परस्त्री भोगणे लाग्यो ता समय येक प्रतिपक्षी सत्रु आयो आयके
रिके ताके तरवारकी दीन्ही नासे उसवी बिचारी को हात कटगयो ता-
को धिषयो लोही अर उसी समय उसको वीर्य रवलित होगयो
छुे जाग्यो तब वीर्यसैतो अधोवस्त्र लिप्त प्रत्यक्ष देरव्यो अर रुधिरसें
वस्त्रादिक लिप्त नही देरव्या येक बालक झूठा मट्टीका बलदसे प्रीति-
करता है अर येक कृसीकर्मा को बालक साचा बलदसे प्रीत करताहै
रंतु झूठा साचासे प्रीत करणेवालो दोन्यूही दुषी है क्यूं के उसका वल
दाकूं कोई जोतै पकडे अन्यथा करे तब दोन्यूही दुःरवी होताहै येक
किसकूं कीचमें रत्नजुहारातकी भरी वटलोई मिली तब

कूं बावडीमें धोवणे के लेगयो धौता धौता वटलोई बावडीमें
तब रोणे लाग्यो सुफेद लकडीको

कूं घावडीमे धोवणेके लेगयो धोता धोता वठलोई बावडीमे
तब रोणे लाग्यो सुपेद लकडीको कोयलो कालो हुवो अग्नीके
करि जिससे अबवो कोयलो किसीही उपायसे सुपेद होणे को नही
रतु पीछाकी पीछी अग्नीकी संगती करैतो वो कोयलो सुपेद हो जावै-
येक माटीका कलसमे जहांलग जलहै तहां लग उसका अनेक
अर कलस फुटजावैतो फेर नाम जलको अर कलसको कहाहै मयुर
नाचताहै श्रेष्ठ परंतु पिछाडी औंधो गांड उघाड करिके नाचताहै
ना ऐसेही क्रिया व्यर्थहै कच्चा आटासैवी पेट भरजाताहै परंतु उसी आ-
टाकी रोटी बणाय करिके पकावे अर षायतो स्वाद लागतीहै तसबीर-
सै तसबीर उतर सक्तीहै वडका बीजमे अनेक वड अर अनेक वडमै-
अनंतानंत बीज येक सन्निपात युक्त पुरुष अपणा घरमे सूताहै तोबी
कहैमै मेराघरमै जाऊ येक सेष सलीकी पागडी अपणा सिरकैऊपरसै

जमीकेऊपर गीरपडी तिसकूं वो सेष सली उठाय कहै येह येक पगडी·
हमकूं पाईहे वांससै वांस घृष्टहोय तब अग्नी उत्पन्न होतीहै सो अग्नी
उस वासकूं भस्म करिकै आपभी उपसम होजाताहै संख श्वेतहै सोका
लीपीली लाल मट्टी भक्षण कर्ताहै तोबी संख आप स्वेतको स्वेत रहै·
ताहै दोय बजाजकी दुकान सामीलथी तब कोई कारण पाय करिकेउ
न दोन्यू बजाजके परस्पर राग पडगई तब दोन्यू बजाज परस्पर भागकर
लाग्या आधाआधा वस्त्र फाडकरिकै तब कोई सम्यक् ज्ञाना कही
तुम ऐसै परस्पर भाग करते हो तुम तुमारे सोरुपया का वस्त्रका पचासरु
पया उपजैगा बडीहाणी होवैगी तब वह दोन्यू हाणी नुकसान जाणि
करिके मीलेहीरहे पुन्यूकाचंद्रमाके प्पर आमावास्याका सूर्जके भांति
सैं अंतर दीषताहै येक साहुकार अपणा पुत्रकूं परदेसमै भेज्यो के ना·
क दिवस पीछे बेटाकी वहू बोलीके मैतो रंडा होगई तब घोसेठ अप·

क दिवस पीछे बेटाकी वहू बोलीके मै तो रंडा होगई तब घोसेठ अप·

एा पुत्रके नाव पत्र भेज्यो उसमे ऐसी लिषदीके हे बेटा तेरी वहू तो
गई तब वोसेठको पुत्र पत्र वांच करिके सोक करवा लाग्यो तब कोई पूंछी
तुम क्यौं सोक करतेहो तब वो कही हमारी स्त्री रंडा भई तब सुण करिके
बोले तुम तो प्रत्यक्ष जीवता मोजूद हे अर तेरी स्त्री रंडा केसै भई
ठको पुत्र बोल्यो तुम कही सो तो सत्य हे परंतु मेरा दादाजीकी लिषी आई
कूं झूठी केसी मानूं दोय स्वानुभवज्ञानी परस्पर वार्ता करणे लागे कहोजी
सूर्ज मरजावे तो फेर क्या होवे उत्तर चंद्रमा हैके नही प्रश्न
जावे तो फेर क्या होवे उत्तर चीराग दीपग हैके नही प्रश्न अरज्यो चीरा·
ग दीपक मरजावै तो क्या होवे उत्तर शब्दवचन हैके नही प्रश्न अरज्यो·
शब्द वचनवी मरजावै तो क्या होवै उत्तर अटकल हैके नाहीं प्रश्न ठी
कहे मै समज लीयो इनि दृष्टांत संपूर्ण सुपेद वस्त्रके ऊपर रंग श्रेष्ट·
हे कच्ची हांडी मे जल मूर्ष होय सो भरे दीपगमे तेल रुईकी बत्ती श्रेष्ठ

तोप्रकास कर्त्ता सीघ्रजोति प्रकास मान करदेताहै येक येकांत वादी भ- | दृष्टां·
बोल्योके सर्व ब्रह्मही ब्रह्महै तबतो शिष्य श्रवण करिके
जारमै गयोथो तहां हस्तीको मावथ हस्तीकूं लेकरिके आवेथो अर ह-
स्ती आरूढ हुवो थको पुकार करतो थो के मेरा हस्ती दिवानु है अलग हो
जावो तब वो येकांत वादीको शिष्य अपणे दिलमे विचारीके योहस्ती·
ब्रह्म है अर मैबी ब्रह्म हूं तब स्याद्वादि नुतकूं कही वो मावत क्या
ही है स्यात् क्षीरोदधि समुद्रमे कोई एक जहरकी बिंदु पटक देवै तो क्या·
समुद्र जहरमई होवैगो अर्थात् नहीं होवैगो १ उलटा कलसके
वजे तो जल पटको जल कलसके भीतर जाणेको नाही १ एक जोजन-
चौरस चौरस मकाननमे येक सरस्यूं पडी है सो जाणै किदर कूं पडी है·
१ येक दरपणमे मयूरकी प्रतिछाया दीषती है रंग वीरंग की सो निश्चय
मयूरसे भिन्न नहीं अर दर्पण दर्पणसे भिन्न नहीं १ येक धूली धोणेवाले

मयूरसे भिन्न नही अर दर्पण दर्पणसे भिन्न नही १ येक धूली धोणेवाले

नास्याकूं धूलीमे पंचरत्न पंचलक्ष रुपीया का मिलगीया तब कोई उसना
स्याकूं कह्या तूं अबतो धूलो धोवण छोडदे तब वो नास्यो बोल्यो छोडूं
मोकोंतो इस धूलीमे रतन मिल्याहै दीपकके उजालामे मन वांछित रत्न
मिलगयो अब दीपक राषातो क्या अर छोडातो क्या १ अचेतन मूर्तिके
ऊपर पक्षी आय बैठते है डरता नही है १ किसी अस्त्रीको भरतार परदे
समे जायकरि मरगये अब वास्त्री उसीकी मूर्ति बणाय भर्तारवत
दलीये चाहै सो मिथ्याहै अथवा सोही अस्त्री परदेसमे मर्या भरतार
को नाममात्र स्मरण करेगी तो क्या उस अस्त्रीकूं प्रतक्ष भर्तारवत् आ
नंद होवैगा अर्थात् नही होवैगा १ सर्वनामको कहणे वालो ताको नाम
क्या १ सर्वको साक्षीदार ताको रंग रूप क्या १ येक मूर्ष जिस झाडका
डाहालाके ऊपर बैठ्यो है उसी डाहालाकूं काटतो है अपणे गिरणेकी तर
फसे उसकूं देष करिके ज्ञानीकूं ज्ञान हुवा १ येक कलस ॥

है ऋर दूसरो कलस ऋष्टासै भर्यो है स्यात् वह दोन्यू कलस फूट जावे-
तो कहाजाता है फूट करिके १ चामचीडी बागल ऋोर उलूक इनकूं बिल-
कुल सूर्जकी खबर नाही येकदिन चामचीडी कूं ऐसी स्रुणवामें ऋाई-
के सूर्ज उगैगो तब चामचीडी बागलके पास जायकरिके कही के सूर्ज
गैगो तब बागल बोली के सूर्ज तो कषी उग्यो नही भलाचलो
क उलूक है उनसे पूंछौंगा ऐसा बिचार करिके चामचीडी ऋोर
ह दोन्यू उलूकके पास गया ऋर कही के सूर्ज उगैगो ऐसी हम सुणी है
उलूक बोल्यो के येक समय में स्थान चूक करिके चार प्रहर बैठ्यो रह्यो थो-
सो ही मेरी पांष गरम होगई सो ही स्यात् गरम गरम तातो तातो
तो होगा १ मानस सरोवरकी खबर कूपका मीडकाकूं
उस मीडकाकूं मानस सरोवरकी साची बी कहै तो बी वो मीडको प्रमा-
ण नही करतो १ दोहा जात लाभ कुल रूप तप बल विद्या ऋधि

कार॥ ऋाठू मद है बुरा मनिषी वो दुष कार॥१॥ जैसे सूर्जसे ऋंधा
रो १

कार॥ येहआठूमदहैबुरा मतिपीवोदुषकार॥१॥ जैसे सूर्जसे अंधा
रो अलगहै तैसैयेह आठमद उस परमानमासे अलगहै सम्यक्
सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्र येह कहणे मात्र तीनहै निश्चय देषियेतो
एकसाहीहै जैसे अग्नी उष्णता प्रकास येह कहणेका तीन नामहै निश्च
य देषियेतो येकहीहै जिस अवस्थामै मुनि सूताहै ता अवस्थामे जग
त जागतोहै अर जिस अवस्था मै जगत जागतो है ता अवस्थामे मुनीसू
तोहै सूर्जकूं अंधकारकी षबर नहीं अर अंधकारकूं सूर्जको खबर ना-
ही कबित्त लालवस्त्रपहरेसैदेहतोनलालहोय॰ सतगुरुकहै भव्य
जीवसै तोडो तुरत मोहकीजेल॰ माटीकोकार्ज घटजैसे माटी ताके बाहि
र माही॰ पूर्णमासीकोचंद्रमा अर अमावस्याको सूर्ज ताके अंतर नहीं
॥दक्षिणायन अर उत्तरायणकी अर कृष्ण पक्ष शुक्लपक्षकी अर ४
च्यार प्रहर रात्रीको पक्ष छोडकरिकै देषणा पुन्यू अमावस्याका सूर्जचंद्र

के क्या अंतरहै दूज को चंद्रमा उग्यो है सो पूर्णगोल होवैगो फिकरन
ही करणा बालक का हातकी मुष्टीमे अमोलष रतनहै अर वो बालक उ
स रतनकूं श्रेष्ठजाण करि छोडताबी नहीं है मूठी दृढ बांधकरि राषी है
परंतु वो बालक उस रतन कूं बाल भावसे श्रेष्ठ जानताहै सम्यक्
वसे नहीं जाणताहै ज्ञान वर्णादि द्रव्यकर्म अर रागादिक भावकर्म
र सरीरादिक नोकर्म तासे वो परमातमा अलगहै जैसे सूर्जसें
रो अलगहै तैसे उस परमातमासे भावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्म आदि स
र्वकर्म अलगहै जो अनंतज्ञानादिक रूप निजभाव ताकूं कबही
अर काम क्रोधादिक रूप परभाव तिनकूं कदाचित् कदे हू नग्रहे जैसे
सूर्ज आपका गुण प्रकास कीरणादिक न छोडे अर परज्यो अंधकारा
ताकूं कदाचित् कदे ही न ग्रहण करै तैसे ही
हण न करै अर आपकूं आपका ज्ञानादि गुण कूं छोडै नहीं ...

हुए अर आपकूं आपका

त्मा परम पवित्र है मै तूं येह वह सोहं हूं तथा हूं हूं इत्यादि शब्दाके वच
नाके आदि अंत मध्य है सो परमात्मा है वो रूध है अर येह मै तूं येह वह
सोहं हूं हू है सो असरूध है जैसे सूर्जके सामने सनमुष अंधकार नही तै
सै उसकेवल ज्ञानरूपी परमात्माके सन्मुष येह मै तूं येह वह सोहं हूं हूं
हूं येह है सो नही जिसकाल सूर्जका अर अंधाराका मेल होवैगा
काल परमात्माका अर इन मै तूं येह वह सोहं हुं हुं हुं का मेल होवैगा
परमात्मा केवल ज्ञानी है अर येह अज्ञानी है ज्ञान अज्ञानका मेल
थाबी नही अर होवैगाबी नही अर हैबी नही ऐसो केवल
कहै जैसो अनषावे ताकी तैसीही अडकार आवै सूर्ज अंधकारकी इ
च्छाबी वृथाही करतो है अर सूर्ज सूर्जकी बी इच्छा वृथाही करनो है
हजारूं मण गहूं बीएा षरच होजाता है अर फेर हजारूं लाषूं मण पैदा
होजाता है नबीजको नास नफलको नास येक जातके लाल रतनाकोदे

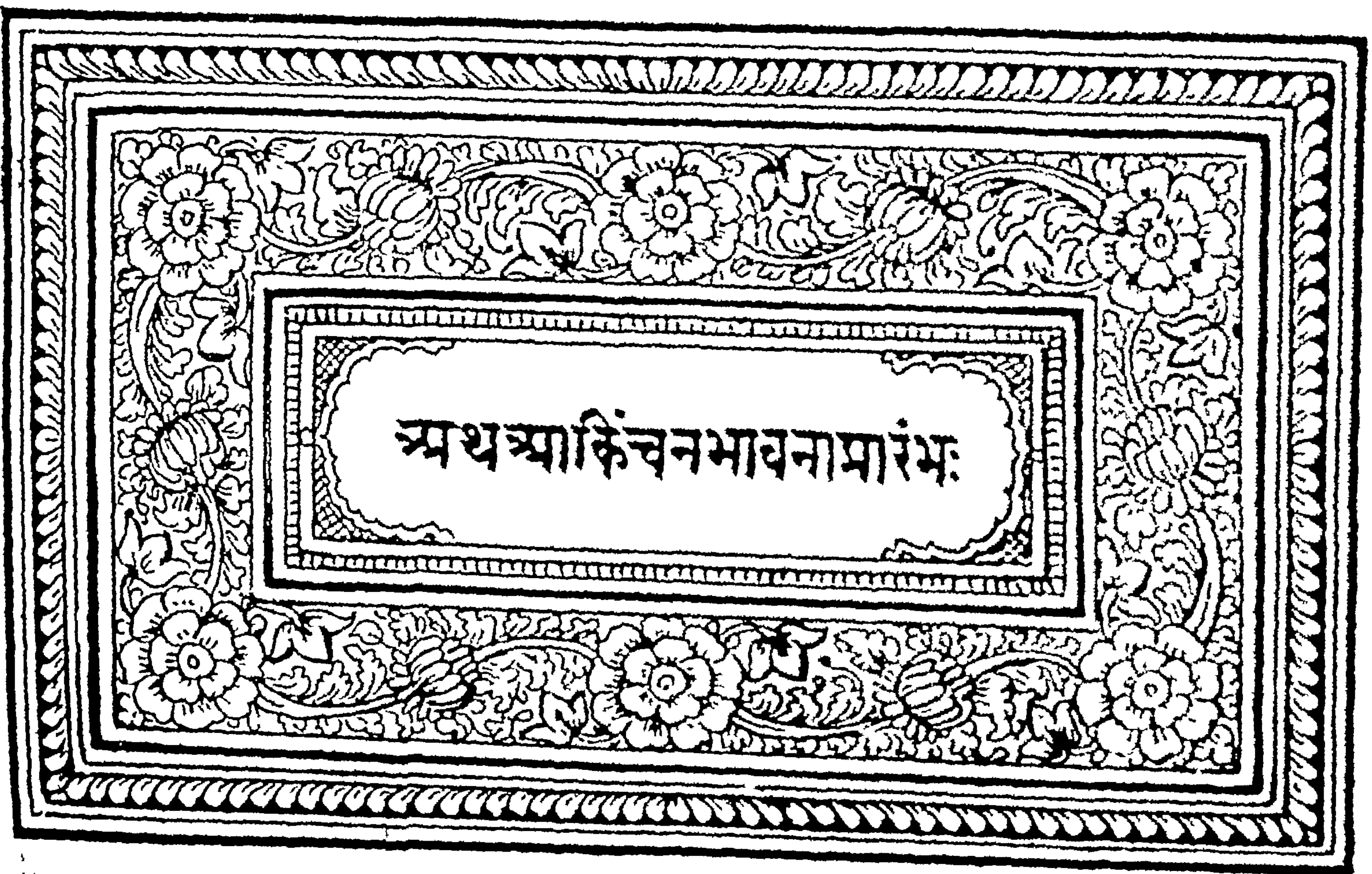
र दूरसैं येकसो पुंज अग्नीकोसो दीषतोहै येक परंतु वहरतनराशिका न्यारान्याराहै बह्लोतही अमृतकोसमुद्र भर्योहै सर्वसमुद्रकोजल कीसीसे पीयोनही जावै अपणी अपणी तृषा प्रमाण जलपीयकरिसंतुष्टरहो॥ ॥चौपाई॥ ॥धर्मदासक्षुल्लकमोनाम॥रच्याज्ञानअनुभवकोधाम॥ मनमानीसोकहीबषाण॥ पूरणकरिसमजोजिसकजाण॥१॥ ॥इतिश्री क्षुल्लकब्रह्मचारीधर्मदासरचित दृष्टांतसंग्रहसंपूर्ण॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥श्रीअर्हंताणंजयति॥

अरस्पर्शरस गंध वर्ण रहित जाणु देह हैसो मैनही अर देहके भीतर
बाहिर आकासादिकहै सोबी मैनही देहतो अचेतन जडहै हाडमां
स मल मूत्रसैं बणीहै वा तन मनसै बणीहै मै इस देहसैं अवलम·
थमहीसै ऐसो अलगहूं जैसै अंधारासै सूर्ज अलगहै तैसै अर यो
ब्राह्मणपणू क्षत्री वैश्य शूद्रादिक जात कूल देह काहै अर स्त्री·
पुरुषनपूंसकादि लिंगदेही काहै मेरा नही मोकूं देह ही जाणताहै
मानताहै सो बहिर आत्मा मिथ्यादृष्टीहै अर येह गोर पणो सांवला
पणो राजापणो रंकपणो स्वामीपणो सेवकपणो पंडितपणो मूर्ख
पणो गुरुपणो चेलापणो इत्यादिरचना देहही कीहै मेरी नही मैतो
ज्ञाताहूं नाम और जन्म मरणादिक देहका धर्महै जेनानाम तीनलोक
तीनकाल वा लोकालोकमैहै सो मेरा नही अर तीन लोक तीन काल·
वा लोकालोकहै सो मेरेसे अलग ऐसाहै जैसै सूर्जसे अंधारो अल

ॐ ततसत् परब्रह्मपरमात्मनेनमः ॥ ॥ अथआकिंचनभावना लिख्यते॥ ॥दोहा॥ ॥ मेरामुजसैंअलगनही सोपरमात्मादेव॥ ताकूंबंदूंभावसे निसदिनकरतासेव॥ १॥ मेरामुजसैंअलगनहि सोस्वरूपहैमोय॥ धर्मदासक्षुल्लककहै अंतरबाहिरजोय॥ २ ज्योंअपणानिजरूपहै जाननदेषनज्ञान॥ इसबिनओरअनेकहै सोमैनहीसुजाण॥ ३॥ अन्यद्रव्यमेरानही मैंमेरोहीसार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै सोअनुभवसिरदार॥ ४॥ ॥वार्तिक॥ ॥जो मेरो ज्ञान दर्शनमयस्वरूपबिना अन्यकिंचित् मात्रबी हमारानहीमैं कोई ओर द्रव्यको नही मेरा कोई अन्य द्रव्यनही ज्यो मेरेसैं अलग है उससे मैंबी अलगहूं ऐसा अनुभवकूं आकिंचन कहतेहै सोही अनुभव मोकूंहै मैं आत्माहूं सोही मेरेकूं मै समजनाहूं हो आत्मन् अपणा आत्माकूं देहसैं अलग ज्ञानमई ओर द्रव्यकी ओपमारहित-

गहै तैसे और में जैन मत वाले वैष्णव मतवाले शिव मत वाले आदी-
कोई मतवालेको चेलो गुरु नहीं हूं पर कर्ता कर्म क्रिया संपादान अ-
पादान अधिकरणसे अलग हूं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ येह
घना भावे करत संभाल ॥ धर्मदास साची लिषे मुक्त होय ततकाल ॥
॥ १ ॥ अपणो आपो देषके होय आप को आप ॥ होय निचिंतता तिष्योर है
किसका करणा जाप ॥ २ ॥ ॥ इति आकिंचन भावना समाप्त ॥ ॥





अथ आकिंचनभावनाप्रारंभः

ते जानपणेपणा है सो ज्ञानतै अभिन्नभाव है भिन्नप्रदेसरूप नाही
है तातै जाननक्रियारूप ज्ञान है सो ज्ञानही विषै है बहुरि क्रोधादिक
है ते क्रोधरूप क्रिया क्रोधपणा स्वरूप तांहाविषै प्रतिष्ठित है जातै
क्रोधपणारूप क्रिया क्रोधादिकतै अपृथक् भूत है अभिन्नप्रदेश
है तातै क्रोधरूप क्रिया क्रोधादिविषैही होय है बहुरि क्रोधादिकवि
षै अथवा कर्मनोकर्म विषै ज्ञान नाही है जातै ज्ञानके अर क्रोधादि
कके अर कर्मनोकर्मके परस्पर स्वरूपका अत्यंत विपरीत पणा है ति
नका स्वरूप एक होय नाही तातै परमार्थरूप आधार आधेय संबं
धका शून्यपणा है बहुरि जैसे ज्ञानका जाननक्रियारूप जाणपणा
रूप है तैसै क्रोधरूप क्रियापणा स्वरूप नाही है बहुरि जैसे क्रोधा
दिकका क्रोधपणा आदिक क्रियापणा स्वरूप है तैसै जाननक्रि
यारूप स्वरूप नाही है कोईही प्रकार करि ज्ञानकूं क्रोधादिक्रिया

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ ॥ अथ भेदज्ञान लिख्यते ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
प्रथमहि भेदज्ञान जो भावै ॥ सोही शिवस्कंद्री पद पावै ॥ ताते भेदज्ञा
नमै भाऊ ॥ परमानम पद निश्चय पाऊ ॥ १ ॥ क्षुल्लक धर्मदास अवबो
लै ॥ देष वचन का मै निन षोलै ॥ वांचो पदो भाव मन ल्याई ॥ ताते मि-
लै मोक्ष ठकुराई ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेदज्ञान ही ज्ञान है वाकी
बुरो अज्ञान ॥ धर्मदास साची लिषै भेमराज तुम मान ॥ ३ ॥ अर्थात्
निश्चय करि एक द्रव्य का दूसरा द्रव्य कछु संवंधि नाही है जाते द्रव्य है
सो भिन्न प्रदेस रूप है ताते एक सताकी अप्राप्ती है द्रव्य द्रव्य की सता
न्यारी न्यारी है बहुरि सतायेक नहोते अन्य द्रव्यके अन्य द्रव्य कारे आ
धार आधेय संवंध भी नाही है ताते द्रव्यके अपने स्वरूप ही विषै प्रति
ष्ठारूप आधार आधेय संवंध तिष्ठै है तिस कारण करि ज्ञान आधेय
सोतो जाणपणारूप अपणा स्वरूप आधार ना विषै प्रतिष्ठित है जा

ही प्रति भासैहै ऐसैही जब एकही ज्ञानकूं अपनी बुद्धि विषेस्या
पि आधार आधेय भाव कल्पिये तब अवशेष अन्य द्रव्यनिका अ
धिरोपकरणेका निरोध भया यातैं बुद्धिके भिन्नआधारकी अपे
क्षा नाही रहैहै अर भिन्न आधारकी अपेक्षाही बुद्धिमे नरही त-
ब एकज्ञानही ज्ञानविषै प्रतिष्ठित ठहर्‍या ऐसैं भावना करणे वाले-
के अन्यका अन्यके आधार आधेय भावनाही प्रतिभासहै तातैं ज्ञा
नहीहै सोतो ज्ञानही विषैहै अर क्रोधादिकहीहै ते क्रोधादिक
हीहै ऐसैं ज्ञानके अर क्रोधादिकके अर कर्मनोकर्मके भेदका
है सो भले प्रकार सिद्ध भया ॥ ॥ भावार्थ॥ ॥ उपयोगहै सो तो
चेतनाका परिणमन ज्ञानस्वरूपहै अर क्रोधादिक भावकर्म ज्ञाना
वर्ण आदि द्रव कर्म सरीर आदिकनो कर्म येसर्वही पुद्गल द्रव्य
परिणामहै ते जडहै इनके अर ज्ञानके प्रदेशभेदहै तातैं अत्यंत-

स्थाप्यानजायहै तातै जानन क्रियाके अर क्रो

स्वभावका भेद करि प्रगट प्रतिभासमान पणा है ब-
हुरि स्वभावके भेदतैंहि वस्तुका भेद है यह नियम है तातै ज्ञानके-
अर अज्ञानस्वरूप क्रोधादिकके आधार आधेय भावनाही है इ-
हां दृष्टांत करि विशेष कहै है जैसै आकास अरु द्रव्य येकही है नाही
अपणी बुद्धि विषै स्थापि अर अवार आधेय भाव कल्पिये तब आ
काश शिवाय अन्यद्रव्य तिनकातो अधिकाररूप आरोपणका नि
रोध भया याहीतै बुद्धिके भिन्न आधारकी अपेक्षा तो नहीं रही अ
र जब भिन्न आधारकी अपेक्षा नाही रही तब बुद्धिमै यही ठहरी
के जो आकास है सो येकही है सो येक आकासही विषै प्रतिष्ठित-
है आकाशका आधार अन्यद्रव्य नाही आप आपहीके आधार है
ऐसै भावना करणेवालेके अन्यका अन्यके आधार आधेय भावना

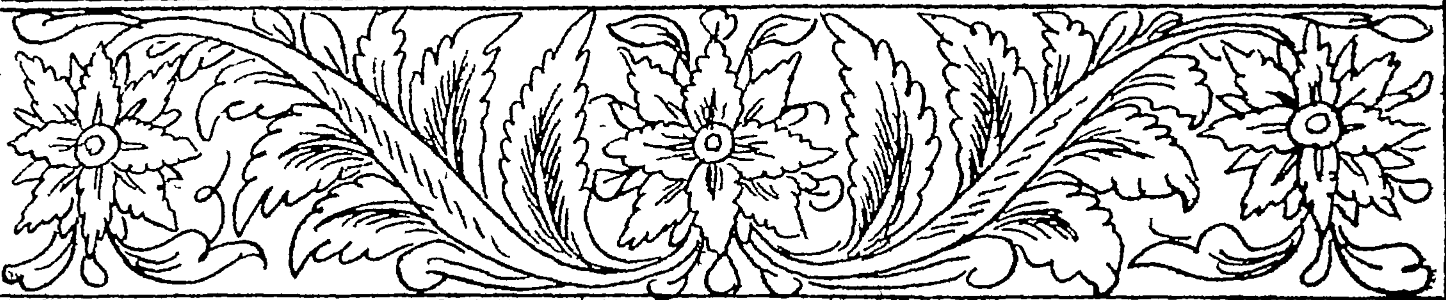
नाही जाते येह शब्द बंधादिक पुद्गलकी पर्याय है वास्ते आत्माके अर शब्द बंधादिकके भेद है तन मन धन वचन येह आत्मा नाही तनता मनता वचनता जडताजडसै मेल ॥ लघुता गुरुता गमनता येह अजीवका षेल ॥ ॥ अर्थात् ॥ ॥ आत्मा अर अजीव नही वास्ते आत्माके अर इन तन मनादिकके भेद है भावार्थ जैसै सूर्जके प्रकासके अर अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधाराके अत्यंत भेद है तैसै ही आत्मा अर अनात्माका भेद है तन मन धन वचन कुछ और है अर आत्मा कुछ और है मन बुद्धि चित्त अहंकार अंतःकरण कुछ और है अर आत्मा कुछ और है तूं मै येह वह हूं हूं सोहं येह कुछ और है अर आत्मा कुछ और है जोग जुगत जगत लोक अलोक कुछ और है अर आत्मा कुछ और है बंध मोक्ष पाप पुन्य कुछ और है अर आत्मा कुछ और है जैन बैभ्रु बौध नैयायिक मिमांसादिक वेदांती कुछ और है अर आत्मा कुछ और

भेदहै तातैं उपयोगविषैतौ क्रोधादिक तथा कर्मनो कर्म नाहीहै बहु-
रि क्रोधादिक कर्मनो कर्मविषै उपयोग नाहीहै ऐसे इनके परमार्थस्व
रूप आधार आधेयभाव नाहीहै अपना अपना आधार आधेयभा
व आप आपविषैहै ऐसे इनके परमार्थसे परस्पर अत्यंत भेद है ऐ
सै भेद जाणै सोही भेद विज्ञानहै सो भलेप्रकार सिद्ध होयहै ॥ ॥
दोहा॥ ॥ परमातमअरजगतके बडोभेद रूणसार॥ धर्मदास
ओरुलिषै वांचकरोनिरधार॥१॥ जैसैसूरजतमविषै नहींनहीरू
णवीर॥ तैसैहीतमकेविषै सूर्जनहीरेधीर॥२॥ प्रकास सूर्ययेकहै
जडचेतननहियेक॥ धर्मदाससाचीलिषै मनमेधारिविवेक॥३॥स्प
र्श८ रस५ बर्ण२ गंध२ आत्मानाही जाने येह स्पर्शादिक पुद्गल
अचेतन जडहै वास्तै आत्माके अर अचेतन पुद्गलके भेदहै और शब्द
बंध सूक्ष्मस्थूल संस्थान भेद तम छाया आतप उद्योत येह

हीकूं खोजे तो वा पुरुषकूं निश्चयही रतन लाभहोवे तैसेही येह
भरमांधकार मयि भवन जगत संसारहै तामे तासे अतन्मयि रतन-
त्रय मयि अमोलख रतन गिरयोहै ताकूं कोहू धन्यपुरुष ताको इच्छ
कपुरुष इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तककूं ग्रहण करिके
इस भ्रमांधकार नाम संसार भवनमे तिस स्वभाव सम्यक्ज्ञान मयि
अर रतनत्रयमयि रतनकूं खोजेगो ताकूं निश्चय आपका आपमे-
आपमयि स्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढता अचलहोवै-
गी १ कोहू इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तगसे बहुरि इसका
सुंदर अक्षर शब्द पत्र चित्रादिकसे आपका आपमे आपमयि स्वभा-
व सम्यक्ज्ञानहै ताकूं सूर्य प्रकाशवत् येक तन्मयि समजेगो मानेगो-
कहेगो ताकूंतो इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तग पढणे बान्चणे
से स्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढताकी अचलता नही हो

है तेरापंथ मेरा पंथ उसका पंथ इसकापंथ बीसपंथ गुमानपंथ नानक पंथ दादूपंथ कबीरपंथ इत्यादि पंथ येह सर्व येक प्रथ्वीके उपरहैसो पृथ्वी कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै जैन मत वाले वैश्नु मतवाले शिव मतवाले वेदांत मत वाले तेरापंथ मतवाले वीस पंथ मत वाले गुमानपंथ मत वाले येह सर्व मत वाले जिस मदकूं पीकर मत वाले भये है सो मदकुछ औरहै अर आत्मा कुछ और है ॥ ॥दोहा॥ ॥ भेदज्ञानसे भ्रमगयो नहीरही कुछ आस ॥ धर्मदास क्षुल्लक लिषै अबनोड मोहकी पास॥१॥ जैसे सूर्यके प्रकाशमे दीपकको प्रकासप्र सिद्धहै तैसे स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमे येह सम्यक् ज्ञान दीपका नामकी पुस्तग प्रसिद्ध भले भावसे पूर्ण प्रसूत हो चुकीहै १ जैसे अंध भवनमे रतन गिर्‍योहै सो रतन बांछक पुरुष दीपक हस्तमे लेकरिके तिस अंध भवनमै रतनार्थ जावै बहुरि रतन

त्तानानुभवमै तन्मयि सदाकाल चिरंजीवरहो॥ ॥श्लोक॥ ॥
श्रीसिद्धसेनमुनिपादपयोजभक्त्या देवेंद्रकीर्तिगुरुवाक्यसुधारसेन॥ जातामतिर्विबुधमंडलमंडनेच्छोः श्रीधर्मदासमहतोमहनीयविशुद्धा॥१॥ ॥इतिश्रीक्षुल्लकब्रह्मचारीधर्मदासरचितसम्यक्त्तानदीपिकासंपूर्णम्॥ ॥श्रीअरिहंताणंनमः॥ ॥ ॥



वेगी १ हां जैसै द्वारमै होकरिकै किसीकूं सूर्य दर्शनका लाभ
तैसैही किसीमुमुक्षकूं इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तक के द्वा
रा निश्चय स्वस्वभाव स्वसम्यक ज्ञान मयि सूर्यका दर्शण लाभ होवैगा
१ येह सम्यक ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तक हम बणाई है इसमे मू-
ल हेतु मेरा येह है के स्वयं ज्ञानमयि जीव जिस स्वभावसे तन्मायि है
सी स्वभावकी स्वभावना जीवसे तन्मयि अचल होऊ येही हेतु अंतः
करणमे धारण करिके येह पुस्तक बणाई है ५०० पांचसे पुस्तक
पके द्वारा प्रसिद्ध होणेकी सहाय ताके अर्थ रुपिया १०० येकसौं
तो जिल्हा स्याह्राबाद मुकाम आरा ठिकाणो मरवन लालजीकी कोठ
मे बाबू बिमलदासजीकी विधवा हमारी चेली द्रोपती देवीने दिया
है अर विशेष खरचकी सहाय ताके अर्थ जिस जिसकूं मेरा
देस द्वारा स्वसम्यक ज्ञानानुभव होणे जोग होसुके ते स्वभाव सम्यक

अथब्रह्मरूपीसंवत्सर

अयन २ ऋतु ६ मास १२ पक्ष २४

छप्पै॥ ॥ दोयनयनषट्‌करणभुजारविसंख्याजाणूं॥ पांचातत्वप्रमाणश्याम

वार ७ तिथि १५ नक्षत्र २८ योग २८

अरुश्वेतवषाणूं॥ सातसीस दशपंचदशनदोपंक्तीसोहै॥ नखशिखपंचकईशक

करण ११ सर्ववर्षकादिन ३६०

रणशिवसंख्यादोहै॥ पंषपंषमतिपंचदशअंबरषट्‌अनलाचरण॥ श्रीधरसाचो

देखियेब्रह्मरूपअशरणशरण॥१॥

कुंडलियो॥ ॥ जा कीनिर्मलबुद्धिहै ताकूंसबअनुकूल॥ भूतभविष्यविचारिये वर्तमानकोमूल॥ वर्तमानकोमूलभूलमेंकबहुनभूलै॥ पदसबशास्त्रपुराणवृथाहीभ्रममेंझूलै॥ कहतेबल्लभरामब्रह्महैसाचोसाखी॥ विद्यासूंसबहोतअगमबुधनिर्मलजाकी

२

यहपुस्तक पंडित श्रीधरशिवलालजीकेज्ञानसागरछापारवानामे छक्षक
जीनेछपाया· मुंबई· संवत् १९४६ शके १८११ मितीमाघशुक्ल १५ भोमवार·


इति सम्यक्ज्ञानदीपिका समाप्त.

अथ दृष्टांतचित्रमा०



योपुरसनीमकाझाडकीबाथभरीकरिकैपडोहै अरपुकारतोहैके मेरेकूं छुडावो·



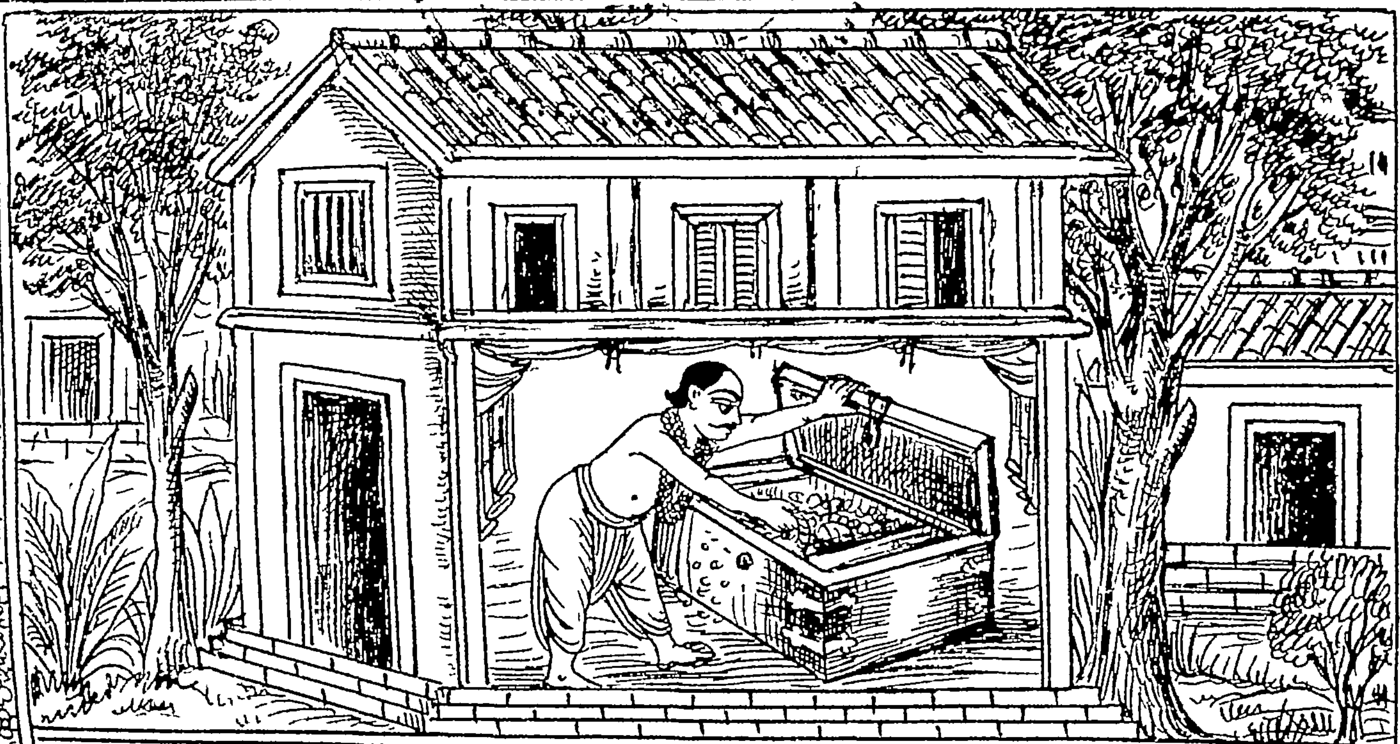
१
२
३
४
५
६
७
८
९
यो पुरस गिण
ती करतो है.
येक दोय तीन च्यार पांच छह सात आठ नव च्यारे अपणे घ
रसें दस आये थे अब नव ही रह गये गणती करणेवालो
पुरस आपकूं गिणतो नाहीं.
ऐसे आपणी मूरखतासे नदी है जिसका किनारापे दस पुरुष बी भ्रममे भरम रहा है.



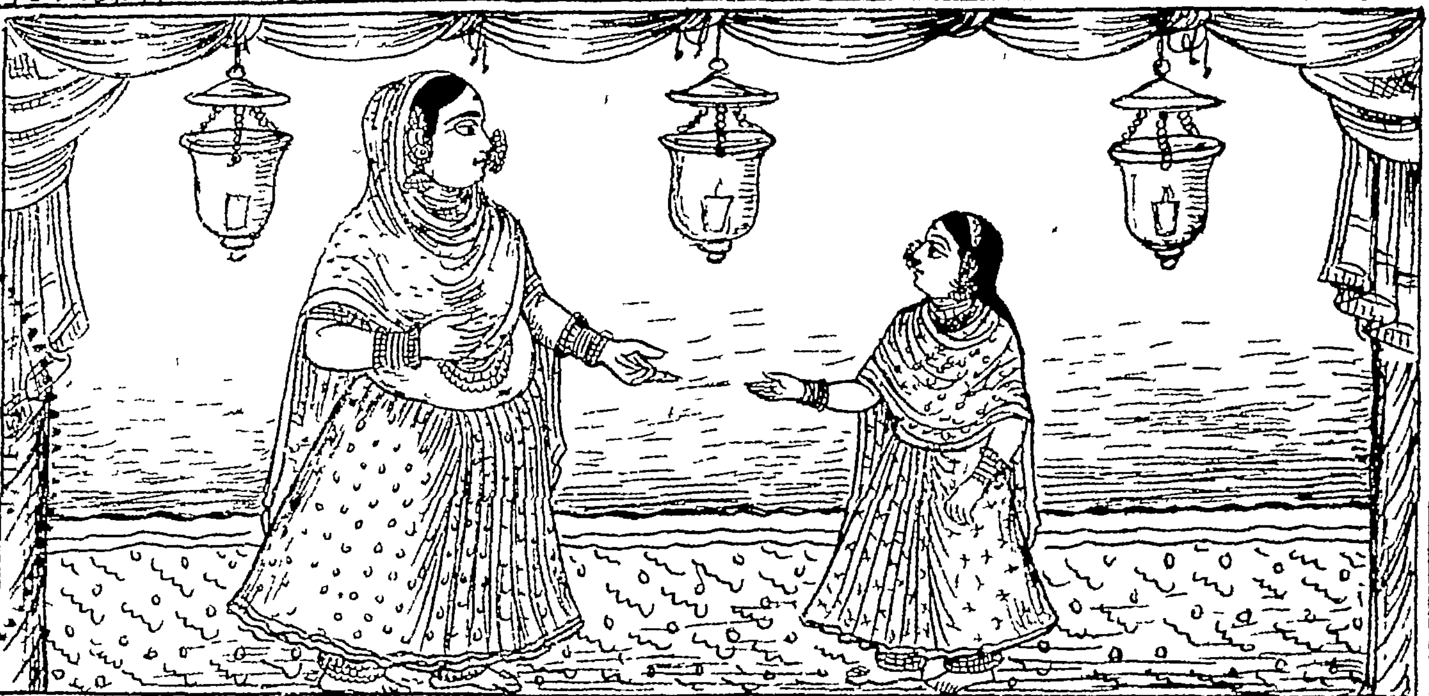
बन्नर कुंभमे मूठी वांधि सो छोडता नाहीं जाणता है के कोई मोकूं पकड लिया॰



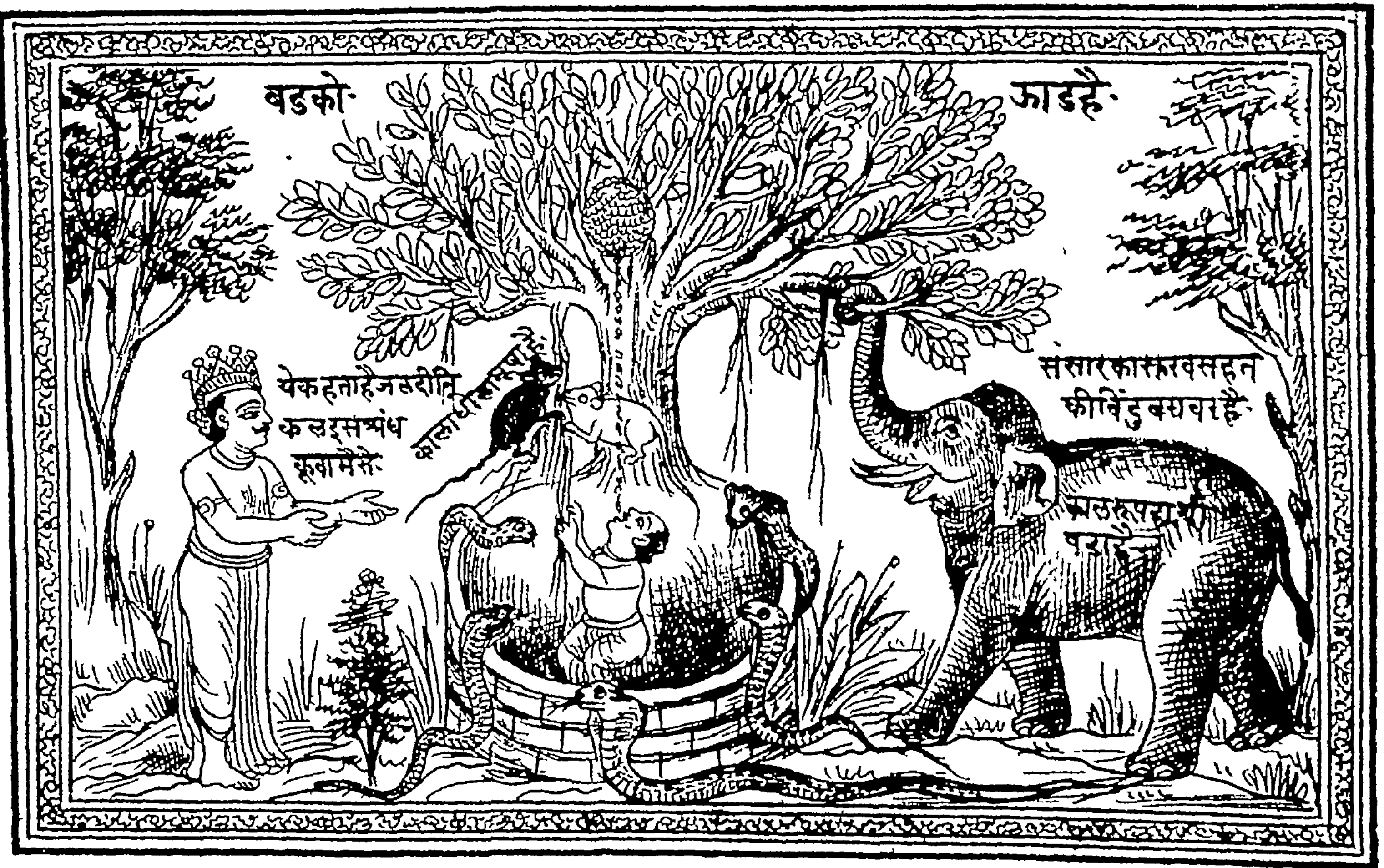
आमषाणेकापरिणामस्वछहीकाहै· परंतुयेकतो मूलसें झाडकूंकारता
है· येकमोटाडालाकारताहै· येकछोटाडाला कारता है· येक कचापका
सर्वआम्रतोडताहै· येकपकातोडतो है· येकजमीकेऊपर पडे हुयेही
उठाय षातोहै· उत्तरो त्तर है·



इसके कंठमें तो मोतीकी मालाहे बहुरि हेराकनाहि भंडारमें·



गर्भवतीस्त्रीकी पुत्री अपणी मातासे बूजतीहै हे मात तेरोपेट मोटोकैसे है॰ अब वास्त्री पुत्रीकूं जथा वत्कहदेवे तोबी निश्चय उस्कूं होवेनाही। समयपाय निश्चय होवेबी अथवा नाही वो होवे॰


बडको
झाडहै·
येकहृताहैजलदीनि
कलइसम्बंध
कूवामेसे·
संसारकासकरवसहृन
कीविंदुबधवराहै·

नग्नदिगंबरपरमहंस

कामीपुरुष·

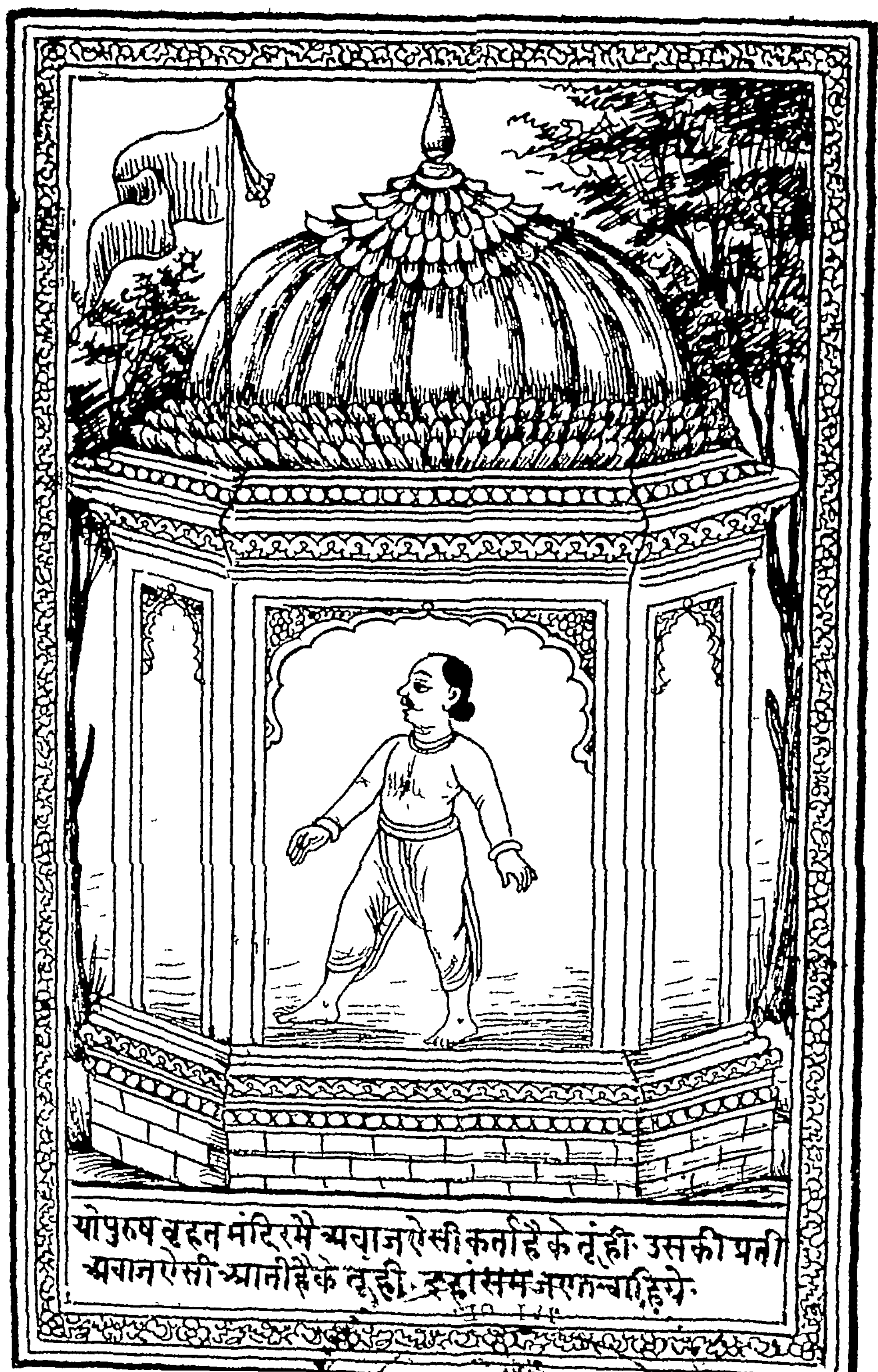
स्वान·

मृतक वेश्याहै

कामी विचार कर्ता है केयाजीवती होती तो मैं इसकूं भोगलेतो· परमहंस विचारतो है के जप तप शील बीना ए
थाही मरगई श्वान विचार करतो है के ये दुइ इहां से अलग होजावे तो मैं इसवेश्याका मृतक कलेवर कूं खाऊं·



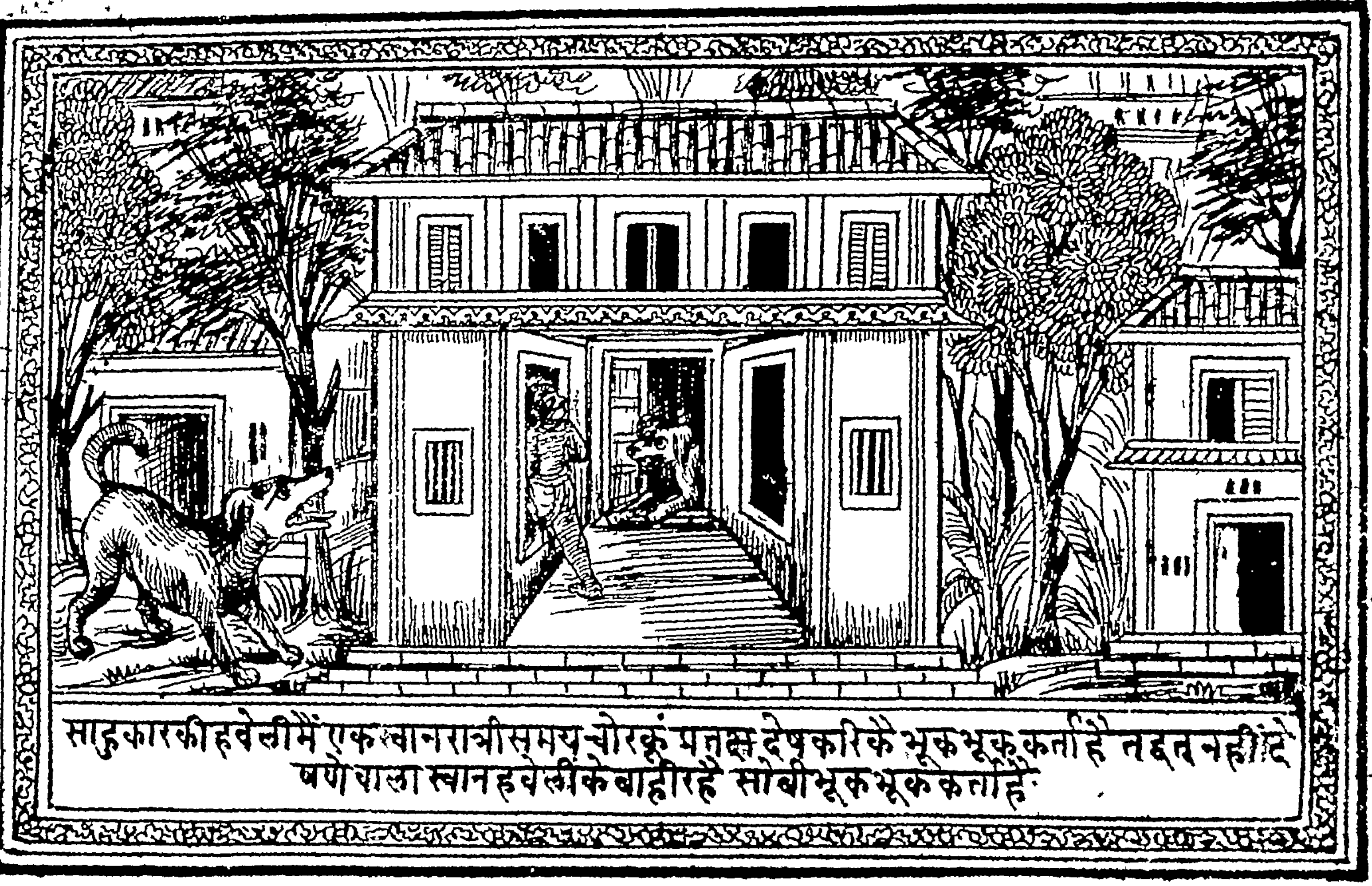
सिंघ आपकी छाया कूपमे देषकरिके आपही आपणा स्वरूप भूलिकरिके
आपही कूपमे पड के दुषअनुभव भोगमरताहै



योपुरुष वृहत मंदिरमे अवाज ऐसी कर्ताहै के तूंही· उसकी प्रती अवाज ऐसी आतीहै के तूंही· इस्कां समजणा चाहिये·



स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु को यथार्थ स्वरूपानुभव समज कारिके-
षट् जन्मांधवत पेहे जैन, शिव, विष्णु, बौद्धादिक षट् मतवाले परस्पर विवाद
विरोध करते है



साहुकारकीहवेलीमें एकस्वानरात्रीसमयचोरकूं प्रतक्ष देषकरिके भूकभूक कर्ताहै तद्वत नहींदे
षणेवाला स्वानहवेलीके बाहीरहै सोबीभूकभूक कर्ताहै·


अवलउस्तादहोगातोमैनमे समझलेगा
कबिरामोक्षकीसैनराषीजैनकबैमातिमामे·



येक पुरुष अमावास्याकी मध्यरात्री का अंधारामे चंद्रमाकूं
हेरताहै·ढूंढताहै स्यात् चंद्रमाकी चानणी मे ढूंढतो
चंद्रदरस होवीजावेगा·


इतिदृष्टांतचित्र समाप्त ॥